

यूनियन बैंक सृजन

अक्टूबर - दिसंबर, 2017

यूनियन बैंक
जोड़ो पूरेका



Union Bank
of India

संरक्षक

राजकिरण रे जी,

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

रवि कुमार गुप्ता

महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

राजेश कुमार

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

डॉ. सुलभा कोरे

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

डी. पी. उशारिया

महाप्रबंधक

आर. के. कश्यप

महाप्रबंधक

आशुतोष सिरोठिया

सुरक्षा प्रमुख, सेना मेडल

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल:

rajeshj@unionbankofindia.com

sulabhakore@unionbankofindia.com

9820468919, 022 - 22896595

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के लिए डॉ. सुलभा कोरे, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, केंद्रीय कार्यालय, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई - 400 021 द्वारा संपादित एवं प्रकाशित तथा जयंत प्रिन्टरी एलाएलपी, मुंबई-2 द्वारा मुद्रित. संपादक - डॉ. सुलभा कोरे

इस पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

अनुक्रमणिका

● परिदृश्य	3
● संपादकीय	4
● पुरस्कार	5
● साहित्य सृजन - मीराबाई	6-7
● अजब रोग की गजब दास्तां (व्यंग्य)	8-9
● कार्टून / ड्र	10
● बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	11
● बैंकिंग सृजन - निवेश मंत्र	12-14
● पैदल चलने के फायदे	15
● काव्य सृजन	16-18
● बदलता युग, बदलते प्रतिमान	19
● मलयालम भाषा	20-21
● बच्चों को सर्वश्रेष्ठ बनाना	22
● मंथन / प्रथम पुरस्कार	23
● क्षेत्र सृजन - रीवा	24-25
● सेंटर स्प्रेड - चीन	26-27
● हमारी परंपरा - नृत्यकला	28-29
● यात्रा संस्मरण - मुंस्थारी	30-31
● हम आभारी हैं - आरसेटी	32-33
● बैंकिंग में राजभाषा	34-35
● प्रेरणा - कर्म ही पूजा	36-37
● कहानी सृजन - 'पगला कहीं का'	38-39
● भारतीय लेखांकन मानक	40-42
● सकारात्मक सोच	43
● समाचार दर्शन	44-45
● समाज - सफेद छड़ी	46-47
● पुरस्कार / सम्मान	48-49
● आयुष्मान् भवः	50
● आपकी नजर में...	51

Designed & Printed at

Jayant Printery LLP, 352/54, Girgaum Road, Murlidhar Compound, Near Thiakurdwar Post Office, Mumbai-2, Tel.: 4366 71 71

परिदृश्य



प्रिय साथियो,

फिर एक बार 'यूनियन सृजन' के जरिए आपसे रूबरू होने जा रहा हूँ. बैंकिंग की नित नई चुनौतियों तथा व्यस्तताओं की आपा-धापी में आपसे यूँ इस तरह बात करना, बहुत अच्छा लगता है.

दिसंबर, 2017 को समाप्त तिमाही बैंक के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रही. यूनियन बैंक को अपने तुलनपत्र को हानि का मुंह दिखाना पड़ा. हालांकि यह हानि भी बड़ी मात्रा में किए गए प्रावधानों की वजह से हुई है, फिर भी एनपीए से छुटकारा पाकर उसे घटाना, आज के परिप्रेक्ष्य में हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती है. मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि मेरे सभी यूनियनाइट्स, इस दिशा में अपने कारगर प्रयासों से हमारी हानि को लाभ में परिवर्तित कर देंगे.

इस बार हमने एनपीए वसूली की दिशा में भी सघन प्रयास किए हैं और इन सघन प्रयासों का प्रतिफल ही है कि हमारे एनपीए का अनुपात कम हो गया है. यूँ ही हमारे प्रयास चलते रहेंगे तो हमें एनपीए विहीन बैंक होने में देर नहीं लगेगी. 'सतर्कता' तथा सावधानी से हम इस एनपीए पर नियंत्रण पा सकते हैं और इसी दिशा में हमने 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' मनाया. सामाजिक दायित्व को निभाते हुए सतर्कता और जागरूकता के बल पर हम क्या कर सकते हैं, इसका बेहतरीन उदाहरण हमारे सभी कार्यालयों, शाखाओं ने प्रस्तुत किया है.

साथियो, हर रात को सुबह का इंतजार रहता है और हर दिन को रात का इंतजार होता है. सुबह आपको नई ऊर्जा देकर दिन भर के कार्य करने हेतु तरोताजा रखती है और रात आपको दिनभर के कार्यों से निजात देकर आराम करने के लिए कहती है. ठीक उसी तरह बैंकिंग क्षेत्र, वर्तमान में एनपीए से जूझ रहा है, लेकिन यह स्थिति निश्चित रूप से बदल जाएगी, बदलनेवाली ही है. आप जैसे समर्पित स्टाफ सदस्य इस स्थिति को निश्चित रूप से बदल देंगे. फिर एक नई सुबह आएगी, जिसका हम सभी को इंतजार है.

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ !

आपका
राजकिरण र. जी
(राजकिरण र. जी.)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

साथियो,

माती कहे कुम्हार से, तू क्यों रँदि मोय।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोय ॥

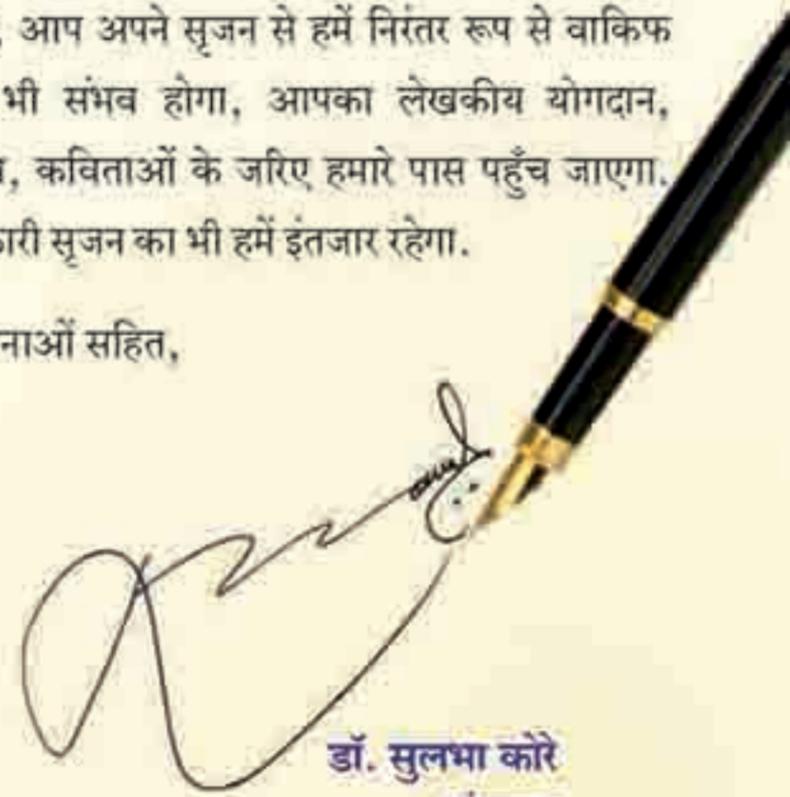
संत कवि कबीरदास जी ने कितना सटीक कहा है, इन पंक्तियों के जरिए जाना जा सकता है. यह माटी ही है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारा साथ निभाती है. हमारा शरीर, हमारा खान-पान, निवास सब इसी माटी की ओर से ही आता है और अंतिम पड़ाव पर जब सांसों साथ छोड़ देती हैं, तब यह मिट्टी या तो हमें अपने आगोश में ले लेती है या राख बनाकर अपने साथ जोड़ लेती है. यह आदि और अंत का ठहराव है, मिट्टी, हमारी आपकी पहचान है, यह मिट्टी नए सृजन का आगाज है.

हमारी हिन्दी गृह पत्रिका- 'यूनियन सृजन' भी इसी सृजन को साथ लेकर चलती है, आगे बढ़ती है. बच्चा जब छोटा होता है, उसे मिट्टी का लोंदा कहा जाता है. जिस तरह कुम्हार मिट्टी के लोंदे को अपने मन मुताबिक आकार देकर उसे मिट्टी के बर्तनों, घड़ों में तब्दील करता है, ठीक उसी तरह बच्चे की मानसिकता को आप अपने मन मुताबिक आकार दे सकते हैं. जो संस्कार आप बच्चे को देते हैं, उन्हीं संस्कारों के तहत वह ढल जाता है और उन्हीं संस्कारों को सहेजकर वह एक इंसान बन जाता है. यह इंसान फिर सृजन के नए-नए आयामों को परिष्कृत करता है

'सृजनशीलता' एक संवेदनशील इंसान की पहचान है, आप संवेदनशील हैं तो आप सृजनशील भी हो सकते हैं और सृजन किसी भी परिवेश को बेहतर बनाने के लिए उतना ही आवश्यक होता है, जितना कि जीने के लिए ऑक्सीजन. यूनियन बैंक में आपके 'सृजन' को मंच देने का बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य 'यूनियन सृजन' करती है. आप लिखिए, वह प्रकाशित करती है; आप चित्र बनाएँ, उपलब्धि गिनाएँ, वह अपने पृष्ठों पर उन्हें स्थान देती है; आप फोटो लीजिए, वह उन्हें भी प्रकाशित करती है. अर्थात् आपके सृजन को एक अधिकार भरा स्थान और गरिमा देने का काम आपकी अपनी पत्रिका 'यूनियन सृजन' करती है.

मुझे विश्वास है, आप अपने सृजन से हमें निरंतर रूप से वाकिफ कराते रहेंगे. जहां भी संभव होगा, आपका लेखकीय योगदान, कहानी, व्यंग्य, लेख, कविताओं के जरिए हमारे पास पहुँच जाएगा. आपके अन्य कलाकारी सृजन का भी हमें इंतजार रहेगा.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,



डॉ. सुलभा कोरे
संपादक



पुरस्कार

...हमारे प्रेरणा स्रोत

गृह मंत्रालय, भारत सरकार, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय
(दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम)

प्रथम
क्षेत्रीय कार्यालय,
एर्णाकुलम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों
से प्राप्त पुरस्कार

प्रथम
क्षेत्रीय कार्यालय,
एर्णाकुलम

प्रथम
क्षेत्रीय कार्यालय,
कोल्हापुर

प्रथम
क्षेत्रीय कार्यालय,
चेन्नई

प्रथम
क्षेत्रीय कार्यालय,
रीवा

द्वितीय
क्षेत्रीय कार्यालय,
वाराणसी

तृतीय
क्षेत्रीय कार्यालय,
तिरुवनन्तपुरम

चतुर्थ
क्षेत्रीय कार्यालय,
कोयंबटूर

चतुर्थ
क्षेत्रीय कार्यालय,
मदुरै

प्रोत्साहन
क्षेत्रीय कार्यालय,
जालंधर

प्रोत्साहन
क्षेत्रीय कार्यालय,
दिल्ली (द)

प्रोत्साहन
क्षेत्रीय कार्यालय,
सिलीगुड़ी

व्यक्ति के अन्तर्गत का संगीतात्मक रूप है काव्य।

मानव होता भाव्य है, कवि होता सौभाग्य।।

यह सत्य ही है कि साहित्य का सबसे उत्तम रूप कविता है. कविता की आत्मा जिसे रस कहा जाता है, उसमें सबसे व्यापक रस शृंगार रस है, जिसे रसों का सम्राट कहा गया है. उसका सबसे उत्कृष्ट रूप विरह रस है, कलाओं में सबसे रमणीक कला संगीत है. उपरोक्त समस्त तथ्यों से गुजरते हुये जब हम कविता, रस, प्रेम, संगीत, विरह, साहित्य आदि के मर्म रूपों से रू-ब-रू होते हैं तो अनायास ही जिसकी छवि हृदय में प्रस्तुत होती है, वह और कोई नहीं, निश्चित रूप से मीराबाई ही हैं.

प्रेम में अद्भुत शक्ति होती है, मन को उन्मुक्त एवं आज़ाद करने की, मीरा का जीवन इसका प्रमाण है. यदि हम बात करें 'स्त्री विमर्श' की तो साहित्य के इतिहासकारों ने इसे 19वीं शताब्दी की देन बताया है. सीमोन दी बुवा की रचना 'द सेकेंड सेक्स' (1949 ई) को इसकी प्रथम रचना बताया गया है. किन्तु 16वीं शताब्दी में जब मीरा के संगीत एवं कविताओं में प्रेम ने जीवन को उन्मुक्त करने का मार्ग बताया तो ये भी एक चेतना का स्वरूप बनकर उभर रही थी जिसे तत्कालीन समाज एवं सामंती सोच ने दबाने का भरपूर प्रयास किया. मीरा के प्रेम में यदि कोमलता है, तो दृढ़ता भी है. उनका जीवन एक क्रांति है, जिसके मूल में प्रेम है. रूढ़ियों एवं परम्पराओं में बस इतना फर्क होता है कि परम्पराएँ जहां व्यक्ति के जीवन शैली की कड़ियाँ हैं तो वहीं रूढ़ियों बेड़ियों भी हैं. विपरीत परिस्थितियों में मुट्ठी बांधकर, आज़ादी की उड़ान भरना सबके बस की बात नहीं होती. कड़े हौसले और अदम्य साहस की जरूरत होती है, उन बेड़ियों को काटने के लिए, जो

हमारे जड़ों में इस कदर उलड़ी रहती हैं कि हम उन्हें अपना संस्कार मान बैठते हैं.

यद्यपि साहित्य के इतिहासकारों ने मीराबाई को भक्ति काव्यधारा के अंतर्गत कृष्ण काव्य परंपरा की कवियित्री के रूप में दर्शाया है, लेकिन मीरा के काव्य में भक्ति प्रेम एवं स्वच्छंदता मिश्रित है. स्वच्छंदतावाद या रोमांटिसिज़्म की यदि बात हम करें तो मीरा का प्रेम स्थूल के प्रति सूक्ष्म का स्पष्ट विरोध ही है. मीरा ने ईश्वरीय आलंबन को मानवीय सम्बन्धों से जोड़ा, मीरा ने पति की परंपरागत सत्ता एवं अधिकार को स्वीकार नहीं किया और न ही पति के देहांत के बाद, सती होकर परम्पराओं को आगे बढ़ाया. उस युग के सामंती परिवेश तथा पुरुष प्रधान समाज में पति को परमेश्वर मानने वाली हिन्दू स्त्री का 'परमेश्वर को पति' मानने का अधिकार प्राप्त करना आसान नहीं था. सामंती व्यवस्था का विरोध ही भक्ति आंदोलन का मूल था. मीरा ने स्त्रियों के प्रति सामंती दृष्टिकोण और धार्मिक दासता को स्वीकार नहीं किया और समाज, धर्म, वर्ण, परिवार के विरुद्ध जाकर अपने प्रेम और स्वच्छंदता से जीने की हिम्मत दिखाई. इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण बात है, इस संघर्ष में उनका अकेला होना. एक अकेली स्त्री का पूरे समाज और परम्पराओं के खिलाफ जाकर अपनी स्वतंत्रता, प्रेम की स्वच्छंदता और भक्ति के लिए लड़ना तत्कालीन युग में कोई आम बात नहीं थी. उन्होंने उन सभी प्रचलित एवं मान्य परम्पराओं को रूढ़ि करार देने की हिम्मत दिखाई, जिसे भारतीय नारी में संस्कार के नाम पर घोला जाता रहा है. नारी विमर्श और स्त्री चेतना का इससे मुखर स्वरूप और



क्या हो सकता है? स्त्री विमर्श की दृष्टि से मीरा अपने युग और वर्तमान संदर्भ में भी स्त्री मुक्ति आंदोलन की प्रासंगिक प्रतिनिधि बनकर सामने खड़ी दिखाई देती हैं।

भारतीय स्त्री चेतना की अग्रदूत मीराबाई का जन्म, राजस्थान के मेड़ता के समीपवर्ती गाँव- कुड़की में राठौड़ वंश के जागीरदार रियासत में सन 1504 ई में हुआ। इनके पिता रत्नसिंह थे, मीरा के बचपन के दौरान ही मात्र दो वर्ष की उम्र में उनकी माता का देहांत हो गया। ऐसे में इनका लालन-पालन उनके दादा राव दूदा की छत्रछाया में हुआ जो कि परम वैष्णव भक्त थे। उन्हीं की छत्रछाया में रहकर मीरा के हृदय में गिरधर गोपाल के प्रति अनन्य आस्था उत्पन्न हुई, वर्ष 1516 ई में इनका विवाह चित्तौड़ के महाराज राणा सांगा के बड़े पुत्र भोजराज के साथ हुआ। दुःसंयोगवश विवाह के सात वर्षों के पश्चात भोजराज की मृत्यु हो गयी। जिससे मीरा के अन्तर्मन में विद्यमान अब तक अप्रकट अंतःसंघर्ष प्रकट रूप से उनके जीवन का अंग बन गया। मीरा तत्कालीन प्रथा के अनुसार सती नहीं हुईं, क्योंकि वे स्वयं को अजर अमर स्वामी की चिरसुहागिनी मानती थीं :

जग सुहाग मिथ्या री सजनी, हांवा हो मिट जासी ।

वरन करया हरी अविनाशी म्हारों काल व्याल न खासी ॥

मीरा का यह निश्चय मेवाड़ के राजघराने के लिए सर्वथा अप्रत्याशित था। मीरा तथाकथित सामाजिक मर्यादा एवं राजकीय परम्पराओं को छोड़कर, अपने ईश्वर-प्रेम एवं भक्ति-भजन में अपना जीवन व्यतीत करने लगी थीं। फलस्वरूप मीराबाई की सास एवं देवर विक्रम सिंह को यह आचरण असह्य लगा, उन्होंने मीरा को तरह-तरह से यातनाएँ दीं किन्तु मीरा की आस्था बनी रही-

पग बांध घुंघरयाँ मीरा प्याचीरी।

लोग कह्याँ मीरा भई बावरी, सास कह्याँ कुलनासी री॥

विष रो प्याला राणा भेज्यां, पीवत मीरा हांसी री॥

अल्पायु में ही विधवा बनी मीरा के सामने पूरा परिवार और सामंतवादी समाज विरोधी बनकर सामने खड़ा हो चुका था। कृष्ण के प्रेम के आगे उन्हें संयुक्त परिवार और राजघराने की कुल मर्यादा, सामाजिक रीति-रिवाज का सामना करना पड़ा। सास के लिए वह कुल-नाशिनी बनी, देवर का भेजा हुआ विष भी पीना पड़ा, फिर भी अकेली मीरा समाज से डरती-सहमति नहीं हैं। वह स्त्रियों के मृत्यु थोपी गयी झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा और सीमित दायरों को तोड़ती हैं, निडर होकर आत्मविश्वास के साथ विष का प्याला तक पी जाती हैं। इस संदर्भ में आचार्य विश्वनाथ त्रिपाठी कहते हैं कि 'विषपान मीरा का मध्यकालीन नारी का स्वाधीनता के लिए संघर्ष है और अमृत उस संघर्ष से प्राप्त तोष

है। प्रेम दीवानी मीरा राजघराने की बेड़ियों को तोड़कर अपने गिरधारी के प्रेम में साधू-संगति में नाचने-गाने की हिम्मत रखती हैं'-

“मैं तो सावरे के रंग राची।

साजि सिंगार बांधि पग घुंघरू, लोक-लाज तजी नाची॥”

सामंतवादी सोच ने शुरू से ही स्त्री एवं दलितों को हाशिये पर रखा। इसके बावजूद मीरा का कालोपरि अस्तित्व भाव-असीमता और स्वच्छंदवादी दृष्टिकोण समाज को क्रांति और आधुनिक चेतना की परिभाषा देता है। चूंकि भक्ति आंदोलन साहित्य एवं समाज में क्रांति का एक दौर था, फिर भी इस आंदोलन के पुरोधा कवियों के स्थान पर मीराबाई को महज एक कृष्ण भक्त कवयित्री कहना समीचीन नहीं लगता। मीरा का जीवन चरित्र जितना संघर्ष एवं कठोरता से पूर्ण है उनकी कविताएं और गीत उतने ही कोमल और मार्मिक हैं। मीराबाई के गीतों का संकलन 'मीराबाई की पदावली' नामक ग्रंथ में किया गया है। उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की है परंतु उनकी प्रामाणिक रचनाओं में - 'नरसी जी का माथरा' 'गीत गोविंद टीका', 'राग गोविंद' एवं 'राग सोरठ के पद' प्रमुख हैं। मीरा के पदों में प्रेम, मार्मिकता और विरह की भावना स्पष्ट और मुखर तो है ही साथ ही उनके जीवन संघर्ष की अनुगूँज भी उनके पदों में बराबर दिखाई देती है। प्रेम, भक्ति एवं संघर्ष की दृष्टि से उनके पद बेमिसाल हैं। मीरा का पूरा जीवन ही नारी अस्तित्व और मूल्यों का संघर्ष है।

मीरा का जीवन जिस प्रकार से सीमाहीन है, उसी प्रकार उनकी भाषा की भी कोई सीमा नहीं है; दूसरे शब्दों में यदि कहें तो जिस प्रकार उच्चकोटि का विशुद्ध संगीत चाहे किसी भी भाषा में हो, हम उसे कानों की अपेक्षा हृदय से सुनते हैं, उसी प्रकार से मीरा के पद भावों से लिखे गए हैं, उन्हें शब्द, भाषा या छंदों की सीमा में बांधना संभव नहीं है। उनके पदों में प्रेम, भक्ति और स्वच्छंदता भरी हुई है। मीरा की सार्वभौमिकता और स्वच्छंदता के बारे में 'आधुनिक युग की मीरा' महादेवी वर्मा जी कहती हैं, मीरा के पदों की उड़ान समूचे भारतीय आकाश में व्याप्त है, मानो कोई मुक्त पंखी असीम आसमान में उड़ रहा हो.... वे राजस्थान की हैं, गुजरात की हैं, बंगाल की हैं, समूचे भारत की हैं। वे भक्ति आंदोलन की प्रेरक शक्ति हैं, जिसने ब्राह्मण और शूद्र का भेदभाव ही मिटा डाला है। अतः वे सभी जातियों की हैं, सभी धर्मों की हैं, सर्वकालीन, सर्वदेशीय हैं। -

“हे री मैं तो प्रेम दीवाणी, मेरो प्रेम न जाणे कोय।

घायल की गति घायल जाणे, जो कोई घायल होय॥”

राधा मिश्र
शे.का., बड़ौदा





यह दिल की बीमारी है, सदा जोड़ों में ही पायी जाती है, बहुत पहले यह केवल जवानी की दहलीज़ पे किसी - किसी को ही होता था और वह भी छुपे तौर पर, परंतु आज यह खुलेआम हो गया है, इसका रूप विकराल हो गया है, यह संक्रामक हो गया है तथा कम उम्र में भी अर्थात् किशोरावस्था में भी लोग इसकी चपेट में आने लगे हैं और तो और यह रोग बुढ़ापे को भी अपने चपेट में लेने लगा है, वैसे तो पुराने समय में बुढ़ापे में यह रोग होने पर समाज के लोग इन लोगों को बड़े ही हीन दृष्टि से देखते थे लेकिन आजकल इन्हें ऊंचा मंच उपलब्ध है, वे सेलीब्रीटी बन जाते हैं और हम जैसे लोग उन्हें लव गुरु की उपाधि देते हैं।

भले ही यह बीमारी आज संक्रामक रूप ले चुकी है परंतु इसकी परिकल्पना बहुत पहले बॉलीवुड के किसी हस्ती ने यह कहते हुए कर लिया था कि -

प्यार किया नहीं जाता, हो जाता है

जो इस बात की पुष्टि करता है कि यह संक्रमण से होता है अतः रोगी के संपर्क में आने वालों को भी यह रोग हो सकता है, यही कारण है कि रोग ग्रसित व्यक्ति अपनों को एहतियातन यह कहता है कि -

आप यूँ ही अगर हमसे मिलते रहे,

देखिये एक दिन प्यार हो जायगा

यह रोग किसी कायर को नहीं होता है, जिसकी पुष्टि किसी अनुसंधानकर्ता ने इस प्रकार की है -

प्यार करने वाले कभी डरते नहीं,

जो डरते हैं वो प्यार करते नहीं

यह रोग जिनको नहीं होता, उन लोगों के द्वारा ईर्ष्या तक करने की बातें सामने आयी हैं, तभी तो किसी रोगग्रस्त ने खुलेआम कहा था -

प्यार करने वाले प्यार ही करेंगे,

जलने वाले चाहे जल-जल मरेंगे

जब कभी भी इस रोग से ग्रस्त लोगों को समाज ने तिरस्कृत किया है, तो उसने समाज को करारा जबाब इस प्रकार दिया है -

जब प्यार किया तो डरना क्या,

प्यार किया कोई चोरी नहीं की, छुप-छुप आहे भरना क्या

यह बीमारी कभी-कभी जानलेवा भी साबित होती है, तब रोगी यह कह उठता है कि -

मैनु इश्क दा लग गया रोग,

मैनु बचने दी नईयाँ उम्मीद

इतिहास भी गवाह है कि यह बीमारी जानलेवा साबित हुई है. इस रोग से कुछ शहीदों के नाम आज भी बड़े प्यार व इज्जत से लिया जाता है जैसे लैला-मजनू, शीरी-फरहाद, हीर-रांझा, सोहणी-महिवाल, रोमियो-जूलिएट, उपरोक्त नामों से यह ज्ञात होता है कि इस बीमारी का स्वरूप वैश्विक है, न ही किसी देश की सरहदें इसे रोक पाई और न ही किसी धर्म की दीवार.

बहुत पहले जब इस बीमारी का पता नहीं चला था तो समाज ऐसे व्यक्तियों को अलग-अलग उपनामों से बुलाते थे. जैसे आशिक, आवारा, पागल, दीवाना, मतवाला, दिलफेक, बेशर्म इत्यादि तथा यह निष्ठुर समाज उसके साथ बुरा बर्ताव तक करता था उसे गलत नजर

से देखा जाता था. उसका सामाजिक बहिष्कार होता था. समाज व्यंग कसता था, यहाँ तक कि उसका हुक्का पानी बंद हो जाता था. उसे तडीपार कर दिया जाता था. वो तो भला ही उस व्यक्ति का जिसने समय रहते इस मर्ज को पहचान लिया और इस समाज को बताया कि -

मैं हूँ प्रेमरोगी, मेरी दवा तो कराओ

इस बीमारी के कुछ लक्षण भी हैं जैसे भूख-प्यास कम लगना, रातों को नींद नहीं आना, कभी-कभी नींद में बड़बड़ाना, दिल की धड़कने बढ़ना, कलम की जगह हाथों की उंगली तथा स्याही की जगह खून से चिट्ठी लिखना, शृंगारिक व अलंकारिक भाषा का प्रयोग करना, मरने-मरने पे उतारू होना, लोक-लाज को ताक पे रखना, बॉलीवुड के देवियों व देवताओं को अपना आदर्श मानना, काम में मन नहीं लगना, प्राकृतिक वातावरण में समय व्यतीत करना, एकांत में रहना, बागों में पाया जाना, नौका विहार करना, घर में मन नहीं लगना इत्यादि.

विज्ञान में आर्कमिडीज़ का सिद्धांत कहता है कि जब किसी वस्तु को हवा या द्रव्य में पूर्णतः या अंशतः डूबाया जाता है तो उसके भार में एक आभासी कमी होती है, वह आभासी कमी उस वस्तु द्वारा हटाए गए हवा तथा द्रव्य के भार के बराबर होती है.

उपरोक्त सिद्धांत इस बीमारी में भी लागू होती है. जब कोई लड़का किसी लड़की से प्यार करता है तो उसके पढ़ने के समय में एक आभासी कमी होती है. यह आभासी कमी उस लड़के द्वारा लड़की को तथा लड़की द्वारा लड़के को, दिये गए समय के बराबर होता है.

अतः यहाँ कहने का आशय यह है कि यह बीमारी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सिद्ध है.

कभी-कभी लोग इसमें धार्मिक भी हो जाते हैं. मसलन रामायण की पुष्पवाटिका, कृष्णलीला की रास, रुक्मणी हरण ज्यादा भाता है. हर जगह वृन्दावन सा महसूस होता है. इस रोग से ग्रसित मनुष्यों के इष्टदेव कामदेव माने जाते थे परंतु कुछ धार्मिक शास्त्रों से यह प्रमाणित होता है कि कामदेव को कैलाशपति ने अपने तीसरे नेत्र से भ्रम कर उनका नामों निशान मिटा दिया था. शायद यही कारण है कि आधुनिक युग में उनके स्थान को सर्वसम्मति से 'वैलेनटाइन बाबा' को दे दिया गया है. ऐसी मान्यता है कि फरवरी की चौदह तारीख को वैलेनटाइन बाबा को शुद्ध मन व सच्चे हृदय से याद करने पर इस रोग से ग्रसित रोगी के दर्द को कुछ हद तक कम किया जा सकता है. इसके प्रमाण आज व्याप्त हैं. आज इसे पूरे विधि-विधान से मनाने का चलन है. जैसा कि हम जानते हैं कि चौदह फरवरी को वैश्विक स्तर पर वैलेनटाइन डे एक पर्व के रूप में मनाने का विधान है लेकिन उसके पहले कुछ विधि भी हैं.

वस्तुतः इस पर्व के अनुष्ठान की शुरुआत सात फरवरी से ही आरंभ हो जाती है, जिसे हम सब रोज डे के रूप में मनाते हैं. इसे आप प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं से पर्व का प्रारम्भ मान सकते हैं, इस दिन गुलाब के फूलों का लेन-देन होता है, दूसरे दिन अर्थात् आठ फरवरी को प्रपोज़ डे के रूप में मनाने का रिवाज है. इस दिन अपने दिल की बातों को जुबान पर लाकर हमारे देशी जोड़े एक दूसरे से निम्न प्रकार अपनी-अपनी भाषाओं में इजहार करते हैं:-

हिन्दी :- मैं तुमसे प्यार करता हूँ

उर्दू :- मैं आपसे मुहब्बत करता हूँ

पंजाबी :- मैं तैनु प्यार करदा

गुजराती :- हूँ ताने प्रेम करूँ छू



बांग्ला:- आमी तोमा के भालो बाशी
 मराठी:- माझं तुझ्यावर प्रेम आहे.
 सिंधी:- माँ तोखे प्यार केन्दो अहमन
 तमिल:- नान उन्नई कथाली करेन
 तेलगु:- नेनू निन्नू प्रेमी सतून्माणु
 मलयाली:- नजन निन्ने प्रेमी कुन्नु
 कोंकणी:- तू मागेल मोगा छो
 कन्नड:- नानु निन्न प्रीति सुनेन
 अंग्रेजी:- आई लव यू

जब यह इजहार सामने वाले द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है तो नौ फरवरी को इस खुशी में एक दूसरे का मुंह मीठा कराने की परंपरा है। इसी कारण इस दिन को चॉकलेट डे के रूप में मनाया जाता है, बात आगे बढ़ती है तथा उपहार का आदान-प्रदान भी होता है। इसलिए दस फरवरी को 'टेडी बीयर डे' कहा गया है।

चूंकि हमारी भारतीय सविदा अधिनियम 1872 (इंडियन कांट्रैक्ट एक्ट 1872) भी यह कहता है कि किसी व्यक्ति द्वारा किसी को दिया गया प्रस्ताव (प्रपोजल/ऑफर) जब सामने वाले द्वारा स्वीकार (एक्सेप्ट) कर लिया जाता है तो इसे वादा (प्रॉमिस) कहते हैं। साथ ही साथ सविदा अधिनियम में यह भी कहा गया है कि स्वीकार का आश्वासन मौखिक, लिखित या किसी कृत तथा क्रियाकलापों द्वारा भी हो सकता है एवं वादे में एक दूसरे के लिए प्रतिफल (कन्सिडरेशन) यदि निहितार्थ है तभी वो करार (एग्रीमेंट) माना जाएगा।

यहाँ कहने का मतलब यह है कि आठ फरवरी को प्रपोज डे के बाद, दो दिनों के क्रियाकलाप अर्थात् चॉकलेट डे तथा टेडी बीयर डे यह इंगित करते हैं कि प्रपोजल स्वीकार कर लिया गया है। यही कारण है कि ग्यारह फरवरी को प्रॉमिस डे के रूप में मनाने का विधान है। चूंकि चॉकलेट तथा टेडी बीयर प्रतिफल की श्रेणी में आते हैं। अतः यह करार पक्का मानते हुए बारह फरवरी को हग डे एवं तेरह फरवरी को किस डे मनाते हुए इस अनुष्ठान की पूर्णाहूति चौदह फरवरी को पूरे उल्लास से वैलेन्टाइन डे, चहूँ ओर मनाकर की जाती है।

अतः हम देखते हैं की यह पर्व पूर्णतः वैधानिक भी है।

परंतु भईया, अगर इस सविदा में करार के जगह दरार हो जाय तो इस दिल की बीमारी में दिल के ही टूटने का खतरा हो जाता है। उस दर्द की पीड़ा असहनीय होती है और रोगी के लिए यह जीवन, मृत्यु के समान प्रतीत होती है। वो मृत्यु को गले लगाना चाहता है तथा अपनी मंशा को इस तरह जाहीर करता है -

जब दिल ही टूट गया, हम जी के क्या करें

उपरोक्त बातें जो मैंने ब्रताई, वो बीमार व्यक्तियों के दर्द में राहत के उपाय हैं, परंतु इस बीमारी का जड़ से भी इलाज संभव है। इसके लिए बहुत ही पुरानी दवा आज भी कारगर एवं प्रमाणित है और वह है शादी। बस फर्क केवल इतना है कि पुराने समय में बड़े-बुजुर्गों द्वारा यह निर्णय लिया जाता था कि यह दवा कब चलाना है और इसे अर्रंज करके चलाते थे, पर आजकल तकनीक की इस आधुनिक युग में लोग स्वयं नेट, चैटिंग, डेटिंग इत्यादि के माध्यम से यह निर्णय ले लेते हैं कि यह दवा कब चलनी चाहिए और इसे लव के साथ चलाया जाता है। आधुनिक युग में यह दवा पाँच प्रकार से इस तरह चल रही है:-

1:- आज जब नौजवानों द्वारा इस दवा को लेने का मन बना लिया जाता है तो वो बड़े-बुजुर्गों को अपना यह निर्णय बताते हैं ताकि पुरानी संस्कृति के तहत वे इसे अर्रंज कर दे, जिससे विधिपूर्वक उनका आशीर्वाद मिल जाय तथा सामाजिक मुहर लग जाय।

2:- जब ऐसा अदेशा होता है कि शायद बड़े-बुजुर्गों का आशीर्वाद उन्हें नहीं मिल पाएगा या वे इसे अर्रंज करने के इच्छुक नहीं हैं तो यह जोड़ा भगवान के शरण में चला जाता है। अर्थात् वे मंदिरों में जाकर भगवान व पुजारी के सामने दवा लेकर धार्मिक मुहर लगवाते हैं।

3:- कभी-कभी ऐसे जोड़े जीवन के इस निर्णायक मोड़ पर न्यायालय का दरवाजा तक खटखटाते हैं और वहीं न्याय के मंदिर में दवा लेने का निर्णय करते हैं ताकि इस पर वैधानिक मुहर लग जाय।

4:- उपरोक्त तीनों स्थिति की पूर्णता सदेह होने की आशंका पे ये जोड़े भाग कर कुछ इष्ट मित्रों संग यह दवा ले लेते हैं।

5:- परंतु वर्तमान समय में कुछ ऐसी बातें सामने आई हैं कि इस दवा के फायदे लीव इन रिलेशन में भी पाये गये हैं। अभी यह प्रयोग शैशवावस्था में है। अतः इस पर ज्यादा लिखना उचित न होगा।

इस रोग में कुछ दिव्य दृष्टि प्राप्त होने की बातें भी सामने आयी हैं। जैसे आंखों ही आंखों में बातें होने लगती हैं, एक दूसरे के आंखों को लोग पढ़ने लगते हैं, सामने वाले की मन की बातों को जान लेते हैं, वगैरह-वगैरह।

इस रोग के वायरस से सामाजिक चेतना जागृत हो जाती है, रोगी में ऊंच-नीच का भेद नहीं रहता है, धार्मिक भेदभाव से रहित रहता है, जातिबंधन उस पर हावी नहीं हो पाता, छुआ-छूत को वो नहीं मानता है, दहेज रूपी अभिशाप खत्म होने में सहायक होता है, नफरत की दीवारों को गिराकर प्यार की नींव पर संसार को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं, इसमें कुछ पाने से ज्यादा, देने का भाव रहता है, रुढ़िवादी विचारधारा को दरकिनार कर केवल हृदय की बात सुनता है और सुने भी क्यों नहीं, हृदय में ही तो भगवान का वास होता है। कबीर का यह दोहा भी इस रोग की गाथा को परिभाषित करता है-

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय.

ढाई आखर प्रेम का, जो पढ़े सो पंडित होय.

यह हृदय में छिपी संवेदना के तारों का रहस्य खोलता है और सदेश देता है कि तलवारों से विश्व पर राज तो किया जा सकता है परंतु दिल पर राज करने को इसे प्रेम के स्वरूप की ही जरूरत पड़ती है और हमारे भू-भाग की मिट्टी की सुगंध तो यही कहती है कि -

जीते हैं किसी ने देश तो क्या, हमने तो दिलों को जीता है

यहाँ काले गोरे का भेद नहीं, हर दिल से हमारा नाता है

कुछ और न आता हो हमको, हमें प्यार निभाना आता है.

प्रेम हमारे देश की संस्कृति है, जहाँ राधा-कृष्ण का प्रेम अमर है, शकुंतला-दुष्यंत की कहानी अनूठी है, सावित्री-सत्यवान के रिश्ते ने यमराज को झुका दिया, सलीम-अनारकली ने सम्राट को भी हिला दिया, रानी रूपमती और बाज बहादुर की बातें आज भी जीवंत हैं, तभी तो भारत का बच्चा-बच्चा यह कहता है कि -

इस धरती पे मैंने जनम लिया, यह सोच के मैं इतराता हूँ

कितने भी तूफान आएँ, झंझावत आएँ यह रोग कभी मरा नहीं, न ही यह विलुप्त हुआ। राधा का प्रेम आज भी जिंदा है और न ही प्रेम दीवानी मीरा को हम भुला पाये हैं, बल्कि एक जमाने से यह धड़कता रहा है दिलों पे, और गाता रहा है यह राग कि -

प्यार बांटते चलो...

प्रस्तुत रचना में बस यह प्रयास है कि आज की इस भागम-भाग व थकान भरी जीवनशैली में आपको थोड़ा गुदगुदा दूँ, थोड़ी मुस्कान ला दूँ और यदि मैं सफल हो पाया तो मैं अपनी कलम को विराम देता हूँ, यह गुनगुनाते हुए -

आ चल के तुझे, मैं लेके चलूँ, एक ऐसे गगन के तले

जहाँ गम भी न हो, आँसू भी न हो

बस प्यार ही प्यार पले...



विवेक कुमार

मछुआटोली शाखा, पटना

अक्ल का अंधा गांठका पुरुष



आश्वों में बसना



डर

जिंदगी में यदि हम किसी चीज या काम को करने में असफल होते हैं तो उसकी वजह केवल एक छोटा सा शब्द डर है. यह शब्द दिखने में तो बहुत छोटा होता है, लेकिन जिसके मन में यह डर बैठ गया, समझो वह इंसान मर गया. डर एक ऐसी चीज है जो लगभग सभी के मन में होती है. हर किसी में अलग-अलग प्रकार का डर होता है, जैसे किसी को परीक्षा में फेल होने का डर तो किसी को नौकरी जाने का डर होता है. यह डर आम आदमी को अंदर से हिला कर रख देता है. असफलता के डर से हमेशा एक साधारण आदमी साधारण ही बना रहता है, क्योंकि वह डरता है कि कहीं वह असफल न हो जाए. केवल डर की वजह से आदमी कुछ नया नहीं कर पाता, और ना ही अपनी क्षमताओं को पहचान पाता है. लेकिन जो इंसान एक बार इस डर के जंजाल से निकल जाता है, दुनिया उसके कदमों तले होती है. क्या आपने कभी सोचा है कि इंसान के मन में डर क्यों आता है? डर का एक मात्र कारण केवल इंसान के भीतर छुपी हुई अज्ञानता है. जब हम कुछ नया करना चाहते हैं और अगर हमें उस काम या चीज से संबंधित जानकारी नहीं है तो हम डरने लग जाते हैं कि कहीं कुछ गलत न हो जाए. इस स्थिति में हम उस काम को करने की बजाय उससे दूर भागने लग जाते हैं, जिससे उस काम के प्रति हमारा डर और भी भयानक हो जाता है. उस डर पर काबू पाने का सबसे आसान तरीका है कि जिस चीज या परिस्थिति से आप डर रहे हैं, उसके बारे में सही एवं अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करें. जिस काम से आपको डर लगता हो उस काम को आप ज्यादा से ज्यादा करें तथा उस काम से आप दोस्ती कर लें. फिर आपको लगेगा कि जिस काम या चीज से आप डर रहे थे वह तो एकदम साधारण है. जब भी किसी चीज या स्थिति से डर लगे, तो कम से कम एक बार खुद को आजमाकर देखें कि क्या मैं इस डर पर जीत हासिल करके इस चीज को प्राप्त कर सकता हूँ. इससे आपका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा बस आत्मविश्वास ही बढ़ेगा. अगर आपने इस डर के आगे घुटने टेक दिए तब यह डर असलियत बन जाएगा और आप उस काम या चीज को कभी प्राप्त नहीं कर सकेंगे, जीवन में कभी भी सफल नहीं हो सकेंगे. अगर जीवन में हर कदम पर सफल होना है तो डर नाम की चीज को अपने अंदर से बाहर निकाल दें. केवल सकारात्मक सोच रखें, नकारात्मक कभी न सोचें.



सुरेश चौहान
कुड़ी भगतासनी शाखा, जोधपुर



बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

हमें हमारे देश और हमारी संस्कृति पर हमेशा गर्व रहा है. हमारे देश ने कभी किसी दूसरे पर आक्रमण नहीं किया है और न ही वैसा कभी प्रयास किया है. हम शांति प्रिय रहे हैं. जिन लोगों को दुनिया में कहीं स्थान नहीं मिला, उन्हें भारत ने गले लगाया. ऐसी महान संस्कृति, विरासत होने के बावजूद हमारे समाज में एक ऐसी बुराई है, जो आज पूरी दुनिया के सामने हमें हमारी नज़रें नीची करने के लिए मजबूर कर देती है. वह बुराई है भ्रूण हत्या अर्थात् पुरुषों की तुलना में स्त्री को दोयम दर्जे का स्थान देना.

हमारा समाज इतना पुरुष प्रधान है कि आज देश की जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा बेटी पैदा ही नहीं करना चाहता. इसका नतीजा यह है कि हमारे देश में पुरुषों के मुकाबले स्त्रियों की संख्या दिनोंदिन घटती जा रही है. यह हम सब के लिए तथा समाज के लिए भी भयंकर चिंता का विषय है. इसी वजह से हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना' की शुरुआत 22 जनवरी 2015 को हरियाणा के पानीपत से की.

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना को एक राष्ट्रीय अभियान के माध्यम से संचालित किया जा रहा है. सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में से उन 100 जिलों का चयन किया गया है, जहां बाल लिंग अनुपात सबसे कम है. यह योजना महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की संयुक्त पहल है. इसका मुख्य उद्देश्य है- स्त्री भ्रूण हत्या की रोकथाम, बालिकाओं के अस्तित्व का बचाना, उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा बालिकाओं की शिक्षा एवं भागीदारी सुनिश्चित करना है.

बेटी भार नहीं, है आधार
जीवन है उसका अधिकार
शिक्षा है उसका हथियार
बढ़ाओ कदम, करो स्वीकार

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना' ऐसे वक्त आई है जब देश महिलाओं की सुरक्षा से जुड़ी समस्याओं जैसे- दुष्कर्म, बलात्कार और अन्य इसी तरह की घटनाओं का सामना कर रहा है.

बेटी बिना नहीं संजता घरोंदा
बेटी ही है संस्कारों का परिंदा

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' सिर्फ एक योजना नहीं है बल्कि देश के हर नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी भी है. यदि एक समाज के रूप में हम इस समस्या के प्रति संवेदनशील नहीं होंगे तो हम अपनी ही नहीं, आने वाली पीढ़ी के लिए भी एक भयंकर संकट को निमंत्रण देंगे.

समाज को सुचारु रूप से चलाना है तो उस समाज में स्त्री-पुरुष का सामान अनुपात होना आवश्यक है. जहां यह अनुपात बिगड़ा या असंतुलित हुआ, वहाँ समाज का लड़खड़ाना और बिगड़ना भी स्वाभाविक हो जाता है. इसलिए स्त्री भ्रूण हत्या को रोकना और समाज में स्त्री-पुरुष के अनुपात को बरकरार रखना जरूरी है.

ओपेन्द्र कुमार
हमीरपुर शाखा
क्षे.का., कानपुर



'यूनियन सृजन' के लिए....

साहित्यिक लेख, कहानियाँ, कविताएं तथा बैंकिंग से संबंधित रचनाएं आमंत्रित हैं. कृपया अपनी रचनाएं अपने पासपोर्ट साइज फोटो के साथ डॉ. सुलभा कोरे, कें.का. मुम्बई अथवा अपने राजभाषा प्रभारी को हार्ड कॉपी या ई-मेल sulabhakore@unionbankofindia.com से प्रेषित करें. रचनाओं के साथ मौलिकता का प्रमाणपत्र अवश्य संलग्न होना चाहिए. रचनाओं के अंत में अपना नाम, पदनाम, तैनाती, संपर्क नंबर, ई-मेल आई डी, भविष्य निधि क्रमांक, खाता संख्या आदि की पूरी जानकारी तथा रचनाओं के अन्यत्र अप्रकाशित होने संबंधी घोषणा भी संलग्न हो. विशेष-पत्रिका का अंतिम पृष्ठ (बैक कवर) आपका अपना हो सकता है. तो साझा कीजिए, आपके अपने कैमरे से खींचा हुआ, कोई सामाजिक सरोकार रखती हुई फोटो.



निवेश मंत्रः

नवनियुक्त युवाओं हेतु विशेष

रूपहला आज, सुनहरा कल

रीना और गौरव की मुलाकात नौकरी हेतु साक्षात्कार प्रक्रिया के दौरान हुई. दोनों का चयन एक ही कम्पनी में हो गया तथा उनकी प्रगाढ़ मित्रता ने दोनों को वैवाहिक बंधन में बांध दिया. उनके वैवाहिक जीवन के प्रारंभिक कुछ वर्ष बहुत ही मजेदार रहे. ऊँचे पद एवं अच्छे वेतन के चलते वे विश्व के कई देशों की यात्रा कर आए. पश्चिम के वैभव ने उन्हें अभिभूत कर दिया और वे खाओ, पीओ और मौज करो की संस्कृति में ढलते ही चले गये. कम्पनी द्वारा दिये गये उनके फ्लैट में सुख-सुविधा की समस्त सामग्री के साथ ही उनके पास थी एक लंबी सी एक्सयूवी कार! रीना और गौरव ने जब अपने परिवार को आगे बढ़ाने के विषय में सोचा तब उन्हें अपने आर्थिक जीवन से जुड़े हुए कुछ कटु अनुभव प्राप्त हुए. चूँकि इस दंपत्ति के पास बचत के नाम पर कुछ था ही नहीं. अतः प्रारंभिक चिकित्सकीय परीक्षणों के दौरान ही उन्हें लगने लगा कि उनके पास बहुत कम पैसा है. ऐसे में उन्होंने किसी वित्तीय सलाहकार से मिलने का निर्णय लिया. जब वे वित्त सलाहकार के पास गए तो सलाहकार ने उनकी आमदनी एवं व्ययों पर एक नजर दौड़ाई तो पाया कि रीना एवं गौरव बहुत अच्छा कमा रहे थे और इस कमाई से वे अपना वर्तमान एवं भविष्य दोनों ही सुरक्षित कर सकते थे, किंतु वे तो केवल आज में ही जी रहे थे. ऐसे में उनके सलाहकार ने उन्हें जो वित्तीय सलाह प्रदान की वह आज के युवाओं को जानना आवश्यक है.

हमारी ऊपर्युक्त कहानी से स्पष्ट है कि अधिकांश संगठनों में सतत भरती प्रक्रिया जारी है. बैंकों में युवा 35-40 वर्ष की कैरियर प्रत्याशा के साथ पदार्पण कर रहे हैं, ऐसे में यह आवश्यक है कि हमारी युवा पीढ़ी निवेश संबंधी समुचित निर्णय ले ताकि उनका भावी जीवन आसान हो सके. जिन युवाओं ने 2010 के पश्चात अपना कैरियर शुरू किया है उन्हें दीर्घकालिक निवेश की समुचित रणनीति बनाने की आवश्यकता है क्योंकि आज शानदार प्रतीत होने वाली कमाई, 35-40 वर्ष पश्चात जीवन निर्वाह हेतु पर्याप्त नहीं होगी. आज जैसी जीवनशैली को आगे भी बनाए रखने के लिए निवेश के तीन सिद्धांतों का पालन अतिआवश्यक है-

क्या हैं निवेश के सिद्धांत?

1. सुरक्षा
2. तरलता एवं
3. लाभप्रदता

इससे आगे सलाहकार महोदय ने बताया कि मैं अपने जीवन का एक निवेश अनुभव आपके साथ साझा करना चाहता हूँ जिससे आप

निवेश रणनीति तथा इसके तौर-तरीके को आसानी से समझ सकेंगे. बैंक में मेरी नौकरी लगने के पश्चात 1982 में मैंने ₹650 अर्ध वार्षिक किश्त पर जीवन बीमा पालिसी खरीदी थी. तब मेरी आयु 22 वर्ष थी और यह पालिसी 25 वर्षों के लिए मैंने ली थी. परिपक्वता पर मुझे ₹25000 सम अश्योर्ड एवं 10000 बोनस प्राप्त होना था. निवेश प्रारंभ करते समय मेरा वेतन 1000 मासिक था और मुझे प्रसन्नता थी कि मुझे 25 वर्षों पश्चात रु. 35000 प्राप्त होंगे जो कि निवेश आरंभ किये जाने के समय की तनख्वाह से 35 गुना अधिक होगा. सौभाग्यवश 2007 में वह दिन आ ही गया जब मुझे अपने बीमा निवेश का सम अश्योर्ड ₹35000 प्राप्त भी हुए. परंतु यह मेरे 2007 के मासिक वेतन का महज डेढ़ गुना ही था. 2007 में मेरा मासिक वेतन रु. 25000 हो गया था. इसका अभिप्राय यह हुआ कि लंबा धैर्य रखने के बावजूद मुझे अपने निवेश से ऐसा कोई प्रतिफल नहीं प्राप्त हुआ जो स्थायी अथवा पर्याप्त होता. जैसा कि हम सभी जानते हैं कि बीमा पालिसी हम प्रतिफल प्राप्ति के लिए नहीं लेते हैं, बल्कि इसलिए लेते हैं कि विषम परिस्थितियों अथवा किसी प्रकार की दुर्घटना हो जाने की स्थिति में परिवार के सदस्य/ हितार्थियों को कुछ महीनों की आर्थिक सहायता प्राप्त हो सके.

मेरे मन में प्रश्न उठा कि आखिर ऐसा क्यों हुआ कि अपने वरिष्ठ जन एवं माता-पिता द्वारा दिये गये परामर्श तथा स्वयं द्वारा लिये गये सर्वोत्तम निवेश निर्णय के बावजूद मैं अपने निवेश प्रतिफल से प्रसन्न नहीं था? इसके पीछे तीन कारण हैं- (1) मुद्रा स्फिति ने निवेश में हुई वृद्धि दर को बहुत पीछे छोड़ दिया था (2) मैंने अपनी क्षमता से कम निवेश किया एवं (3) मैंने उस समय के वेतन के 35 गुना प्रतिफल को निवेश आरंभ करने के समय बहुत आकर्षक मान लिया था.

सामान्य तौर पर युवाओं द्वारा की जाने वाली निवेश संबंधी भूलें-

कर रियायत प्राप्त करने हेतु बीमा पालिसी खरीदना.

निवेश कहाँ करें, इस पर असमन्जस होने की स्थिति में निवेश ही नहीं करना.

अपनी आय का एक छोटा हिस्सा बचाना.

अपने मित्र अथवा निकटस्थ के कहने पर थोड़े समय में धन के दोगुना होने के लालच में शेयर बाजार में निवेश करना

प्रति वर्ष आय बढ़ने पर बचत/निवेश राशि को न बढ़ाना.

कितनी हो सेवानिवृत्ति की कोर्पस राशि?

यदि आप सेवानिवृत्ति के पश्चात आज की तरह की जीवनशैली बनाये रखना चाहते हैं तो इस हेतु आपको ₹5 करोड़ से अधिक धनराशि की आवश्यकता होगी. यह आज बहुत अधिक लगता है न! यदि आपकी वर्तमान आय 40,000 है तो आप भविष्य के लिए कितना बचा सकते हैं? बचत का फार्मूला इस प्रकार हो सकता है-

बचत का फार्मूला

सलाहकार महोदय ने रीना और गौरव को बचत के दो फार्मूले सुझाए और उन्हें यह भी स्वतंत्रता दी कि वे इन दोनों में से जो अच्छा लगे उसका चुनाव कर लें.

आय (-) व्यय = बचत

अथवा

आय (-) बचत = व्यय

निश्चित रूप से दूसरा फार्मूला अधिक उचित प्रतीत होता है. रीना को दूसरा फार्मूला ही उपर्युक्त लगा क्योंकि उसे अपने परिवार की भावी चिंता ने घेर लिया था. वर्तमान 6-7 प्रतिशत की दर से बढ़ती हुई मुद्रा स्फिति की दर को ध्यान में रखकर यदि आज आपके मासिक व्यय को ₹30000 माने तो आज से 30 वर्षों पश्चात आपको ठीक आज की ही तरह जीवन व्यापन करने के लिए ₹5 करोड़ के कोर्पस की आवश्यकता होगी. ऐसे में बड़ा प्रश्न यह है कि आज की जीवनशैली को बाधित किये बिना कितनी बचत आगामी 30 वर्षों तक आपको करनी होगी? विगत 40 वर्षों में वेतन में हुई वृद्धि को देखें तो हम पाते हैं कि इसमें 100 गुना बढ़ोत्तरी हुई है जो कि अविश्वसनीय लगती है. क्या आप आगामी 35 वर्षों में अपने वेतन में होने वाली वृद्धि का अनुमान लगा सकते हैं? यह अनुमानतः 50 से 100 गुना होगा.

करें बचत एवं पाएं छूट

युवाओं हेतु यह आवश्यक है कि वे कररोपण के विषय में जागरूक हों. वे ऐसी योजनाओं से कर बचत की शुरुआत करें जिनमें आय कर की धारा 80 सी के अंतर्गत ₹150000 लाख पर कर बचत का लाभ मिल सकता हो. हालांकि शुरुआती दौर में कर छूट प्राप्त करना युवाओं की प्राथमिकता नहीं होती है, किंतु वेतन के बढ़ने के साथ इस हेतु उनके पास पर्याप्त राशि होती है जिसे बचाकर अथवा निवेश द्वारा कर में बचत प्राप्त की जा सकती है. कर बचत तथा निवेश हेतु आपके विकल्प सावधि जमा, ईपीएफ, पीपीएफ, एनपीएस, ईएलएसएस, यूलिप, जीवन बीमा आदि में से कोई या सभी हो सकते हैं. ऐसे निवेश विकल्प का चयन करें जो आपके लिए उपर्युक्त हो.

एक बात का ध्यान रखें, हो सकता है कि आज आपकी आय, कर के दायरे में नहीं आती है, लेकिन आज से 15 वर्ष पश्चात आपकी आय उच्च कर दायरे में आएगी, ऐसे में आपके पास नये कर बचत विकल्प नहीं होंगे क्योंकि आपकी आय अधिक हो चुकी होगी तथा खर्चे भी उसके अनुसार बढ़ेंगे. इसके साथ ही आपके पास कर बचत हेतु अन्य योजनाएं नहीं होंगी. अतः उचित यही है कि जितना हो सके आज से ही बचाएं. बहुत से लोग ईएलएसएस में योजनाओं में ₹150000 से अधिक का निवेश भी करते हैं क्योंकि इसमें प्रतिफल बहुत अच्छा है.

बनाएं अपना आशियाना

आज भी हम भारतीयों की आवश्यकता में अपनी छत अर्थात् स्वयं का घर सम्मिलित है. आवास ऋण हेतु मार्जिन मनी तथा अन्य खर्चों जैसे

पंजियन एवं अन्य शुल्क आदि की आवश्यकता होती है. ऐसे में यह आवश्यक है कि अपने कैरियर की शुरुआत में धनराशि जोड़ना शुरू कर दी जाए. इस हेतु यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की यूनियन मन्थली प्लस जैसी योजनाएं बहुत उपयोगी हो सकती हैं क्योंकि इनके माध्यम से निर्धारित राशि का 10 गुना तक बचाया जा सकता है. आप अपने एवं अपने परिवार जन के नाम पर मन्थली प्लस के खाते खोलकर अधिकाधिक बचत कर सकते हैं. आवासीय संपत्ति आपकी प्राथमिकता में सम्मिलित होनी चाहिए. आप अपनी आवश्यकता के अनुसार प्लॉट, मकान, डूप्लेक्स अथवा फ्लैट का चयन कर सकते हैं. अचल संपत्ति में निवेश आपको दीर्घकालिक लाभ प्रदान कर सकता है. चूंकि आपको लंबे समय तक कार्यरत रहना है, अतः बैंक से ऋण लेने पर आप दीर्घकालीन कर छूट भी प्राप्त कर सकते हैं. यह छूट आयकर की धारा 80 सी के अंतर्गत तथा ऋण पर लगने वाले ब्याज को आय में से कम करके आय कर अधिनियम की धारा 24 के अंतर्गत कर छूट प्राप्त की जा सकती है.

कैसे करें निवेश?

मुख्य रूप से तीन प्रकार के निवेशक होते हैं—सुरक्षित निवेशक, सीमित जोखिम उठाने वाले निवेशक एवं आक्रामक अथवा अधिक जोखिम उठाने वाले निवेशक.

यदि आप विभिन्न सेवानिवृत्ति योजनाओं के लिए ₹15000 बचाते हैं और प्रति वर्ष इसमें 10 प्रतिशत की वृद्धि करते हैं, तो आक्रामक निवेश आपको सुरक्षित निवेश की तुलना में बहुत अधिक प्रतिफल प्रदान करेगा. एनपीएस, पीपीएफ, जीवन बीमा आदि बचतों इसी प्रकार की हैं. जीवन बीमा की परिपक्वता पर जो प्रतिफल प्राप्त होता है वह 6-7 प्रतिशत की दर से बढ़ती महंगाई दर की तुलना में बहुत कम है, किंतु हमें बीमा पॉलिसी को बीमों की तरह ही लेना चाहिए, निवेश की दृष्टि से नहीं.

कोई सुरक्षित निवेश जब ₹15000 का निवेश करता है तो वह ₹7000 पीएफ एवं वीपीएफ में लगाएगा, ₹4000 लघु बचत योजनाओं तथा सावधि जमाओं में निवेशित करेगा. ₹1000 एनपीएस एवं यूलिप में जमा करेगा तथा ₹3000 पेंशन योजनाओं एवं बीमा पॉलिसी में निवेश करेगा. सीमित जोखिम उठाने वाला निवेशक इसी धनराशि को इस प्रकार निवेश करेगा— ₹5000 पीएफ/वीपीएफ में, लघु बचत एवं सावधि जमाओं में ₹2000, ₹5000 का निवेश वह इक्विटी फंड हेतु करेगा. ₹2000 एनपीएस तथा यूलिप के लिए एवं ₹1000 पेंशन व बीमा के लिए बचाएगा.

अधिक जोखिम उठाने वाला/आक्रामक निवेशक इतनी ही धनराशि को इस प्रकार निवेशित करेगा— ₹5000 पीएफ/वीपीएफ, ₹1000 लघु बचत एवं सावधि जमाओं में, ₹5000 इक्विटी फंड में, ₹4000 एनपीएस में/ यूलिप में. यहाँ यह माना जाए कि तीनों ही श्रेणियों के निवेशक सभी प्रकार के निवेश/बचतों में 10 प्रतिशत की दर से वार्षिक वृद्धि करेंगे. आपको अपनी जोखिम स्थिति को पहचानना होगा और उसके अनुसार ही निवेश निर्णय लेना होगा.

दूर की सोच, बड़ी सोच

म्युचुअल फंड कंपनियों का यह दावा है कि ₹10,000 से 15,000 मासिक के एसआईपी निवेश से कोई व्यक्ति लंबे समय पश्चात ₹5

करोड़ तक प्राप्त कर सकता है. दूसरी ओर जीवन बीमा की पालिसी द्वारा आपको सेवानिवृत्ति पर अथवा पूर्व निर्धारित समय पर एक निश्चित राशि प्राप्त हो सकती है, किंतु यह निवेश की तुलना में कम होती है तथा इस हेतु अधिक प्रिमियम का भुगतान करना होता है. जैसा कि ऊपर्युक्त मेरे उदाहरण से स्पष्ट है कि मुझे अपनी सेवानिवृत्ति हेतु यदि बीमा में निवेश करना होता तो यह मेरी वर्तमान आमदनी का 20 प्रतिशत होता. इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति पीएफ, एनपीएस, इक्विटी आदि में योजनानुसार निवेश करता है तो आगामी वित्तीय लक्ष्य प्राप्त करना कठिन न होगा. यदि कोई 30 वर्षीय व्यक्ति जिसकी मासिक आय 40000 रुपये हो और वह ₹5000 प्रति माह बचाकर 9 प्रतिशत वार्षिक प्रतिफल देने वाली निवेश योजना में निवेश करता है तो 60 वर्ष की आयु तक पहुंचने पर उसकी यह बचत ₹92 लाख होगी. लेकिन यदि वह अपने निवेश को 10 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से जो कि उसके बढ़ते हुए वेतन के अनुसार है, बढ़ाता है तो वह ₹2.25 करोड़ की बचत करेगा. जिससे उसकी बचत ₹2.76 करोड़ होगी. यह अचंभित करने वाली बात है कि हममें से बहुत कम ही इस तरह की रणनीति को अपनाते हैं, जबकि हमारा वेतन 5 वर्षों में कई गुना बढ़ जाता है. निश्चित रूप से वार्षिक वेतन वृद्धि एवं डीए में होने वाली वृद्धि दैनिक जीवन में होने वाले व्ययों की तुलना में कम होती है, फिर भी निवेश योग्य अतिरिक्त राशि में वृद्धि हो सकती है. राहत की बात यह है कि पीएफ में दिया जाने वाला योगदान सीधे वेतन से जुड़ा होता है और वेतन के बढ़ने के साथ यह बढ़ता है.

म्युचुअल फंड, डेट, इक्विटी एवं बैलेंस

म्युचुअल फंड व्यवसायिक रूप से संचालित निवेश फंड होता है जिसमें कई निवेशकों के धन को इक्विटी प्रतिभूतियों को क्रय करने के लिए उपयोग में लाया जाता है. ये प्रायः ओपन एंडेड निवेश कम्पनियाँ कही जाती हैं. ये दैनिक तौर पर जन सामान्य को अपनी यूनिटों का विक्रय करती हैं. इन्हें सामान्य तौर पर निवेश कम्पनी अथवा पंजिकृत निवेश कम्पनी कहा जाता है. यदि कुछ निर्धारित मापदंडों का पालन किया जाए तो म्युचुअल फंड कम्पनियों से प्राप्त लाभ पर कर नहीं चुकाना होता है. किसी विशेष प्रतिभूति में सीधे निवेश करने की तुलना में म्युचुअल फंड में निवेश के लाभ एवं हानि दोनों ही हैं. आज ये घरेलू बचतों एवं भावी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति में महति भूमिका अदा कर रहे हैं.

मुख्य रूप से म्युचुअल फंड तीन प्रकार के होते हैं. ओपन एंडेड फंड, यूनिट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट एवं क्लोज एंडेड फंड. ओपन एंडेड फंड सबसे अधिक प्रचलित फंड है. यह फंड दैनिक आधार पर निवेशकों से प्रतिभूतियों की खरीदी करता है. म्युचुअल फंड को उनके निवेश के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है. प्रमुखतः 4 प्रकार के फंड होते हैं जो कि क्रमशः मुद्रा बाजार फंड, बाँड एवं स्थायी आय फंड, स्टॉक और इक्विटी फंड एवं हाइब्रिड फंड हैं.

ओपन एंडेड फंड निवेशकों से प्रतिभूतियों को दिन के अंत में नेट असेट वैल्यू के आधार पर खरीदते हैं तथा बेचते हैं. इस तरह ओपन एंडेड फंड निरंतर खरीदी व बिक्री में लगे रहते हैं. दूसरी ओर क्लोज एंडेड फंड में एक बार पैसा लगाने के पश्चात निकालने की छूट नहीं होती. निर्धारित समय तक निवेशित राशि को फंड में लगाए रखना होता है. डेट फंड वे फंड हैं जिनके माध्यम से निवेश सुरक्षित क्षेत्रों में

किया जाता है, हालाँकि इनकी वृद्धि भी सीमित होती है. हाइब्रिड अथवा बैलेंस फंड वे फंड हैं जो कि इक्विटी एवं डेट फंड में निर्धारित अनुपात के आधार पर निवेश करते हैं. ध्यान रहे, फंड मैनेजर निवेश संबंधी मामलों के विशेषज्ञ होते हैं और निवेश बहुत सोच-समझकर एवं बाजार की स्थिति को देखकर ही करते हैं, किंतु ध्यान रहे कि म्युचुअल फंड निवेश बाजार जोखिम के अधीन होते हैं. इस तरह आपको पीएफ, एनपीएस, बैंक जमा तथा म्युचुअल फंड में निवेश की रणनीति बनानी चाहिए. जिसमें आगे आवासीय संपत्ति, जीवन बीमा एवं मेडिकलेम संबंधी बीमों को सम्मिलित करना चाहिए.

न चोरों का डर, न मिलावट का हो असर

हम भारतीयों को विगत हजारों सालों से स्वर्ण ने बहुत लुभाया है. आज भी पारंपरिक निवेश एवं आभूषण विकल्प के रूप में सोने की मांग भारतीय बाजारों में बनी हुई है. भौतिक रूप से स्वर्ण की खरीदी सीमित मात्रा में तो स्वीकार्य हो सकती है, किंतु आधुनिक निवेशक की दृष्टि से देखें तो हम पाते हैं कि सोना खरीदना और पहनना दोनों ही जोखिम का सौदा है. ऐसे में स्वर्ण प्रेमियों को निराश होने की आवश्यकता नहीं है. वे चाहें तो भारत सरकार एवं रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा समय-समय पर जारी किये जाने वाले सॉवरेन गोल्ड बांड को खरीद सकते हैं. इस पर वार्षिक आधार पर व्याज दिया जाता है तथा बेचने पर बाजार स्वर्ण मूल्य प्राप्त हो जाता है. किसी भी प्रकार का जोखिम इसमें नहीं रहता क्योंकि इसे निवेश करने वाला व्यक्ति ही निर्धारित समय के पश्चात भुना सकता है. लंबे समय के निवेश विकल्प में आप इसे भी सम्मिलित कर सकते हैं, किंतु ध्यान रहे कि इस विकल्प में सीमित निवेश ही किया जाना चाहिए क्योंकि स्वर्ण का मूल्य विगत कई वर्षों से स्थिर है तथा आगे इसमें तेज उछाल आने की संभावना भी कम ही है.

हमारी कहानी के पात्र रीना और गौरव तो सलाहकार की बातों से न केवल प्रभावित हुए, बल्कि उन्होंने अपने खर्चों पर लगाम लगाई, निवेश के विकल्पों पर सोच-विचार कर निवेश की रणनीति बनाई और वे तैयार हो गये अपने स्वर्णिम भविष्य के सपने संजोने के लिए. उन्हें पता था कि निवेश करने में कभी देरी नहीं होती है और इस क्षेत्र में जब जागे तभी सवेरा हो जाता है. क्या आप ने अब तक निवेश रणनीति बनाई है? यदि नहीं तो उठिये, आगे बढ़िये और कीजिए अपने उज्ज्वल भविष्य की तैयारी. आज आपके हाथ में है, कल को आज से बेहतर बनाना है, तो देर किस बात की!

अंत में, हमारी यही सलाह है कि गलत निर्णय लिये जाने के डर से अपने निवेश को निष्क्रिय न रखें. समय की कमी हमें स्टॉक मार्केट में निवेश करने से रोकती है. बाजार में निवेश जोखिम भरा है और प्रत्येक व्यक्ति के बस में यह नहीं है कि वह इक्विटी में निवेश करे और उस पर ध्यान रखे. इसके साथ ही अपने घर का बजट तैयार करें तथा उसके अनुसार व्यय करें ताकि सारे खर्चों को हटाने के पश्चात आपके पास निवेश हेतु धनराशि बचे.

मोहन बोधनकर
स्टा.प्र.के., भोपाल



पैदल चलने के फायदे

अक्सर आपने लोगों को पैदल चलते हुये देखा होगा और पैदल चलने के फायदों के बारे में भी सुना होगा. लेकिन पैदल चलने में कुछ ऐसे फायदे भी हैं, जिन्हें जानकर आप भी रोजाना पैदल चलना शुरू करेंगे.

कई प्रयोग यह साबित कर चुके हैं कि रोजाना 30 मिनट तक पैदल चलने से कई तरह की बीमारियों से बचा जा सकता है, साथ ही सेहतमंद रहा जा सकता है.

डायबिटीज प्रतिरोध कार्यक्रम यह बताता है कि हर सप्ताह 150 मिनट तक पैदल चलने से 7 फीसदी यानी 12 से 15 पाउंड तक वजन कम किया जा सकता है और इससे 58 फीसदी डायबिटीज होने के खतरे से बचा जा सकता है.

पैदल चलने से महिलाओं के दिल की सेहत भी मजबूत होती है. एक रिसर्च में यह पता चला है कि जो महिलाएं सप्ताह में 3 घंटे या उससे अधिक पैदल चलती हैं उनमें 35 फीसदी हार्ट अटैक का खतरा उन महिलाओं के मुकाबले घट जाता है जो पैदल नहीं चलती हैं.

एक रिसर्च में पाया गया कि जो लोग सप्ताह में कम से कम 1.5 घंटे चलते हैं उनका दिमाग अधिक तेज होता है.

इसके अतिरिक्त मोनोपोज के बाद जो महिलाएं रोजाना 1 मील चलती हैं उनकी हड्डियां बहुत मजबूत रहती हैं. ऐसे साधारणतः पैदल चलने से सभी की हड्डियां बहुत मजबूत होती हैं.

एक सप्ताह में तीन से पांच बार 30 मिनट चलने से डिप्रेशन को 47 फीसदी तक कम किया जा सकता है. साथ ही जब भी आप पैदल चलें तो हमेशा अपने चेहरे पर मुस्कराहट बनाए रखें, तो पैदल चलने के फायदे में वृद्धि होगी.

जो महिलाएं प्रति सप्ताह सवा घंटे से ढाई घंटे तक पैदल चलती हैं उनमें 18 फीसदी तक ब्रेस्ट कैंसर का खतरा कम हो जाता है.

एक सप्ताह में तीन बार 30 मिनट तक पैदल चलने से हृदय तंदुरुस्त रहता है. भोजन के बाद पैदल चलने से भोजन का पाचन अच्छा होता है एवं मोटापा नहीं बढ़ता है.

पैदल चलने से बहुत सारे हॉर्मोनल डिसऑर्डर में भी फायदे मिलते हैं. नियमित पैदल चलने वाला आदमी अन्य से अधिक खुश रहता है.

हरी-हरी घास पर नंगे पैर पैदल चलने से आंखों की रोशनी में भी वृद्धि होती है. साथ ही आंखों की बीमारी में भी कमी आती है.

बच्चे यदि पैदल चलें तो उनकी स्मरणशक्ति में वृद्धि होने के साथ-साथ एकाग्रता में वृद्धि और पढ़ाई में मन लगता है.

किसी भी समय पैदल चलना सेहत के लिए उपकारी है पर सुबह पैदल चलना और अधिक फायदेमंद है.

आपके चेहरे पर झुर्रियां नहीं पड़ती, साथ-साथ आप अधिक उम्र तक जवान दिखते हैं.

शरीर को चुस्तदुरुस्त एवं अधिक सक्रिय रखने के लिए रोजाना पैदल चलना बहुत फायदेमंद होता है. इतना ही नहीं, रक्तचाप और मोटापा कम करने में भी पैदल चलना फायदेमंद है.

इतने सारे फायदे को देखते हुए आप खुद पैदल चलना शुरू कर दें, साथ ही साथ अपने परिवार के सभी सदस्यों को पैदल चलने के लिए कहें. उसके बाद अपने दोस्तों को और अपने आस पड़ोस में रहने वाले सभी पड़ोसियों को चलने के लिए प्रोत्साहित करें, ताकि हम एक स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ भारत का निर्माण कर सकें.

के. एम. रेड्डी
आईटी विभाग
के.का. मुंबई



काव्य सृजन

युवा दृष्टि:
युवा श्रोत्र

हम नौजवान हैं, हम में है युवा जोश,
हमसे ही रौशन ये जहाँ है
दौड़ने को है सारी जर्मी हमारी,
पंख जो खोले तो
उड़ने को खुला आसमां है
तूफानों को आने दो,
हम को है कोई डर नहीं.

मौजों पे है मचलना,
निकाल ली है कश्तियाँ.
लगाने दो जोर आँधियों को,
साहिल के पार जाना है.
बस लहरें है और पाल है,
अब कस ली हैं मुट्टियाँ.
खतरों से अब यूँ खेलना
आदत में अपनी शुमार है.
डर भला किस बात का,
हिम्मत हममें बेशुमार है .

एक कश्ती और
हाथ में पतवार हो
फिर नहीं डर
कैसी भी मझधार हो
चीर देंगे हम
समंदर का भी सीना
चाहे क्यूँ ना
प्रलय की ही बौछार हो



प्रशांत पिल्ले
कें., का., मुंबई

मुखौटे

मुखौटे पे मुखौटे हैं,
सच्चे दिखते पर खोटे हैं
चेहरों पर मुस्कान लिए
पर अन्तर्मन में धोखे हैं
मन के रावण पर विजय नहीं,
और खुद को राम दिखाते हैं
चित्त कलुषित है पापों से,
तन को गंगा में धोते हैं
कितने चेहरे हैं वो लिए,
अब असली खुद ही भूल गए
सागर सा जब चित्त लगे,
समझो तूफानी झोंके हैं
पल-पल में पर्त बदलते हैं,
पल में ज्ञानी फिर मूढ़ बने
सब आँख मीच कर बैठे हैं,
माटी के बने चिरीटे हैं
मुखौटे पे मुखौटे हैं,
सच्चे दिखते पर खोटे हैं
चेहरों पर मुस्कान लिए
पर अन्तर्मन में धोखे हैं।



कुलदीप पाठक
कें., का., मुंबई



मनहूस

मनहूस के मन में रोज उठता एक सवाल है
उसे हर रोज इसी बात का मलाल है
कि पड़ोस में उसके खुशदिल क्यों बसते हैं
मुश्किलों में भी खुशदिल क्यों हैंसते हैं ?
उनकी खुशियाँ चुभती हैं
सिने में खंजर बनकर
उनकी खुशियाँ उतरती हैं
गले से जहर बनकर
हे मालिक, तू खुशदिलों की
जिंदादिली पर रहम कर
मनहूस की मनहूसियत पर रहम कर और
खुशदिलों को इस बस्ती से उठा ले या
मनहूसों के लिए अलग बस्ती बसा दे।



के. एच. रघुराव
क्षे.का., रीवा





मेरा लक्ष्य

भ्रष्टाचार मुक्त भारत

नई सुबह की नई इबारत
मेरा लक्ष्य - भ्रष्टाचार मुक्त भारत
मेरा लक्ष्य - भ्रष्टाचार मुक्त भारत ।

छोटी सी शुरुआत भले हो,
यूनियन बैंक के साथ भले हो,
प्रियंका की नई पहल ये,
शाखा यवतमाल के साथ भले हो।

हर कर्मचारी करेगा,
तीन ग्राहकों को जागरूक,
साथ कहेगा हर ग्राहक से,
आगे करें वे तीन जागरूक ।

ना रिश्वत लूंगा, ना लेने दूंगा।
हर काम, पूरी ईमानदारी से करूंगा
सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता
इन गुणों को धारण करूंगा,
कहीं हुई जो भ्रष्टाचार की घटना
उचित संस्था को सूचित करूंगा ।

सीवीसी की इसी शपथ से
जुड़ता जाएगा सारा भारत
नई सुबह की नई इबारत
मेरा लक्ष्य - भ्रष्टाचार मुक्त भारत
मेरा लक्ष्य - भ्रष्टाचार मुक्त भारत



प्रियंका इंदूरकर
शाखा-यवतमाल, क्षे.का. नागपुर



मेहनत और सफलता

मेहनत है जननी जिसकी, सफलता उसका नाम है
बिन मेहनत के मिल न पाए, ऐसा ये मुकाम है
जलना पड़ता, मरना पड़ता
गिर-गिर कर फिर उठना पड़ता
कठिन परिश्रम करना पड़ता
आसानी से मिल न पाए, ऐसा ये इनाम है
मेहनत है जननी जिसकी, सफलता उसका नाम है

गर मिल जाए किसी को उसका फिर सम्मान है
सारे जहां में नाम है, उसका ही गुणगान है
दुनिया भर में मशहूर करा दे, ऐसा ये काम है
मेहनत है जननी जिसकी, सफलता उसका नाम है

पर यदि न मिल पाए किसी को, उसका जीना हराम है
जिल्लत सहना पड़ता उसको, पाता हरदम अपमान है
दरिद्रता से मुक्ति दिलाए, ऐसा ये व्यायाम है
मेहनत है जननी जिसकी, सफलता उसका नाम है

कर लो परिश्रम आज तुम, जीना कल आसान है
जीवन की इस भागदौड़ में कहीं किसी को आराम है
कड़ी तपस्या से ही मिलता, ऐसा ये परिणाम है
मेहनत है जननी जिसकी, सफलता उसका नाम है



घनश्याम
भायखला शाखा, मुंबई (द.)



माँ और परमात्मा

मैं सोचता हूँ परमात्मा कैसा होगा ?
पर मुझे लगता है, जरूर माँ जैसा होगा.
माँ जो जननी है, जन्मदाता है,
वही तो धरा पर एक विधाता है.
माँ, जो बचपन में
लोरियाँ गाकर सुलाती थी,
खुद भूखे रहकर भी
हमें खिलाती थी.
माँ की गोद में आकर
अठखेलियाँ हम करते थे,
कितनी बार न जाने,
उनका आँचल गीला करते थे.
पर माँ है, जो कभी शिकायत नहीं करती है,
हमारी एक मुस्कराहट को
वह नित रोज तरसती है.
अपनी छाती से लगाकर,
उसने हमें सींचा है,
माँ के लिए तो हम ही गुल हैं,
हम ही उसका बगीचा है.
दर्द जो हमें होता कभी,
तो माँ भी संग में रोती है,
उसकी दुनिया हमसे शुरू,
हम पर ही खत्म होती है.
इसीलिए तो सब कहते हैं -
जहां परमात्मा नहीं वहाँ माँ है
माँ है तो अंधेरे ज़िंदगी में भी,
रौशनी का जहां है.
जब यह दीया नहीं रहता,
तब समझ में आता है,
ज़िंदगी खाली हो जाती है,
बचपना कहीं खो जाता है.
काश, ये दीया यूँ ही जलता रहता !
काश, मैं माँ की गोद में पलता रहता !



सतवीर सिंह आर्य
सेवा शाखा, बड़ौदा



फसल

खड़ी फसल को देखकर
मन होता है प्रसन्न
मिलती सबको जो खुशी
हो जाते हम धन्य
दिन रात कड़ी मेहनत करके
जिसे खून पसीने से हमने सींचा है
धीरे-धीरे से बढ़ते हुए
इन पौधों को हमने देखा है
अंकुरित पौधों की भी निराई
समय-समय पर जाकर की है
न हो फसल खराब कभी
जी जान से ये तपस्या की है
प्रदूषण भरी इस दुनिया में
फसलों को दम घुटते हमने देखा है
फसलों के कट जाने पर
इसे फफक-फफक कर रोते देखा है
फसलों की ऐसी बिगड़ी हालत पर
दिल कसकर हमने भींचा है
क्योंकि हमारी ही
लगाई हुई फसल है यह
जिसे हमने अपने
खून पसीने से सींचा है

भाषा हमारी पहचान

पूरब की हैं अनेक भाषाएं, जो पश्चिम में अनजानी है
हिन्दी एक भाषा के बोल अनेक
यही उत्तर की प्रवीण जुबानी है
दक्षिण में भी हिन्दी की अमिट रह चुकी निशानी है
कुछ तुम बोलो कुछ हम बोलें,
समझ की पूरी कहानी है
विविधता में एकता, यही हमारी पहचान है

कई भाषा, कई जाति,
ये भारत के स्वतंत्रता सेनानी हैं
ये एकता की जान है और हिन्दी देश की शान है
अंग्रेजी तो भई है मजबूरी, हिन्दी तो अभिमान है
हिन्द मेरी जान और हिन्दी मेरी पहचान है
विविधता में एकता, यही हमारी पहचान है

किसी बोली से किसी को घृणा नहीं,
ये सब तो गंदी राजनीति है
भाषा का महत्व समझ के अब
सभी को साथ चलना है
शून्य से आगे बढ़कर सौ के लक्ष्य को पाना है
राष्ट्रीय अखंडता हमारी सबसे बड़ी शान है
विविधता में एकता यही हमारी पहचान है

गिरीश चन्द्र शर्मा
क्षे.का., मेरठ



समीर रंजन पात्रो
यूएलपी, क्षे.का., मद्रास



कोलकाता

कोलकाता
तेरा एक और नाम है, सिटी ऑफ जॉय,
जो भी आता है, तुझमें ही खो जाता है,
तेरे अस्तित्व में अपना अस्तित्व मिलाकर
तुझमें ही रम जाता है
कोलकाता
तेरा एक और नाम है, सिटी ऑफ जॉय
ऐतिहासिक धरोहरों से परिपूर्ण
कई शासकों के उत्थान पतन को
अपने में संजोए समाहित किए
निरंतर बदलाव और नवीनता
को अपनाते हुए
रूप सौन्दर्य को निखारते हुए
तू आज भी अचल है, अटल है
सौन्दर्य से ओत-प्रोत है
लाखों लोग प्रतिदिन
बस, ट्रेन, ट्राम की भीड़ में
धक्का खाते बढ़ते हैं अपनी मंजिल की ओर
ऑफिस, स्कूल, कॉलेज
गोद में शिशु लिए
खचाखच भरी बस में
ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही
माँ की आंखें
तलाश रही थीं
बैठने की कोई सीट
उस माँ को बैठने की सीट देकर
बचा ली उसने
कोलकाता की संस्कृति और परंपरा
जिसका बखान करते नहीं थकते
कवि केदारनाथ जी,
कि कैसे ट्राम लाइन पर
घायल गौरैया को बचाने के लिए
एक दिन रुक गई थी ट्राम
और लग गया था ट्रामिक जाम
और थम गया था, थोड़ी देर के लिए
शहर कोलकाता
बचाने को घायल गौरैया की जान,
ये हमारा कोलकाता
सबसे प्यारा, सबसे निराला
सिटी ऑफ जॉय

प्रीति साह
क्षे.का., कोलकाता



बदलता युग

बदलते प्रतिमान



युग के साथ परिभाषाएँ परिवर्तित होती हैं. परसों यात्रा के दौरान मैंने एक ऑटो पर लिखा देखा Beware of each other. इससे पूर्व मैंने कई घरों पर लिखा देखा था Beware of dogs. तुरंत मेरे मस्तिष्क में कौंधा- वस्तुतः हर युग अपने साथ नई परिभाषा लेकर आता है, जैसे- पहले मौन स्वीकृति सूचक शब्द था अब मौन अस्वीकृति का पर्याय बन गया है.

पहले शांत धीर वीर चित्त प्रकृति, मानव की पहचान थी. अब हल्ला बोल, अधैर्य चित्त प्रकृति मानव पर हावी होती जा रही है. चाहे राजनीति हो या क्रिकेट, आक्रामक प्रकृति ने शांत प्रकृति पर अपना सिक्का जमा लिया है, सही ही है अब शांत, चुप रहना, आपके दब्यूपन की पहचान हो गई है. प्रतिक्रिया व्यक्त करना, आपके अस्तित्व को पहचान दिलाता है और चुपचाप कार्य करो- प्रकृति विलुप्त हो गई है.

आज प्रचार-प्रसार का युग है. अपने कार्य का सर्वत्र प्रचार करें, तभी आप सफल होंगे. सोशल मीडिया ने आज प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. यही कारण है कि अच्छाई हो या बुराई शीघ्रताशीघ्र अपने पैर फैला रही है. आज मतभेद व्यक्त करना वीरता की निशानी है. पहले मतभेद में एक शालीनता होती थी, आज शिष्टता विलुप्त होती जा रही है. मतभेद मतैक्य पर हावी हो गया है. आक्रोश, विक्षोभ, आरोप-प्रत्यारोप की भाषा विकसित होती जा रही है.

यदि राम की मर्यादाशीलता ने अपने पर फैलाए होते, तो कभी भी कौरव-पांडव में युद्ध न होता. कुरुक्षेत्र की धरती रक्त रंजित आज भी नहीं रहती. आज उत्तर कोरिया-अमेरिका के बीच प्रदर्शन ही तो है. क्या शक्ति प्रदर्शन वीरता का पर्याय होता जा रहा है. शक्ति प्रदर्शन, आत्माभिमान का पर्याय न होकर, अहं का प्रतीक बन गया है. दो विश्व युद्ध हो चुके हैं, जिसमें मानवता का संहार हुआ. यदि तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो मानवता विलुप्त हो जाएगी.

मैंने पुस्तकालय की पुस्तकें खरीदी. हमारी फरीदाबाद की एक शाखा के शाखा प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यालय आए हुए थे. मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे फरीदाबाद की सभी शाखाओं की पुस्तकें ले जाएं. वे मान गए. उस समय कोई भी चपरासी उपलब्ध न होने से वे बोले हम भी मजदूर ही हैं. मैं स्वयं पुस्तकें ले जाकर गाड़ी में रख देता हूँ. यह सुनकर हमारे कार्यालय के स्टाफ मुंह पर हाथ रखकर हंसने लगे. उनके जाने के बाद मैंने उनके इंचार्ज से कहा- क्या आजकल के बच्चे अपना हाथ, जगन्नाथ की बात भूल चुके हैं. महात्मा गांधी के सिद्धान्त को विस्मृत कर चुके हैं. पहले एक दूसरे की मदद करना पड़ोसी का कर्तव्य होता था. आज मदद के स्थान पर मुंह फेर लेना प्रमुख हो गया है. पहले टीवी सीरियल भी शिक्षाप्रद होते थे, आज के

सीरियल में भाई-भाई का दुश्मन है. बहू-सास एक दूसरे की कट्टर विरोधी हैं. परिवार में सामंजस्य की जगह दुर्भावना बलवती हो गयी है. जैसे लगता है कि बहू-सास एक परिवार के सदस्य न होकर दो परस्पर विपरीत ध्रुव हैं. यही हाल फिल्मों का है- परिवार में टूटन, बिखराव, परहित की जगह, स्वहित की भावना बलवती हो गई है. मित्रता ने शत्रुता पर पकड़ मजबूत कर ली है.

अतः आज आवश्यकता है, मानव मन का विक्षोभ दूर कर उसमें देश प्रेम की भावना का विकास करना है, ताकि मानव मन, शांत, शिष्ट, सुशील, सदाचारी व सुसंस्कारी बने. आज फेसबुक क्या है, स्वयं को श्रेष्ठ दिखाने की चाहत. जहां हम स्वयं के असली रूप को विलुप्त कर देते हैं, वहाँ हमारा नकली चेहरा हम पर हावी हो जाता है. मुझे एक कवि की पंक्तियाँ याद आ रही हैं-

कहने और सुनने में लाखों फेर होते हैं,
वह चिड़िया कौन सी है, जिसके सिर पर पैर होते हैं।

अतः आज चाहे फेसबुक हो या सोशल मीडिया, सर्वत्र ऐसे मानवता के पुजारी को अग्रदूत बनकर आना होगा, जो मानव में प्रेम, करुणा, मानवता का भाव विकसित करने में सहायक हो. जब हममें मानवता, स्नेह, अपनत्व की भावना पनपेगी तो भ्रष्टाचार, लूट, हत्या, चोरी जैसे नृशंस कांड स्वयमेव लुप्त हो जाएंगे. व्यक्ति, कार्यक्षेत्र हो या गृह सभी में शांत रहेगा. शांत सुकून मन से उसके हृदय में करुणा का सदेश पनपेगा. एक दूसरे के प्रति नफरत स्वयमेव लुप्त हो जाएगी. नफरत का अंत मानवता का पुनरुद्धार है, नवजीवन का सुंदर संचार है. स्नेह और दया का आगोश है, करुणा की प्रतिपूर्ति है, विकास का सुंदर सोपान है.



डॉ मीना कुमारी
क्षे.का., दिल्ली (उत्तर)

मलयालम भाषा



मलयालम स्वयं में एक संपूर्ण भाषा है जो कि सभी विधाओं से परिपूर्ण एवं समृद्ध है. काव्य, गद्य एवं गीतों जैसी रचनाओं ने मलयालम को आज भी जीवंत रखा है. समय के साथ स्वयं को परिवर्तित कर अन्य भाषाओं को स्वयं में समाहित कर ही मलयालम आज के अपने इस स्वरूप में विकसित हुई है.

मलयालम साहित्य की प्राचीनता लगभग एक हजार वर्ष तक की मानी गई है. अधिकांश साहित्यकारों का मत है कि मलयालम संस्कृतजन्य नहीं है, द्रविड परिवार की ही सदस्या है. सन 3100 ईसापूर्व से लेकर 100 ईसापूर्व तक यह प्राचीन तमिल का एक स्थानीय रूप थी. ईसा पूर्व प्रथम सदी से इस पर संस्कृत का प्रभाव हुआ. तीसरी सदी से लेकर पन्द्रहवीं सदी के मध्य तक मलयालम का मध्यकाल माना जाता है. इस काल में जैनियों ने भी भाषा को प्रभावित किया. आधुनिक काल में सन् 1795 में परिवर्तन आया जब इस राज्य पर अंग्रेजी शासन पूर्णरूपेण स्थापित हो गया. मलयालम का साहित्य आठ शताब्दियों से अधिक पुराना है.

19 वीं शताब्दी के अंतिम चरण तक मलयालम साहित्य का जो इतिहास मिलता है वह काव्य का ही इतिहास है. साहित्य की प्रारंभिक दशा का परिचय देने वाला काव्य ग्रंथ 'रामचरितम्' है, जिसे 13 वीं शताब्दी में लिखित बताया जाता है. यद्यपि मलयालम के प्रारंभिक काव्य के रूप में 'रामचरितम्' को ही लिया जाता है तो भी केरल की साहित्यिक परंपरा उससे भी पुरानी है. मलयालम साहित्य के इतिहास का प्रभात गीतों से गुंजायमान है. इनमें भक्ति, वीररस और हास्यरस के गीतों के साथ-साथ प्रौढ़ काव्य विद्यमान है. इन प्रौढ़ रचनाओं में रामचरितम् का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है. इसकी विषयवस्तु रामायण के 'लंका कांड' की कथा है. केरल के चिरामन नामक कवि ने इसकी रचना की है. अनुसंधानकर्ताओं का यही मत है कि रामचरितम् का रचनाकाल 13वीं शताब्दी है.

प्राचीन काल में केरल को 'तमिषकम' का भाग ही समझा जाता था. दक्षिण भारत में सर्वप्रथम साहित्य का स्रोत भी तमिषकम की भाषा में फूट पड़ा था. तमिल का आदिकालीन साहित्य 'संघम कृतियाँ' नाम से जाना जाता है. संघम काल नाम ही उन कृतियों को तथा उनके रचनाकाल को घोषित करता है. संघमकालीन महान रचनाओं का सम्बन्ध केरल के प्राचीन चेर-साम्राज्य से रहा है. 'पतिट्टिप्पत्तु' नामक जो संघमकालीन कृति है

उसमें दस चेर राजाओं का प्रशस्तिगीत है. 'चिलप्पतिकारं' महाकाव्य के प्रणेता इलंगो अडिगल चेर देश में पैदा हुए थे. इसके अतिरिक्त तीन खण्डों वाले प्रस्तुत महाकाव्य का एक खण्ड 'वञ्चिकाण्डम' का प्रतिपाद्य विषय चेरनाड में घटित घटनाएँ हैं. संघमकालीन साहित्यिकों में अनेक केरलीय भी हैं.

सातवीं सदी ईसवी से लेकर आगे कुछ समय तक केरल के सांस्कृतिक क्षेत्र में आर्यवंशज नंपूतिरियों का काफी प्रभाव रहा. अधिकतर अनुसंधानकर्ताओं का यही मत है कि वे बहुत पहले ही केरल में आ चुके थे. इन्हीं के प्रभाव से केरल में मणिप्रवालम् नामक मिश्र भाषा का विकास हुआ. 10वीं और 15वीं सदी ईसवी के मध्य मणिप्रवाल साहित्य की अत्यधिक पुष्टि हुई. इसी मणिप्रवाल के माध्यम से संस्कृत के अनेक काव्यरूपों का संक्रमण मलयालम में हुआ.

यदि एक तरफ मणिप्रवाल साहित्य का विकास होता गया तो दूसरी तरफ पाडु (गीत) नामक काव्यशाखा की भी वृद्धि होती गई. जैसा ऊपर कहा गया है, इस शाखा में धार्मिक एवं खेती और अन्य पेशों से संबद्ध अनेक लोकगीत हैं. तोरम् पाडु (अवतारगीत-कालीस्तुति), सर्पम् पाडु (सर्पस्तुति गीत), अय्यप्प पाडु (अय्यप्प देवता का स्तुतिगीत) इत्यादि का संबंध आचार मर्यादाओं और धार्मिक विषयों से है. कृष्णपाडु (कृष्ण-गीत), आररुपाडु (धान के पौधे लगाते वक्त गाया जानेवाला गीत), वल्लप्पाडु (नौका गीत) इत्यादि दूसरे वर्ग में आते हैं. इन गीतों के मूल घटक हैं-स्वर, ताल और लय.

शंकर पणिक्कर की रचना 'भारतमाला' नामक गानकाव्य है. राम पणिक्कर ने रामायण, भारत और भागवत का संक्षिप्त अनुवाद किया. यह कथन गलत नहीं होगा कि मलयालम को अपने पाँव पर खड़े होने का बल प्रदान करनेवाले इसी कवि को भाषा का पिता माना जा सकता है.

आट्टकथा नृत्यकला से संबद्ध साहित्य विभाग है. इस कलारूप का नाम कथकली है. आट्टकथा मलयालम की एक विपुल साहित्यशाखा है. आज कथकली को अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त है. इस कलारूप को यह स्थिति प्रदान करने में इसके आधारभूत साहित्य ने महान योगदान दिया है.

17 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कोषिकोट के मानवेद राजा ने कृष्णगीति नामक संस्कृत काव्य की रचना की. इसके आधार पर कृष्णनाट्टम नामक नृत्यकला का भी आविर्भाव हुआ. इसमें श्रीकृष्ण की कथा का आठ दिनों में अभिनय करने की योजना बनाई गई. कृष्णनाट्टम की देखा देखी रामनाट्टम नामक दूसरे नृत्यकला-रूप का भी आविष्कार किया गया. इस कला-रूप के आधारभूत साहित्य में रामकथा को आठ रात में खेलने योग्य खंडों में विभक्त किया गया. इसके रचयिता कोट्टारक्करा के राजा है. इनके जीवनकाल के संबंध में दो मत हैं. कुछ लोग इन्हें सत्रहवीं शताब्दी के मानते हैं, दूसरे 15-16वीं शताब्दी के. रामनाट्टम में आज की कथकली का प्रारूप दर्शनीय है.



इसके बाद केरल वर्मा कोयित्तपुरान के काल (1845) से मलयालम साहित्य के आधुनिक युग का प्रारंभ हो जाता है। साहित्यसार्वभौम की उपाधि से विभूषित इस प्रतिभाशाली लेखक के नेतृत्व में साहित्य में एक नवजागरण आ गया। मयूर सदेशम नामक सदेश काव्य, शाकुंतलम नाटक का अनुवाद और अकबर नामक उपन्यास उनकी रचनाओं में मुख्य हैं। उनके शाकुंतल अनुवाद के साथ मलयालम में संस्कृत नाटकों के अनुवादों की बाढ़ सी आई। चातुक्कुट्टि मन्नाटियार, कुंजिकुट्टन तंपुरान, कोट्टारत्तिल शंकुण्णि इत्यादि ने इस शाखा की पुष्टि की। संस्कृत नाटकों की ही तरह स्वतंत्र मलयालम नाटक भी लिखे गए। केरल वर्मा के भागिनेय राजराज वर्मा ने भी कालिदास आदि के ग्रंथों का अनुवाद किया। इन्हीं राजराज वर्मा ने मलयालम को केरलपाणिनीयम नामक व्याकरण ग्रंथ और वृत्तमंजरी नामक छंदशास्त्र ग्रंथ प्रदान किया, जो कि सबके लिये प्रेरणास्रोत और मार्गदर्शक रहे।

गद्य-साहित्य में उपन्यासों का उदय भी उन्नीसवीं सदी में केरल वर्मा युग में ही हुआ था। प्रथम उपन्यास अप्पु नेट्टुड्डयाटि लिखित 'कुदलता' है। एक दो साल में (1889 में) चंतु मेनन ने इंदुलेखा का प्रकाशन किया। चंतु मेनन ने शारदा नामक उपन्यास का प्रथम भाग लिखा-और दूसरे भाग की रचना करने से पहले ही स्वर्गवासी हो गए। इंदुलेखा और शारदा आज भी मलयालम के सामाजिक उपन्यासों की प्रथम श्रेणी में स्थित हैं। सामाजिक उपन्यासकारों में चंतु मेनन की प्रतिभा अद्वितीय है।

मलयालम का स्वच्छंदतावाद आशान की कविताओं के रूप में पल्लवित और पुष्पित हुआ। नलिनि, लीला, चिंताविष्टयाय सीता, चंडालभिक्षुकी, प्ररोदनम, दुरवस्था, करुणा इत्यादि इनकी मुख्य रचनाएँ हैं। आशान जिस काव्य प्रपंच को अनावृत्त करने में सफल हुए वह गंभीर दार्शनिकता, जीवनदर्शन का अदम्य कौतूहल और तीव्र भावविभोरता से भास्वर है। आशान ही वह कवि थे, जिन्होंने शृंगार को सामान्य धरातल से स्वर्गिक विशुद्धता तक पहुँचाया। आध्यात्मिक प्रेम की सुंदर कल्पना ने उनकी कविता को प्रभापूरित किया है।

प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार के विजेता जी शंकर कुरुप के भावगीतों में 20वीं सदी के भारतीय जनजीवन में अनुभूत पीड़ाओं, व्यामोहों, मोहभंगों, प्रतीक्षाओं, अभिलाषाओं, इच्छा साक्षात्कारों का ऐसा चित्रण हुआ है कि वे अंतरात्मा की गहराइयों तक पहुँच जाते हैं। इसके अतिरिक्त वे गीत मानव की आध्यात्मिक एवं मानसिक भावानुभूतियों को प्रतीकात्मक या अन्य रूप में व्यक्त करते हैं। मलयालम की आत्मगीत शाखा को आज की ऊँचाइयों तक उठानेवाले कवियों की श्रेणी में जी शंकर कुरुप का स्थान सर्वोपरि है।

मलयालम के उपन्यास साहित्य, नाटक साहित्य और कहानी साहित्य का विकास भी 20वीं सदी में हुआ। चंतु मेनन और सी वी रामन पिल्ला के बाद कुछ समय तक उपन्यास शाखा में अनुकरणों की प्रधानता रही। अप्पन तंपुरान द्वारा लिखित भूतरायर नामक ऐतिहासिक उपन्यास और भास्कर

मेनन नामक जासूसी उपन्यास, टी रामन नंपीशम का केरलेश्वरन, केट्टुएम पणिक्कर के केरलसिंह और परंकिपटयालि (पुर्तगाली सैनिक) इत्यादि इस जमाने के मुख्य उपन्यास हैं।

सामाजिक उपन्यासों का दूसरा युग आधुनिक उपन्यासकारों के साथ प्रारंभ होता है। मूत्तिरिड्डोट का आफ्फ्रे मकन (चाचा की बेटी) यहाँ विशेष उल्लेखनीय है। तकषि, बशीर, केशव देव, पोन्कुन्नम वर्कि, ललितांबिका अंतर्जनम, पी सी कुट्टिकृष्णन् इत्यादि शुरू में विख्यात कहानीकार थे। इनमें से तकषि, बशीर, केशवदेव और कुट्टिकृष्णन बाद में उपन्यासकारों के रूप में भी मशहूर हुए। तकषि के चेम्मीन की ख्याति अंतर्राष्ट्रीय है (यह उपन्यास साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत है)।

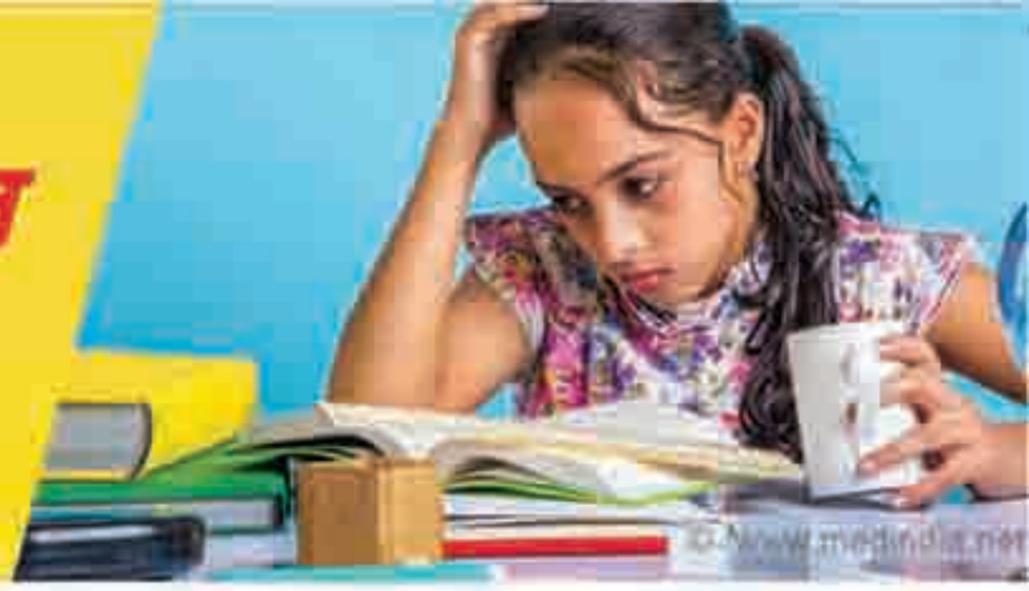
मलयालम का कहानी साहित्य भारत के किसी भी कहानी साहित्य की तुलना में ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकता है। बशीर, अंतर्जनम, वर्कि इत्यादि कहानीकार सामाजिक अनाचारों और अत्याचारों के विरुद्ध क्रांति की आवाज उठानेवाले लेखक हैं। वे अपनी जातियों में पाई जानेवाली अनैतिकताओं को प्रकाश में लाने में सफल हुए। तकषि केशवदेव इत्यादि कहानीकारों ने मनुष्य की सामाजिक और आर्थिक परतंत्रताओं तथा व्यक्ति की दुर्बलताओं और परिमितियों को अपनी कहानियों का विषय बनाया।

आज मलयालम साहित्य भारत की किसी अन्य भाषा के साहित्य से पीछे नहीं है। काव्य और कहानी के क्षेत्रों में शायद मलयालम साहित्य अन्य भाषा साहित्यों से उच्चतर स्थान पाने के लिये होड़ कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में मलयालम साहित्य की श्रीवृद्धि के लिये बहुत सी योजनाएँ बनी हैं और बहुत सी संस्थाएँ भी कायम की गई हैं। विज्ञान परिषद, इतिहास परिषद, संगीत परिषद, कला परिषद, आदि अच्छी योजना बनाकर काम कर रही हैं। इसके अलावा केरल विश्वविद्यालय तथा केरल सरकार मलयालम विश्वकोश बनाने की बहुत बड़ी योजनाएँ चला रहे हैं। केरल में बहुत से विद्वान युवक रचनाकार्य में लगे हुए हैं और मलयालम साहित्य का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है।



प्रशांत यादव
अलूवा शाखा, एर्णाकुलम

बच्चों को सर्वश्रेष्ठ बनाने का अनावश्यक दबाव



दबाव, तनाव, अवसाद.....वो भी बच्चों में..... इनकी कल्पनाओं की अपनी दुनिया होती है. साथ ही वास्तविक दुनिया को देखने का नजरिया भी अलग होता है. यह स्थिति पारिवारिक परवरिश के साथ - साथ परिवार, समाज और शिक्षा व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाता है.

बच्चों को इस स्थिति में लाने के लिए अलग - अलग स्तर पर अलग - अलग लोग/तंत्र जिम्मेदार है. परवरिश की पहली स्थिति परिवार से प्रारम्भ होती है जहां से परवरिश के दौरान ही बच्चों को प्रतिभा की दुकान बनाने की कोशिश की जाती है.

वर्तमान समय में सामान्यतः यह कोशिश की जा रही है कि बच्चा पढ़ाई, खेलकूद (इंडोर और आउटडोर), गायन, नृत्य, चित्रकला, संचार (बोलचाल) आदि सभी में पारंगत हो.

इस स्थिति की परिकल्पना परिवार में की जाती है और तरह-तरह के प्रयोग बच्चों पर किये जाते हैं ताकि सभी प्रतिभाओं का विकास उसमें हो सके.

दूसरी स्थिति होती है पढ़ाई के शुरुआत की जहां हर अभिभावक अपने बच्चों को गांव/शहर के सबसे अच्छे स्कूल में दाखिला दिलाना चाहता है. इस स्थिति में कई बार बच्चों पर एंट्रेंस एग्जाम पास करने का बहुत दबाव होता है.

दाखिले के बाद बच्चे को स्कूल द्वारा कम समय में प्रतिभाओं का भंडार बनाने से संबंधित प्रयोग की शुरुआत होती है.

प्रारंभिक स्तर पर बच्चों के मनोविज्ञान का अध्ययन कर प्राधिकृत संस्था द्वारा सिलैबस बनाया गया है लेकिन कम समय में अधिक प्रतिभा के समावेशन का लालच, उन्हें सिलैबस के अलावा एक्स्ट्रा करिकुलम की तरफ ले जाता है, जो सामान्यतः उसके तनाव और अवसाद का कारण बनता है. इस लेख में मेरा कहने का यह कतई मतलब नहीं है कि पूरी व्यवस्था या परवरिश खराब है. मैं सिर्फ इस स्थिति की तरफ इशारा करना चाहती हूँ, जिसकी वजह से सामान्यतः बच्चे तनाव या दबाव की स्थिति में आते हैं.

हर बच्चे की क्षमता अलग-अलग होती है साथ ही उसकी प्रतिभाएं भी अलग-अलग होती हैं. अगर बच्चे पर सब कुछ सीखने का दबाव न बनाकर उसमें छुपी प्रतिभा को निखारने की कोशिश की जाए तो संभवतः हम लोग इस स्थिति को रोकने में कुछ हद तक कामयाब हो सकते हैं.

बच्चों के अंदर तनाव या अवसाद की स्थिति, आने वाले खराब भविष्य की तरफ इशारा करता है जिसका समय पर समाधान आवश्यक है.

अतः बच्चों की कोमलता को ध्यान में रखकर उनके अंदर छुपी प्रतिभा का विकास करने की कोशिश परिवार, समाज, शिक्षा व्यवस्था को करनी चाहिए तथा अनावश्यक दबाव बनाने की कोशिश से बचना चाहिए.



नेहा अग्रवाल
क्षे.का., सिलीगुड़ी

बैंकिंग चिंतन - अनुचिंतन

(बैंकिंग विषयों पर सारगर्भित एवं विचारोत्तेजक आलेखों की एक मात्र हिंदी पत्रिका)

बैंकिंग एवं उससे संबद्ध विषयों पर हिंदी में मौलिक सामग्री उपलब्ध कराने के प्रयोजन से भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा पिछले 28 वर्षों से तिमाही आधार पर 'बैंकिंग चिंतन - अनुचिंतन' नामक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है. इसमें बैंकिंग, अर्थशास्त्र, वित्त, मुद्रा बाजार, पूंजी बाजार, वाणिज्य, विधि, मानव संसाधन विकास, कार्यपालक स्वास्थ्य, परा बैंकिंग, कंप्यूटर, सूचना प्रौद्योगिकी जैसे विषयों पर लेख प्रकाशित किये जाते हैं. उपर्युक्त विषयों पर व्यावहारिक एवं शोधपूर्ण मौलिक आलेख आमंत्रित हैं. प्रकाशित होने वाले आलेखों पर आकर्षक मानदेय देने की व्यवस्था भी है. अपने आलेख कृपया इस पते पर भेजें:

कार्यकारी संपादक

बैंकिंग चिंतन - अनुचिंतन

भारतीय रिजर्व बैंक

राजभाषा विभाग, केंद्रीय कार्यालय

बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, सी-9, दूसरी मंजिल,

बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400 051.



प्रथम पुरस्कार



या तायात समाह पर आयोजित आशुभाषण प्रतियोगिता के विषय 'अच्छे नागरिक के कर्तव्य' के लिये कुशल कुमार का भाषण ऐसा जोरदार था कि प्रथम पुरस्कार उसी को मिला. कार से घर लौटते वक्त उसने देखा कि पीछे से आती एक तेज रफतार कार ने एक साइकिल सवार को जोरदार टक्कर मार दी जिससे वो वहीं गिर गया. कुशल ने फौरन अपनी कार रोक दी. लगभग बेहोश व्यक्ति का चेहरा और कपड़े सब बुरी तरह खून से लथपथ थे.

कुशल सोचने लगा, मुझे इसकी मदद अवश्य करनी चाहिये. उसने जेब में हाथ डाला तो पाया कि उसमें तो सिर्फ आठ नौ सौ रुपये ही पड़े हैं. वो सोचने लगा, अस्पताल वाले हजारों रुपये जमा कराने को बोलेंगे. तब वो क्या करेगा ? मैं फोन करके घर से रुपये मँगा तो सकता हूँ पर इसकी चोटें भी गम्भीर हैं और मैं ही उस टक्कर मारने वाली कार के पीछे चल भी रहा था. वो तो चली गयी. अब पुलिस तो यही समझेगी न कि मैंने ही इसे टक्कर मारी है. कौन विश्वास करेगा मुझ पर ? फिर इतने सारे लोग तो जमा हैं. अगर मैं नहीं तो कोई ना कोई तो इसे अस्पताल ले ही जायेगा. या कम से कम इसके घरवालों को सूचना तो दे ही देगा. मैंने आज दफ्तर से छुट्टी ली है, घर के सारे काम निपटाने के लिये. मेरी सारी छुट्टी भी खराब हो जायेगी और मुसीबत अलग से खड़ी हो जायेगी और फिर घर वालों को आज मिला पुरस्कार भी तो दिखाना है. इस आपा-धापी में अगर मेरा प्रथम पुरस्कार ही गायब हो गया तो ?

इन्हीं विचारों में खोया कुशल अपनी कार में आकर बैठ गया. उसने चाबी लगाकर, कार स्टार्ट की और धीरे से घर की तरफ बढ़ गया.



उमेश मोहन धवन
क्षे.का., कानपुर



कभी-कभी लगता है कि इंसान खुद के नजरिए को जानने और परखने का प्रयास नहीं करता और उस पर भूतकाल का साया मँडराता रहता है या भविष्य का डर सताता रहता है. हर क्षण, हर पल इंसान उस पल को न जी कर भूतकाल या भविष्य की बातों पर मंथन करता है और उसका वर्तमान, उसके भूत और भविष्य के मध्य एक अधर में लटके झूले की भांति बन जाता है. आखिर क्यों होता है ऐसा ? क्या कभी कोई इस पर विचार भी करता है ? आज बालक के जन्म से लेकर उसके जीवन के अंतिम क्षण तक वह इसी उधेड़बुन में लगा रहता है कि मैंने क्या खोया और मुझे क्या पाना है. समाज ने उसे इतना चिंतनशील प्राणी बना दिया है कि यह चिंता उसे चैन से जीने नहीं देती. वर्तमान में प्रेम, दया, सेवा, करुणा, ममता इन सब शब्दों का मतलब भी खो चुका है और आज के इस भोगवादी युग में सबकुछ पैसा और पावर हो गया है. आज मानव के पास परिवार, देश, समाज के लिए तो क्या खुद के लिए भी समय नहीं है.

इंसान के देवत्व और दानत्व के मध्य समुद्र मंथन की भांति भूत और भविष्य समाविष्ट हो गया है और इस मंथन से निकलने वाले अमृत के लालच में बस वह पसीने बहाता रहता है और भले ही कितना भी सुख मिले, वही कभी तुम नहीं हो पाता और धीरे-धीरे इंसान की तृष्णा इतनी बढ़ जाती है कि भविष्य का आतंक उसे हर समय ड्रेगन की भांति, अपने सामने नजर आता है और स्वयं को सुरक्षित करने के फेर में वह चक्की के दो पाटों के मध्य पिसनेवाले घुन की भांति समय के दो पहियों के मध्य पिसता रहता है.

और यही सोच बनाते-बनाते वह स्वार्थी बनता जाता है और स्वयं को आगे पहुंचाने की होड़ में वह हर इंसान को अपना प्रतिस्पर्धी मानकर चलता है. आज के भौतिकतावादी युग में यह होता भी है परंतु क्या उस मनुष्य ने कभी अपने से पीछे मुड़कर उन लोगों की तरफ देखा है, जो उससे पिछड़े हुए हैं और जीर्ण अवस्था में अपना जीवन यापन कर रहे हैं. इस पृथ्वी पर हर तरह के लोग रहते हैं. आधुनिकता से परे आज भी जंगलों में और बिलकुल दयनीय स्थिति में जीते हैं पर ऐसे कितने लोग होंगे इस संसार में जो स्वयं सक्षम बनने के पश्चात उन लोगों के लिए कुछ करने का ठानते हैं. क्यों मनुष्य हमेशा से अपने आगे वाले को देखता है ? कम से कम एक बार तो वह पीछे मुड़कर भी देखे- क्यों यह प्रेरणा नहीं लेता उन लोगों से जो निम्न तबके के हैं, जो रात को सड़कों पर सोकर अपना जीवन जी रहे हैं, परंतु फिर भी उस बड़े आदमी से ज्यादा खुश हैं और शांतिवादी और समष्टिवादी दृष्टिकोण अपने जीवन के प्रति रखते हैं.

क्यों हम भविष्य की योजनाएँ बनाकर वर्तमान को अनदेखा कर देते हैं, इंसान क्या केवल चिंता करने के लिए बना है ? नहीं बिलकुल नहीं. उसे चिंतन करना ही है तो समाज और राष्ट्र का क्यों नहीं करता ? क्या समाज का उस पर कोई अधिकार नहीं है ? जहां से आपने ग्रहण किया है, वहाँ वापस देना भी तो इंसान का कर्तव्य है. आवश्यकता केवल इस बात की है कि इंसान स्वयं को इस भविष्य के आतंक से मुक्त कराकर जीना सीख ले ताकि वह समाज को भी अपना सहयोग प्रदान कर सके.

राजेंद्र सिंह नरुका
बीएन कॉलेज उदयपुर शाखा



मध्य प्रदेश राज्य के

पूर्वोत्तर में स्थित रीवा शहर, रीवा संभाग एवं रीवा जिले का प्रशासनिक मुख्यालय है. नगर का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम रीवा के आधार पर किया गया है. रीवा, इलाहाबाद, वाराणसी, सतना, सीधी एवं मैहर से जुड़ा हुआ है, सीधी जो कि पूर्व में रीवा राजघराने के अंतर्गत आया करता था, में विश्व का पहला सफ़ेद बाघ पकड़ा गया था. विश्व का पहला सफ़ेद बाघ सफारी, सतना में स्थित है जो कि रीवा संभाग के अंतर्गत आता है. रीवा राजघराना द्वारा हिन्दी को स्वतंत्रता से पूर्व ही राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया था.

रीवा संभाग के अंतर्गत प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों/ पर्यटन स्थलों में मैहर में स्थित माँ शारदा की पूज्य स्थली, जिसे भारत में स्थित शक्तिपीठों में से एक माना जाता है, सतना जिले में भगवान श्रीराम से संबंधित पवित्र भूमि चित्रकूट, जहाँ के कामदगिरि पर्वत पर भगवान श्रीराम ने बनवास के दौरान निवास किया था, रीवा में स्थित भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त हनुमान जी का प्रसिद्ध चिरहुला धाम एवं रीवा जिले के ही गूढ़ क्षेत्र में भैरो बाबा का प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर प्रमुख हैं.

रीवा जिला अपनी वर्तमान स्थिति में 1950 में आया, जब भारत सरकार द्वारा सभी राजघरानों का विलय कर दिया गया.

1947 से पहले रीवा तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व मौर्य साम्राज्य के अंतर्गत एवं 9वीं से 12वीं शताब्दी तक कलचूरी साम्राज्य के अंतर्गत एवं इसके उपरांत बघेल राजाओं द्वारा शासित रीवा 1950 में संविधान लागू होने तक अस्तित्व में रहा. वर्तमान के रीवा संभाग के अंतर्गत रीवा, सतना, सीधी और सिंगरौली जिले आते हैं,

जिसकी सीमाएँ उत्तरप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ को छूती हैं. इस क्षेत्र को बघेलखंड के नाम से भी जाना जाता है. रीवा सफ़ेद बाघों की जन्मस्थली के रूप में विश्व विख्यात है. पहले राजाओं में शिकार का भी शौक था, रीवा राजघराने के महाराजा मारतण्ड सिंह जू देव भी शिकार के शौकीन थे. 1951 में शिकार के दौरान उन्हें जंगलों में सफ़ेद बाघ मिला था, जिसे जीवित पकड़ा गया, तत्पश्चात उसके माध्यम से सफ़ेद बाघों की संख्या में वृद्धि की गई एवं उसे विश्व के कोने-कोने में फैलाया गया. उस सफ़ेद बाघ का नाम मोहन रखा गया था, जिसके माध्यम से कुल 34 सफ़ेद शावकों को जन्म प्राप्त हुआ.

जैव विविधता, वन सम्पदा, अथाह जलराशि और खनिज पदार्थों में यह भू-भाग प्रारंभ से ही अत्यंत समृद्ध रहा है. सतना जिला अपने चूना पत्थरों एवं सीमेंट के कारखानों के लिए प्रसिद्ध है, यहाँ पर कई सीमेंट कारखाने हैं. सिंगरौली जिला, जो कि ऊर्जा नगरी के रूप में ऊर्जाचल के नाम से भी प्रसिद्ध है, में कोयले का अकूत भंडार है और इन कोयलों से यहाँ काफी मात्रा में बिजली का उत्पादन होता है. जंगलों एवं पहाड़ों से निकलने वाली नदियों एवं इनसे निर्मित प्राकृतिक झरने इस क्षेत्र की खूबसूरती में चार चाँद लगाते हैं. इस क्षेत्र के अंतर्गत आनेवाले अमरकंटक पहाड़ियों से सोन एवं नर्मदा पहाड़ियों का उद्गम हुआ है. सोन



नदी के किनारे पाई जानेवाली भोजपुरी भाषा का प्रारम्भिक स्रोत भी आपको इन क्षेत्रों में सुनने को मिलता है. यदि आप भोजपुरी भाषा से परिचित हैं तो आपको इस क्षेत्र की बघेली भाषा को सुनने पर ऐसा प्रतीत होगा की शायद इसी भाषा से भोजपुरी भाषा का निर्माण हुआ हो. बघेली भाषा बहुत ही मीठी और अपनेपन का आभास कराती है.

रीवा आधुनिक एवं पुरातन संस्कृति का एक बेजोड़ संगम है. यहाँ पर आप आधुनिक त्योहारों, जैसे करवा चौथ के समय काफी धूम-धाम देखेंगे एवं हिंदु धर्म के अन्य पर्वों के दौरान भी आपको काफी हर्षोल्लास देखने को मिलेगा. यहाँ पर न सिर्फ ग्रामीण इलाकों में बल्कि रीवा शहर में भी महिलाएँ घूंघट में मिल जाएँगी. संपूर्ण भारत के ग्रामीण इलाकों की तरह रीवा के ग्रामीण इलाकों में भी कृषि से जुड़ी गतिविधियाँ आपको पूरे वर्ष दिखेंगी. छोटे-छोटे हाट-बाजार, मेले आपको मिलेंगे, जहाँ ग्रामीण अपने जरूरत के सामान खरीदते और बेचते हैं.

जहाँ तक अपने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की बात है तो आपको यह जानकारी देना अति आवश्यक है कि अपना बैंक रीवा संभाग के चार प्रमुख जिलों में से तीन जिलों रीवा, सीधी एवं सिंगरौली में अग्रणी बैंक है. यहाँ अन्य बैंकों की अपेक्षा अपने बैंक का विस्तार न सिर्फ शहरी बल्कि ग्रामीण इलाकों में भी काफी है. बहुत पुराने समय से इस क्षेत्र में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा है. रीवा नगर जहाँ रीवा राजघराने के समय से ही हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है, ऐसी जगह पर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयोजक होने का सौभाग्य प्राप्त है.

रीवा का अर्थतन्त्र विविधता से परिपूर्ण है. कृषि, खनिज आधारित उद्योग और पर्यटन, रीवा की अर्थव्यवस्था में विशेष महत्व रखते हैं. रीवा क्षेत्र में स्थित ऐतिहासिक स्थल, तालाब, शिल्पकला आदि घरेलू और विदेशी पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण का केंद्र हैं. साथ ही रीवा सफ़ेद बाघों के लिए भी विशेष रूप से प्रसिद्ध है. यहाँ व्हाइट टाइगर सफारी सभी के लिए उपलब्ध है. यहाँ की विकसित होती अर्थव्यवस्था में हस्तकला, कुटीर उद्योग की भी महत्वपूर्ण भूमिका है. विंध्य महोत्सव के माध्यम से यहाँ हस्तकला मेलों का आयोजन किया जाता है, जो यहाँ के क्षेत्रीय कला और शिल्प को विशेष रूप से प्रोत्साहित करता है. रीवा जिला खनिज संसाधनों से भरपूर है. यहाँ भारी मात्रा में महत्वपूर्ण खनिज पाए जाते हैं. चूने का पत्थर, बलुआ पत्थर, औद्योगिक खनिज जैसे- फास्फेट, एस्बेस्टस,



सोप स्टोन, प्रमुख रूप से पाए जानेवाले खनिज हैं. शायद यही कारण है कि सीमेंट उद्योग रीवा में बहुत फला-फूला है. मुख्य सीमेंट कंपनियाँ जैसे- जेपी ग्रुप, अल्ट्राटेक, बिरला सीमेंट और प्रिज्म सीमेंट रीवा में ही स्थित हैं. भारत जैसी विकसित होती अर्थव्यवस्था में जहाँ आधारभूत ढांचे के विकास की असीम संभावनाएं हैं, ऐसे में रीवा जैसे क्षेत्र में व्यापार के अनंत अवसर मौजूद हैं.

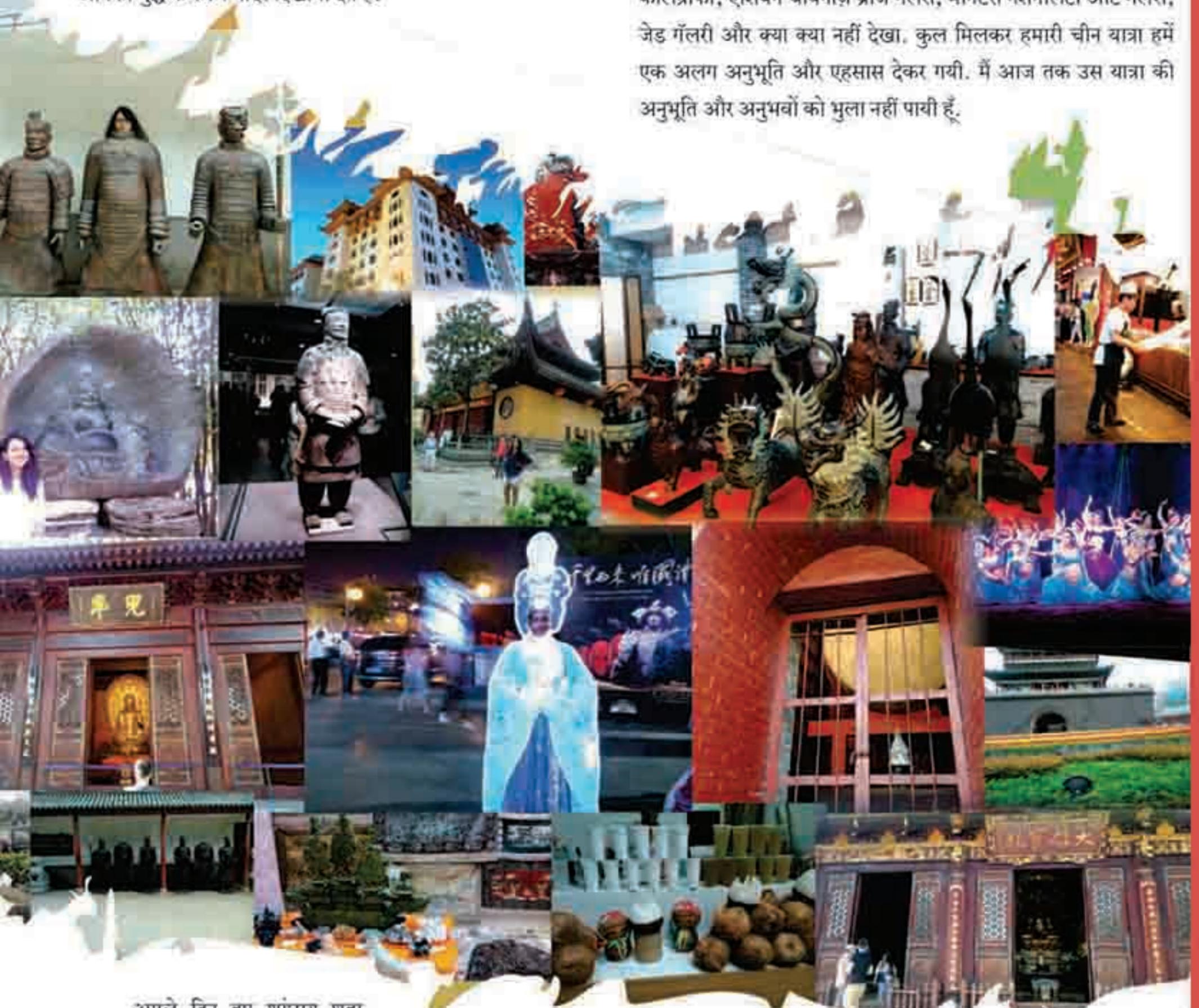


नीरज मिश्रा
क्षे.का., रीवा



क्षियांग से हमें पुरातन पगोडा दिखाने हेतु ले जाया गया. चीनी लोग भगवान बुद्ध को मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं. इसलिए यहाँ हर जगह आपको बुद्ध के स्वर्ण मंदिर दिखायी देते हैं.

पूरा शांघाय शहर दिख रहा था. हमने वहाँ क्रूज का आनंद भी लिया और बाद में म्यूजियम जाकर चायनीज़ पेंटिंग, चायनीज़ डील गैलरी, चायनीज़ केलिग्राफी, एंशियन चायनीज़ ब्रांज गैलरी, मोनेटरी नेशनेलिटी आर्ट गैलरी, जेड गैलरी और क्या क्या नहीं देखा. कुल मिलकर हमारी चीन यात्रा हमें एक अलग अनुभूति और एहसास देकर गयी. मैं आज तक उस यात्रा की अनुभूति और अनुभवों को भुला नहीं पायी हूँ.



अगले दिन हम शांघाय शहर देखने के लिए निकल पड़े. शांघाय, पुराना और नया शांघाय, इन दो हिस्सों में विभाजित है. नया शांघाय गगनचुम्बी इमारतों से भरा पड़ा है. उन इमारतों तक हमारी नजर भी पहुँच नहीं पाती थी. यहाँ की नदी के नीचे से 11 टनेल्स बनाए गये हैं और 1 टनेल बनवाने के लिए 1 बरस का समय लगा है. शांघाय में हम फिनेनशल पार्क इमारत की 100 वीं मंजिल पर गए, जहाँ से

नीलम विजय रणदिवे
पीबीओडी, कें.का., मुंबई



नृत्यकला



जीवधारियों में अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति पाई जाती है, यही जीवधारियों की विशेषता है. मनुष्य जीवधारियों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है क्योंकि मनुष्य के पास अभिव्यक्ति की सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक शैलियां हैं. मनुष्य द्वारा अभिव्यक्ति की सर्वश्रेष्ठ शैलियों में सबसे रसमय शैलियों में से एक है नृत्य. नृत्य मानवीय अभिव्यक्ति की एक शैली है जिसे विभिन्न आंगिक भंगिमाओं द्वारा व्यक्त किया जाता है.

भारतीय संस्कृति और नृत्य का रिश्ता उतना पुराना है, जितनी भारतीय संस्कृति. इतिहास पर नज़र डालें तो हमारे देश में नृत्यकला का सर्वप्रथम विस्तृत उल्लेख भरत मुनि के नाट्यशास्त्र से माना जाता है, नाट्यशास्त्र में नृत्य कला के संबंध में विस्तृत वर्णन और नियमों का उल्लेख है, लेकिन नृत्य का संक्षिप्त उल्लेख हमें वेदों में भी मिलता है. ऋग्वेद के अनेक श्लोकों में नृत्य शब्द का प्रयोग हुआ है. यजुर्वेद में भी नृत्य संबंधी बहुत से उल्लेख मिलते हैं. नृत्य को उस युग में व्यायाम के रूप में माना गया था. शरीर को अरोग्य रखने के लिये नृत्यकला का प्रयोग किया जाता था. इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समाज में नृत्यकला का प्रचार-प्रसार सर्वत्र था. नृत्यकला की प्राचीनता की साक्ष्य गुफाओं में प्राप्त आदिमानव के उकेरे चित्रों तथा हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त कांसे की मूर्ति भी है, जिसके बारे में पुरातत्ववेत्ताओं का मानना है कि वह प्रतिमा नर्तकी की है. ज़ाहिर है, प्रागैतिहासिक काल में ही भारत में नृत्य की खोज हो चुकी थी.

आज भारत में नृत्यकला का प्रसार सर्वत्र है. लगभग हर राज्य और क्षेत्र की संस्कृति को प्रदर्शित करते हुये नृत्य की लोक या शास्त्रीय शैलियां हमारे देश में विद्यमान हैं. कुल मिलाकर भारत में नृत्यकला उतनी ही विविध है, जितनी भारतीय संस्कृति. यदि मोटे तौर पर इन तमाम नृत्यों का वर्गीकरण किया जाए तो भारत में नृत्य को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है-

1. शास्त्रीय नृत्य
2. लोक नृत्य
3. आधुनिक या समसामयिक नृत्य

• शास्त्रीय नृत्य

शास्त्रीय नृत्य शैलियां सर्वाधिक संरक्षित व 20वीं शताब्दी में प्रचलित प्राचीनतम शैलियों में से हैं. ये शैलियां नियमबद्ध हैं और कुशल कलाकारों द्वारा ही प्रदर्शित की जाती हैं. कलाकार शरीर के प्रत्येक अंग, जिनमें से आंखें व हाथ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं, के लिए पारम्परिक तौर पर निर्धारित शैलीकृत भंगिमाओं के माध्यम से विभिन्न अभिव्यक्तियां करते हैं. शास्त्रीय नृत्यों में सिर के लिए 13, भौंहों के लिए 7, नाक के लिए 6, गालों के लिए 6, ठोड़ी के लिए 7, गर्दन के लिए 9, वक्ष के लिए 5 व आँखों के लिए 36, पैरों व निम्न अंगों के लिए 32, जिनमें से 16 भूमि पर व 16 हवा

के लिए निर्धारित हैं. पांव की भी विभिन्न गतियां हैं. जैसे-इठलाना, ठुमकना, तिरछे चलना, ताल इत्यादि.

• लोक नृत्य

भारत में नृत्यों की इस शैली का सर्वाधिक विस्तार है, क्योंकि ये नृत्य बिना किसी नियम या बंधन के मानवीय हर्ष व उल्लास की सहज अभिव्यक्ति होते हैं. ये लोगों में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय हैं और मुख्यतः उन्हीं के द्वारा प्रदर्शित भी किये जाते हैं. ये नृत्य कुशल कलाकारों और सामान्य व्यक्ति सभी द्वारा प्रदर्शित किये जाते हैं. इन नृत्यों के प्रदर्शन के नियम और तय मानक नहीं होते.

• आधुनिक या समसामयिक नृत्य

आधुनिक भारतीय नृत्य 20वीं शताब्दी की देन हैं और भारत की नई विषय-वस्तुओं व आवेगों को व्यक्त करते हैं. इनमें से ज्यादातर भारतीय शास्त्रीय नृत्य, भारतीय लोकनृत्य का मिश्रण हैं. कई शैलियां पाश्चात्य शास्त्रीय एवं भारतीय नृत्यों के मिश्रण का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं.

संगीत नाटक अकादमी द्वारा भारत की कुल 8 नृत्य शैलियों को शास्त्रीय नृत्य की मान्यता दी गई है. इस आलेख में हम आपको भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराएंगे.

1. भरतनाट्यम्

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से जन्में भरतनाट्यम् में लास्य की प्रधानता है और इसका उदय दक्षिणी भारत के तमिलनाडु राज्य में हुआ है. यह नृत्य 2000 साल से भी पुराना माना जाता है. इस नृत्य शैली की खास विशेषताएं, नायक-नायिका प्रसंग पर आधारित पदम अथवा कविताएं हैं. भरतनाट्यम् में नृत्य के तीन मूलभूत तत्वों को कुशलतापूर्वक शामिल किया गया है, ये हैं भाव अथवा मनःस्थिति, राग अथवा संगीत और स्वरमार्धुय और ताल अथवा काल समंजन. भरतनाट्यम् की तकनीक में, हाथ, पैर, मुख, व शरीर संचालन के समन्वयन के 64 सिद्धांत हैं, जिनका निष्पादन नृत्य पाठ्यक्रम के साथ किया जाता है. भरतनाट्यम् में जीवन के तीन मूल तत्व - दर्शन शास्त्र, धर्म व विज्ञान हैं. यह एक गतिशील व सांसारिक नृत्य शैली है. भरतनाट्यम् के कुछ प्रमुख कलाकार- लीला सैमसन, मृणालिनी साराभाई, बैजयंतीमाला, मालविका सरकार, यामिनी कृष्णमूर्ती, सोनल मान सिंह, रुक्मिणी देवी अरुण्डेल आदि हैं.

2. कथकली

कथकली का अर्थ है एक कथा का नाटक या एक नृत्य नाटिका. यह केरल में जन्मी तांडव भाव की मूकाभिनय नृत्य-नाटिका है. इस नृत्य के अभिनेता रामायण और महाभारत के महाग्रंथों और पुराणों से लिए गए चरित्रों को अभिनय करते हैं. यह अत्यंत रंग-बिरंगा नृत्य है, इसके नर्तक उभरे हुए परिधानों, फूलदार दुपट्टों, आभूषणों और मुकुट से सजे होते हैं. मानव, देवता, दैत्य आदि को शानदार वेशभूषा और परिधानों के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है. इस नृत्य का सबसे अधिक प्रभावशाली भाग

यह है कि इसके चरित्र कभी बोलते नहीं हैं, केवल उनके हाथों के हाव-भाव की उच्च विकसित भाषा तथा चेहरे की अभिव्यक्ति होती है जो इस नाटिका के पाठ्य को दर्शकों के सामने प्रदर्शित करती है. उनके चेहरे के छोटे और बड़े हाव भाव, भवों की गति, नेत्रों का संचलन, गालों, नाक और टोड़ी की अभिव्यक्ति पर बारीकी से काम किया जाता है. इसमें अधिकांशतः पुरुष ही महिलाओं की भूमिका निभाते हैं, हालांकि अब कुछ समय से महिलाओं को कथकली में शामिल किया जाने लगा है.

3. कथक

कथक 100 से अधिक घुंघरुओं को पैरों में बांध कर किया जाता है. इस नृत्य में मुख्यतः हिन्दू धार्मिक कथाओं, पर्शियन और उर्दू कविता से ली गई विषयवस्तुओं का नाटकीय प्रस्तुतीकरण किया जाता है. कथक का जन्म उत्तर में हुआ किन्तु पर्शियन और मुस्लिम प्रभाव से यह मंदिर की रीति से दरबारी मनोरंजन तक पहुंच गया. उत्तर भारत में मुगलों के आने के बाद इस नृत्य को शाही दरबार में ले जाया गया और इसका विकास एक परिष्कृत कला के तौर पर हुआ. इस नृत्य में अब धर्म की अपेक्षा सौंदर्य बोध पर अधिक बल दिया गया. इस नृत्य परम्परा के दो प्रमुख घराने हैं, इन दोनों को उत्तर भारत के शहरों के नाम पर नाम दिया गया है और इनमें से दोनों ही क्षेत्रीय राजाओं के संरक्षण में विस्तारित हुआ - लखनऊ घराना और जयपुर घराना. कथक के सबसे प्रमुख कलाकार बिरजू महाराज हैं.

4. ओडिसी

यह नृत्य ओडिशा राज्य से संबंधित है और सभी शास्त्रीय नृत्यों में बिल्कुल अलग शैली है. इस नृत्य का व्याकरण मूलतः त्रिभंग से विकसित हुआ है. ओडिसी को पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर सबसे पुराने जीवित नृत्य रूपों में से एक माना जाता है. इस नृत्य का जन्म मंदिर में नृत्य करने वाली देवदासियों के नृत्य से माना जाता है. इस नृत्य का उल्लेख ब्रह्मेश्वर मंदिर के शिला लेखों और कोणार्क के सूर्य मंदिर के केन्द्रीय कक्ष में भी मिलता है.

इस नृत्य के प्रदर्शन के दौरान त्रिभंग पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, जिसका अर्थ है शरीर को तीन भागों में बांटना, सिर, शरीर और पैर. मुद्राएं और अभिव्यक्तियां भरतनाट्यम के समान होती हैं. ओडिसी नृत्य में विष्णु के आठवें अवतार कृष्ण के बारे में कथाएं बताई जाती हैं. यह एक कोमल, कवितामय शास्त्रीय नृत्य है जिसमें उड़ीसा के परिवेश तथा यहां के सर्वाधिक लोकप्रिय देवता, भगवान जगन्नाथ की महिमा का गान किया जाता है.

5. मणिपुरी

मणिपुरी नृत्य मणिपुर राज्य की संस्कृति को दर्शाता है. मणिपुरी नृत्य भारत के अन्य नृत्य रूपों से भिन्न है, इसमें शरीर धीमी गति से चलता है, सांकेतिक भव्यता और मनमोहक गति से भुजाएं अंगुलियों तक प्रवाहित होती हैं. यह नृत्य रूप 18वीं शताब्दी में वैष्णव संप्रदाय के साथ विकसित हुआ जो इसके शुरुआती रीति रिवाज और जादुई नृत्य रूपों में से बना है. विष्णु पुराण, भागवत पुराण तथा गीतगोविन्द की रचनाओं से आई विषयवस्तुएं इसमें प्रमुख रूप से उपयोग की जाती हैं.

मणिपुर की मेतई जनजाति की दंतकथाओं के अनुसार जब ईश्वर ने पृथ्वी का सृजन किया तब यह एक पिंड के समान थी. सात लैनूराह ने इस नव निर्मित गोलार्ध पर नृत्य किया, अपने पैरों से इसे मजबूत और चिकना बनाने के लिए इसे कोमलता से दबाया. यह मेतई जागोई का उद्भव है. आज के समय तक जब मणिपुरी लोग नृत्य करते हैं वे कदम तेजी से नहीं रखते बल्कि अपने पैरों को भूमि पर कोमलता और मृदुता के

साथ रखते हैं. मूल भ्रांति और कहानियां अभी भी मेतई के पुजारियों या माइबिस द्वारा माइबी के रूप में सुनाई जाती हैं जो मणिपुरी की जड़ हैं.

6. मोहिनीअट्टम

मोहिनीअट्टम हिन्दू पौराणिक कथाओं में वर्णित शिव को मोहने वाली मोहिनी की किंवदंती पर आधारित है. यह भरतनाट्यम व कथकली के तथ्यों पर आधारित है और इसमें कर्नाटक संगीत के साथ मलयालम गीतों का उपयोग किया जाता है. केरल की महिलाओं द्वारा किया जाने वाला यह नृत्य कथकली से अधिक पुराना माना जाता है. साहित्यिक रूप से नृत्य के बीच मुख्य माना जाने वाला जादुई मोहिनीअट्टम प्रमुखतः केरल के मंदिरों में किया जाता था. यह देवदासी नृत्य विरासत का उत्तराधिकारी भी माना जाता है जैसे कि भरतनाट्यम, कुचीपुडी और ओडिसी. 'मोहिनी' शब्द का अर्थ है एक ऐसी महिला जो देखने वालों का मन मोह ले. माना जाता है कि यह नृत्य उस पौराणिक कहानी पर आधारित है जिसमें हिंदुओं के आराध्य भगवान विष्णु ने क्षीर सागर के मंथन के दौरान असुरों को आकर्षित करने के लिए मोहिनी का रूप धारण किया था.

7. कुचिपुडी

स्वरूप और प्रकृति में, कुचिपुडी की कुछ विशेषताएँ भरतनाट्यम से मिलती-जुलती हैं. कुचीपुडी आंध्र प्रदेश की एक स्वदेशी नृत्य शैली है जिसने इसी नाम के गांव में जन्म लिया और पनपी. इसका मूल नाम कुचेलापुरी या कुचेलापुरम था, जो कृष्णा जिले का एक कस्बा है. इस नृत्य का जन्म भी अधिकांश भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के समान धर्मों के साथ जुड़ा हुआ है. एक लम्बे समय से यह कला केवल मंदिरों और वह भी आंध्र प्रदेश के कुछ मंदिरों में वार्षिक उत्सव के अवसर पर प्रदर्शित की जाती थी. परम्परा के अनुसार कुचीपुडी नृत्य मूलतः केवल पुरुषों द्वारा किया जाता था और वह भी केवल ब्राह्मण समुदाय के पुरुषों द्वारा, ये ब्राह्मण परिवार कुचीपुडी के भागवतथालू कहलाते थे.

8. सत्रिया

यह शास्त्रीय नृत्य उत्तर पूर्वी राज्य असम से संबंधित है. 15वीं सदी में असम के वैष्णव संत और सुधारक श्रीमंत शंकरदेव द्वारा यह नृत्य धर्म प्रचार के एक साधन के रूप में लोगों के बीच प्रचारित किया गया जो बाद में एक विशिष्ट नृत्य शैली के रूप में विकसित हो गया. इस नृत्य का विषय मुख्यतः पौराणिक कहानियां होती हैं जिन्हें मनोरंजक तरीके से महिला और पुरुष कलाकारों द्वारा अभिनीत किया जाता है. हाल के दिनों में इस नृत्य का विषय पौराणिक कहानियों के अलावा अन्य विषय भी होने लगे हैं. सत्रिया नृत्य पर असमी लोक नृत्यों जैसे-बिहू, बोडो इत्यादि का बड़ा प्रभाव है.

ये 8 नृत्य उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक भारत की विभिन्नता, लोकसंस्कृति और धर्मपरायणता की झलक को समेटे हुये हैं. जिन्हें अपनी असीम मेहनत और प्रतिभा से सैकड़ों कलाकारों और संस्थाओं ने मिलकर नए आयाम दिये हैं.



आशीष कुमार गुप्ता
शे.का., मुंबई (पश्चिम)

हिमनगरी मुंस्यारी

हिमालय की चोटियों से मेरा पुराना रिश्ता सा है. यह वही हिमालय है जो बचपन में प्रतिदिन सूर्य दिखने से पहले ही प्रकाशित हो उठता था. अपनी लालिमा से सबको भावविभोर कर देता था. मैं अल्मोड़ा से हूँ. अल्मोड़ा उत्तराखण्ड राज्य में है और हिमालय की चोटियाँ यहाँ से बहुत सुंदर दिखती हैं. बचपन में इन चोटियों के दृश्यों की इतनी अहमियत नहीं थी. इनकी अहमियत का तब पता चला जब नौकरी सुदूर महाराष्ट्र राज्य की मुंबई नगरी में ले आई. तब से हर साल मानो यह हिमालय मुझे पुकारता सा है. इसलिए हर साल मैं किसी न किसी हिमालयी क्षेत्र का भ्रमण करने हेतु बाध्य होता हूँ. पिछले साल भी हिमालय देखने की इच्छा बलवती हो गई. बार-बार इंटरनेट पर खोज करने के बाद एक अनूठी जगह नज़र आई मुंस्यारी.

मुंस्यारी उत्तराखण्ड राज्य के पिथौरागढ़ जिले में स्थित एक पर्वतीय स्थल है. यह समुद्रतल से 2200मी. (7200 फिट) की ऊँचाई पर स्थित है. यहाँ से कई पर्वतारोही अपने ट्रेकिंग की शुरुआत करते हैं. चारो ओर बर्फ से भरी चोटियों से घिरा यह छोटा सा कस्बा पर्यटकों के मन को भावविभोर कर देता है. इस स्थान से आप हिमालय की चोटियों के खूबसूरत नज़ारों को निकट से अनुभव कर सकते हैं. यहाँ का मुख्य आकर्षण 'पंचाचूली' नामक पाँच चोटियाँ हैं. ये चोटियाँ पाँच पांडवों के समान साथ खड़ी हैं और मुंस्यारी के हर कोने से दिखती हैं. यहाँ से राजरंभा, नेपाली हिमालय की कुछ चोटियों के भी दर्शन होते हैं. यहाँ से पर्वतारोही मिलम, रालभ, नामिक ग्लेशियर की यात्रा आरंभ करते हैं. मुंस्यारी दिल्ली से 560 कि.मी. की दूरी पर है. इसलिए यात्रा को कई भागों में बाँट कर ही मुंस्यारी जाना ठीक होगा. आप अल्मोड़ा तथा चौकोड़ी जैसे पर्वतीय स्थलों पर ठहर कर मुंस्यारी की यात्रा कर सकते हैं.

हम 26 जनवरी 2016 को अल्मोड़ा के लिए रवाना हुये. अल्मोड़ा से मुंस्यारी 8 घंटे की यात्रा है. यात्रा में चितई, थल, चौकोड़ी जैसे रमणीय स्थल पड़ते हैं. यात्रा रामगंगा नदी के अनूठे दृश्य दिखाती है. पूरी यात्रा में ऊँचे पहाड़, नदियाँ, सीढ़ीनुमा खेत आदि विभिन्न दृश्य दिखते हैं. पूरा दिन यात्रा में निकल गया और मन में एक ही प्रश्न था कि कब आएगा ये मुंस्यारी? मुंस्यारी पहुँचने की जानकारी दूर से ही मिली, जब नज़रें ऊँचाई से गिरते बिथी फ़ॉल्स पर पड़ी. बिथी फ़ॉल्स बहुत ही ऊँची चट्टानों से गिरने वाला एक झरना है. यह स्थान पर्यटकों से भरा रहता है. वर्षा ऋतु में इसकी शोभा देखते ही बनती है. यहाँ कुमाऊँ मण्डल विकास निगम का पर्यटक गृह भी है. झरने के ऊपर के पर्वत बादलों से ढके थे. मुझे यह सोच कर निराशा सी हुयी कि कहीं ये बादल पंचाचूली को ढंक कर न रख दें. कई बार ऐसे स्थानों पर बादल चोटियों को ढंक कर पर्यटकों का मज़ा किरकिरा कर देते हैं. पर हमारी किस्मत में कुछ और ही था. हमें ईश्वर एक आश्चर्य की अनुभूति कराने वाला था. इन पर्वतीय मार्गों से जैसे-जैसे हम मुंस्यारी की तरफ बढ़े, हमें ज्ञात हुआ कि ये बादल बर्फबारी कर के छंट रहे थे. अंधेरे में चमकते बर्फ के वे कण एक असीम सुख की अनुभूति कराने लगे. आगे बर्फ बढ़ती गई. ड्राइवर एक स्थान पर गाड़ी रोक कर बोला, 'कालामुनी पॉइंट' आ गया, दर्शन कर लीजिए. पर हम दर्शन कैसे करते? इस पॉइंट पर काली माता का मंदिर बर्फ से भर गया था. अतः हम सेल्फी लेकर स्वयं को सांत्वना देने लगे.

आगे जो हुआ उसे शब्दों में पिरोना कठिन है. मुंस्यारी अपनी सीमा दो देशों से बांटता है - एक तरफ तिब्बत तो दूसरी तरफ नेपाल! नेपाल के पर्वत जो ताजे बर्फ से ढंके थे, दिखने लगे. हमारी धड़कनें मानों उस सुंदरता को देखकर थम सी गई. बादलों के बीच हमें आखिरकार वे पाँच पर्वत छाया रूप में दिखने लगे. जैसे पौराणिक कथाओं में भगवान प्रकट होते हैं, वैसे ही पाँच पर्वत (पंचाचूली) बादलों के बीच से प्रकट हुए. मैंने इस पल को कैमरे में कैद किया. हम अपने होटल 'मिलम मुंस्यारी' पहुँच गए. मैंने मैनेजर को जल्दी चाबी देने को कहा ताकि कमरे की बालकनी से यह दृश्य अपनी आँखों में समेट लूँ. जी भर के दर्शन देने के बाद एक बड़े से बादल ने इन चोटियों को ढंक दिया, मानो कह रहा हो, 'अब बहुत हुआ, अब कल फिर देखना!'

रात में तापमान शून्य से नीचे चला गया. पूरी रात सुबह का इंतज़ार किया. सुबह 'पंचाचूली' पर सूर्य की पहली किरण बहुत ही सुंदर लग रही थी. एक कोने से पर्वतों के ऊपर से उदय होते सूर्य की शोभा दर्शनीय थी. होटल से हंसारिंग, राजरंभा और पंचाचूली की पाँच चोटियाँ तो देख लीं पर

आज कुछ तूफानी करना था. 'खलिया टॉप' यहाँ का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जिसकी ऊँचाई समुद्रतल से 3500 मी. है. हमें खलिया टॉप तक 8-8 कि.मी. की ट्रेकिंग करनी थी. होटलवालों ने कहा गाइड के बिना न जाएँ क्योंकि पूरा ट्रेक बर्फ से भरा है. लेकिन हमने ठान ली थी कि जाना है, इसलिए गाइड बुला लिया. भोला भाला स्थानीय गाइड हमारी सेवा में उपस्थित हो गया.

ट्रेक की शुरुआत में ही मैं बर्फ देखकर डर गया. इस पर 16 कि.मी. कैसे चला जाएगा? लेकिन अल्मोड़ा में बचपन बिताने का कुछ तो फायदा हुआ. मैं और मेरा मराठी मित्र हौसले बुलंद रख कर चलते चले गए. आधी चढ़ाई पूरी होने पर एक बर्फ से ढंका रिसॉर्ट नज़र आया. उसके आँगन में बैठने की व्यवस्था थी. वहाँ से सारी चोटियों का भव्य दर्शन आँखों में समेटे कुछ लोग वापस चले गए. खूब मोटी बर्फ की परत देख हम 'खलिया टॉप' तक चढ़ने की हिम्मत न कर पाए. हमने एक दंपत्ति को ऊपर चढ़ते देखा. हिम से घिरे क्षेत्रों में कई बार कस्तूरी मृग के पदचिन्हों का अनुसरण, रास्ता ढूँढने में मदद करता है. अतः वह दंपत्ति मृग के पदचिन्हों का अनुसरण करके टॉप की तरफ जा रहे थे. हम भी उनके पीछे-पीछे चलने लगे. वार्तालाप करने पर पता चला कि वह दंपत्ति कई बार यहाँ आ चुके थे और उन्होंने बताया कि अगर किस्मत ने साथ दिया तो नन्दा देवी पर्वत के विहंगम दृश्य टॉप से दिखेंगे. 'खलिया टॉप' से नेपाल की चोटियों का दृश्य अद्भुत था. 'छिपलाकेदार' नामक पर्वत की शोभा देखते ही बनती थी. हमारी किस्मत ने भी हमारा साथ दिया. पहाड़ों में देवी की तरह पूजी जानेवाली नन्दा देवी चोटी ने हमें सुंदर दर्शन देकर हमारी पदयात्रा सफल कर दी. हम इस अद्भुत दृश्य से इतने प्रसन्न हुये कि पदयात्रा की सारी थकान भूल गए.

वापस नीचे उतर कर होटल आ कर इतनी थकान महसूस हुई कि कब नींद आई पता न चला. लेकिन अभी भी एक सुंदर दृश्य देखना बाकी था. जैसा कि मैंने आपको बताया नन्दा देवी की चोटी पहाड़ों की देवी मानी जाती है. यहाँ भी नन्दा देवी का एक सुंदर मंदिर है. यहाँ सूर्यास्त पर पंचाचूली की छटा देखने लायक है. ऐसा लगता है आप दौड़ते हुये पर्वतों को छू कर वापस आ जाएंगे. यहाँ से ये पर्वत बहुत ही समीप दिखते हैं. सूर्यास्त के समय यह चोटियाँ लाल रंग की हो जाती हैं. इस मंदिर में पूजा करके और दृश्य देखकर मानों दिन भर की थकान दूर हो गई हो.

मुंस्यारी पहाड़ी मसालों व दालों के लिए प्रसिद्ध है. यहाँ का राजमा बहुत जल्दी गलनेवाला व स्वादिष्ट है. कई स्थानों पर राजमा आसानी से मिल जाता है. यहाँ जाएँ तो राजमा खाना न भूलें. पास के गावों में पशमीना शाल भी बनती हैं. आप इन ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर इन शालों को बनते देख सकते हैं.

दूसरा दिन भी इन चोटियों की खूबसूरती निहारने में गया. बालकनी में बैठे गरम चाय का लुत्फ, खिली धूप और बर्फ से लदी चोटियों का दृश्य, और क्या चाहिए?

मुंस्यारी में कई तालाब हैं, उनमें से एक है थामरी कुण्ड. शीत ऋतु में यह तालाब आधा जम जाता है और इसका स्वरूप देखते ही बनता है. मेरी इच्छा थी कि यह तालाब हमें जमा हुआ देखने को मिले. यकीन मानिए, हमें वैसा ही देखने को मिला. इस कुण्ड में जाने के लिए भी 3 कि.मी. की पदयात्रा करनी पड़ती है. मार्ग जंगल के बीच से जाता है और चढ़ान व उतार-चढ़ाव भी हैं, पर अंतिम छोर पर दिखनेवाला थामरी कुण्ड का दृश्य रमणीय है. यह स्थान स्थानीय लोगों के लिए पूजनीय है. यह स्थान स्वर्ग की अनुभूति करा देता है तो देवताओं को भी प्रिय होगा ही.

मुंस्यारी की पूरी यात्रा में पंचाचूली हमारे साथ थी. लौटते समय काला मुनी पर्वत तक पंचाचूली के दृश्यों ने हमारा साथ न छोड़ा पर विदाई तो होनी ही थी. संजोग से उस समय गाड़ीवाले ने जो गीत बजाया वह था : 'अच्छा चलता हूँ दुआओं में याद रखना, मेरे जिक्र का जुबा पर स्वाद रखना'.

भारी मन से हमने मुंस्यारी से विदा ली और पुनः मिलन की आशा की. आज भी वे दृश्य मेरे मन में उन यादों को जीवंत कर देते हैं. मैं हर किसी को एक बार मुंस्यारी यात्रा की सलाह देता हूँ. कृपया जाएँ और स्वर्ग का अनुभव करें.



कुलदीप धानाकोटी
आर.ए.बी.डी., के.का. मुंबई



हमारे जौनपुर आरसेटी (ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान) की ओर से लगातार किए जा रहे प्रयासों की सफलता की कुछ कहानियां

नाम : गीतांजली वर्मा
प्रशिक्षण : ब्यूटी पार्लर
अवधि : 25/2/2015 से 31/3/2015 मासिक आय 7000 रु.
पहले घर पे आर्थिक समस्याएं बहुत थी. पति भी चिढ़चिढ़े हो गए थे. तभी मुझे आरसेटी का पता चला मैंने वहां से ब्यूटी पार्लर का कोर्स किया.
सीखने के बाद मैंने अपना ब्यूटी पार्लर खोला. आज मैं अपने घर में पैसे से मदद करने लायक हो गई हूं. मैं आरसेटी की शुक्रगूजार हूँ कि आज मैं अपने पैर पर खड़ी हूँ.
धन्यवाद.



नाम : त्रिपुरारी पाण्डेय
प्रशिक्षण : घरेलू विद्युत उपकरणों की मरम्मत
अवधि : 18/5/2015 से 22/6/2015 मासिक आय 8000 रु.
मैं पढ़ाई खत्म कर कोई व्यवसाय करना चाहता था. पर कोई ज्ञान न होने के कारण खाली था. घर के हालात सही नहीं थे. मैं पैसे खर्च कर कुछ सिख नहीं सकता था. मेरे घर के पास आरसेटी खुला और कुछ दिनों बाद पता चला कि मेरी सारी परेशानी की जो वजह है, अब दूर हो जाएगी. मैंने वहां से घरेलू विद्युत उपकरणों की मरम्मत का प्रशिक्षण प्राप्त किया और थोड़ी पूंजी से अपनी दूकान डाली. मैं प्रति दिन 500 रु आराम से कमा लेता हूं.
आरसेटी ने मुझे आज जीने का उद्देश्य दिया. तहे दिल से धन्यवाद.

नाम : विमला देवी
प्रशिक्षण : ड्रेस डिजाइनिंग
अवधि : 3/8/2015 से 27/8/2015 मासिक आय 5000 रु.
थोड़ी बहुत सिलाई की जानकारी थी और ज्यादा सीखकर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी. गांव में कैप के जरिए आरसेटी का पता चला. मैंने जल्द वहां सम्पर्क किया और ड्रेस डिजाइनिंग का प्रशिक्षण प्राप्त कर अपना रोजगार चला रही हूं. प्रति दिन 300 रु. कमा लेती हूं.
आरसेटी से मुझे बहुत ज्ञान मिला. मैं आरसेटी का दिल से आभार व्यक्त करती हूं.



नाम : दिलीप कुमार गौतम
प्रशिक्षण : मोटर ड्राइविंग
अवधि : 10/3/2015 से 26/6/2015 मासिक आय रु. 15000-20000
घर वालों के दबाव में मैंने शादी तो कर ली पर कोई अच्छा काम नहीं कर पा रहा था. तभी मुझे आरसेटी का पता चला और मैंने वहां सम्पर्क किया और ड्राइविंग कोर्स किया और आज मैं अच्छी आमदनी कर रहा हूं. वहां हम सबों को एक सफल उद्यमी बनने के सारे तरीके अच्छे से समझाये गये. मैं आरसेटी का धन्यवाद करता हूं. मैं प्रतिमाह 15 से 20 हजार आराम से प्राप्त कर रहा हूं. और अपने तरह के लोगों को आरसेटी के बारे में जरूर बताता हूं.



नाम : सुनील कुमार सिंह
 प्रशिक्षण : घरेलू विद्युत उपकरणों की मरम्मत
 अवधि : 18/9/2015 से 6/11/2015 मासिक आय 8000 रु.
 नौकरी नहीं मिल रही थी. मैं काफी परेशान था. कुछ सूझ नहीं रहा था. तभी मेरे फिनो मित्र ने आरसेटी के बारे में बताया. मैं वहां गया और बिजली मरम्मत में नाम लिखा कर आ गया. 30 दिनों का प्रशिक्षण हुआ, बहुत अच्छे तरीके से सिखाया गया. जल्द ही मैंने अपनी दुकान खोली. आज मैं बहुत खुश हूँ. प्रतिदिन 500 से ज्यादा कमा लेता हूँ और अपने रोजगार को भी बढ़ा रहा हूँ. आरसेटी हम जैसे लोगों के लिए अंधेरे में रोशनी की तरह है जो सही मार्गदर्शन देकर उद्यमी बनाती है. धन्यवाद.



नाम : अंकित कुमार मौर्य
 प्रशिक्षण : मोबाइल रिपेयरिंग
 अवधि : 30/8/2016 से 8/8/2016 मासिक आय 15000 रु. मैं आरसेटी का तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ जिसकी वजह से मैं अपने पैर पर खड़ा हूँ. वहां से सिखने के बाद बैंक से 50,000 का लोन प्राप्त कर मैं अपनी दुकान अच्छे से चला रहा हूँ और प्रति दिन 500 से ज्यादा कमा लेता हूँ.



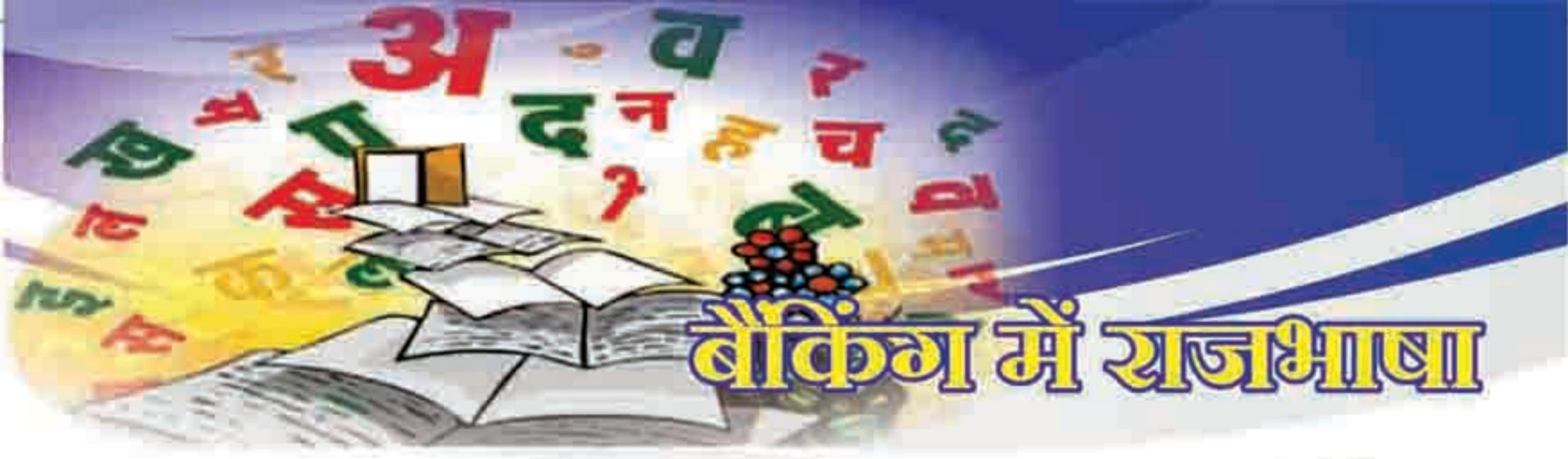
नाम : सुशिला देवी
 प्रशिक्षण : फूलों की खेती
 अवधि : 18/10/2015 से 23/10/2015 मासिक आय 6000 रु.
 गांव में फूलों की खेती का प्रशिक्षण चला. मैंने वहां से सारी जानकारी ली. और खेती के नए तरीके भी सीखे. बैंक द्वारा 25,000 हजार का लोन लिया और खेती को और आगे बढ़ाया. बैंक और आरसेटी का धन्यवाद. मैं अपना और परिवार का अच्छे से पालन कर पा रही हूँ.



नाम : रमाकान्त मिश्रा
 प्रशिक्षण : मोबाइल रिपेयरिंग
 अवधि : 30/8/2016 से 8/8/2016 मासिक आय रु. 8000
 मैं बाहर काम करता था. घर पर मां और पत्नी अकेले रहती थी. हमेशा चिन्ता बनी रहती थी. एक बार छुट्टी में मैं घर आया, तब पता चला कि गांव में ही आरसेटी खुला है. मैंने वहां से शुरू हो रहे, प्रशिक्षण में नाम लिखवाया और 30 दिनों का मोबाइल रिपेयरिंग का कोर्स कर तुरन्त ही अपनी दुकान शुरू की. आज मैं बहुत खुश हूँ अपने परिवार के साथ. ये सम्भव हुआ आरसेटी की वजह से. मैं तहे दिल से आरसेटी का धन्यवाद करता हूँ.



नाम : रेखा सिंह
 प्रशिक्षण : General EDP (PMEGP)
 अवधि : 26/11/2015 से 8/12/2015 मासिक आय रु. 20000
 प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अंतर्गत ऋण मंजूर होने के बाद प्रशिक्षण के लिए आरसेटी गईं. वहां जो जानकारी मिली उससे व्यवसाय अच्छा चल निकला. वहां हमें हर हालात से लड़ने का तरीका समझाया गया और लोन को सही तरीके से उद्यम में कैसे उपयोग करें वह समझाया गया. मैं आरसेटी का शुक्रिया करती हूँ कि वहां से मुझे सही मार्गदर्शन मिला.



बैंकिंग में राजभाषा

भाषा किसी भी समाज की स्वनिर्मित एवं कुछ सीमा तक स्व-अर्जित रचना है, जिसके भीतर उस समाज विशेष का सम्पूर्ण इतिहास अपने विविध चरणों में अभिव्यक्ति पाता है। भाषा एक व्यवस्था है, एक माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों को दूसरों तक संप्रेषित करता है। इस प्रकार भाषा ही एक सभ्य समाज में संपर्क प्रक्रिया का मूलभूत आधार है। यही भाषा सामाजिक व्यवहार के विविध क्षेत्रों के अनुरूप अपनी बुनावट में भी कुछ परिवर्तनों को अपनाती चलती है।

भाषा जिस समाज अथवा क्षेत्र में प्रयुक्त होती है, वहां की जनता का उस भाषा से एक अंतरंग संबंध भी होता है। जनता उस भाषा को अपनी सामूहिक अस्मिता के प्रतीक के रूप में भी देखती है। किसी राष्ट्र के संबंध में यही सामूहिक भावना राष्ट्रीय अस्मिता कहलाती है। ऐसे में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत जैसे बहुभाषिक देश में जहां अनेक राज्यों में अपनी-अपनी स्थानीय बोलियां-भाषाएं प्रचलित हैं, वहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक था कि देश के आंतरिक कामकाज की भाषा क्या हो? स्वराज हमें केवल अंग्रेजी हुकूमत से नहीं, बल्कि हर उस विदेशी व्यक्ति या वस्तु से चाहिए था, जो हमारे ऊपर थोपी गयी थी, यह बताते हुए कि हम (स्वदेशी) हीन और वह (विदेशी) हमसे श्रेष्ठ है।

अतः देश में सभी सरकारी कार्यालयों, संस्थाओं, संगठनों आदि में कामकाज की भाषा का निर्धारण करने के लिए संविधान सभा की बैठक बुलाई गयी, और 14 सितंबर 1949 को भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी को एकमत से स्वीकार किया गया। राजभाषा के रूप में हिन्दी के चुनाव के पीछे यह तर्क सर्वमान्य हुआ कि हिन्दी ही वह भाषा है, जिसका प्रयोग देश की अधिकांश जनता आपसी व्यवहार में सहजता से करती है। देश का सर्वाधिक जनसमूह हिन्दी भाषा को बोल, पढ़ और समझ सकता है। तब से लेकर आज तक हमारे देश में हिन्दी को सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाली राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। इस प्रकार संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार राजभाषा हिन्दी, सरकार के सभी कार्यालयों, उपक्रमों, संस्थाओं में समान रूप से प्रयोग हेतु लागू होती है।

दिनांक 18 जनवरी, 1968 को संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प में यह व्यक्त किया गया है कि:

यह सभा संकल्प करती है कि हिन्दी के प्रसार एवं विकास की गति बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा

एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए गए उपायों एवं की गई प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखी जाएगी।

उक्त संकल्प के उपबंधों के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों/उपक्रमों द्वारा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा हिन्दी के प्रसार और प्रगामी प्रयोग के लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है।

आधुनिक युग में कोई भी भाषा वैज्ञानिक, सूचना प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी विषयों से जुड़े बिना नहीं पनप सकती। इसलिए सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों में वैज्ञानिक, सूचना प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी विषयों में हिन्दी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है। देश की संपूर्ण अर्थव्यवस्था में बैंकिंग प्रणाली का अपना महत्व है। इसलिए देश के आर्थिक हितों को ध्यान में रखते हुए 1969 में जब कई बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया, तब स्वतः ही बैंकिंग क्षेत्र भी सरकारी उपक्रम का एक हिस्सा बन गया। राष्ट्रीयकरण की इस प्रक्रिया के साथ ही बैंक भी भारत सरकार की राजभाषा नीति की परिधि में आने लगे, और यहां भी राजभाषा कार्यान्वयन उसी गति और तत्परता से किया जाने लगा जिससे अन्य शासकीय कार्यालयों में होता है। इन सभी क्षेत्रों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति सुनिश्चित करने के लिए गृह मंत्रालय के आदेशानुसार राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्य करती है। इसके अधीन राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित अधिकारियों को विभाग से सभी कार्यकलापों से परिचित कराया जाना आवश्यक है, जिससे कि वे अपने दायित्व अच्छी तरह निभा पाएं।

बैंकिंग क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग संवैधानिक प्रावधानों का अनुपालन मात्र नहीं है। ग्राहक संबंध सुदृढ़ करने और मार्केटिंग जैसी आवश्यकताओं के लिए बैंकों में प्रयुक्त भाषा ही माध्यम बनती है। इसलिए आवश्यक है कि ग्राहक वर्ग बढ़ाने और व्यवसाय में लाभप्रदता बनाए रखने के लिए राजभाषा हिन्दी या आवश्यकता पड़ने पर क्षेत्रीय भाषाओं को ही माध्यम बनाया जाए। भारत सरकार के अधीन गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है। इसके लिए समय-समय पर संसदीय समिति द्वारा निरीक्षण के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति का ब्यौरा लिया जाता है और राष्ट्रपति को इसकी रिपोर्ट भी प्रस्तुत की जाती है। इसके साथ ही केंद्र सरकार के देश-भर में फैले कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान करने हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन

समितियां (न.रा.का.स.) स्थापित की गईं. प्रत्येक वर्ष में दो बार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां (नराकास) की बैठक आयोजित की जाती है. जिसमें कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि की उपस्थिति अनिवार्य होती है. इसके अतिरिक्त वित्त मंत्रालय के वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान की जाती है.

प्रायः यह देखा जाता है कि यदि उच्च आधिकारिक स्तर से किसी निर्देश के कार्यान्वयन के प्रति तत्परता दिखाई जाती है, तो स्वतः यह परिवर्तन सम्पूर्ण कार्यालयीन व्यवस्था को प्रभावित करता है. यहां यह मान लेना भी पूर्णतः उचित नहीं है कि गृह मंत्रालय और वित्त मंत्रालय के आदेश के परिणामस्वरूप ही बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन संभव हो सका है. इसके अतिरिक्त बैंक कर्मियों में एक स्वतः स्फूर्त प्रेरणा और इच्छा शक्ति का विकास भी वह कारण है, जिसने उन्हें राजभाषा कार्यान्वयन हेतु कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध बनाया. वास्तव में राजभाषा कार्यान्वयन का उत्तम रूप वही है, जिसमें किसी प्रकार की बाध्यता या आरोपित व्यवस्था के स्थान पर स्वेच्छा, स्व-प्रेरणा और प्रोत्साहन से कार्य किया जाए.

बैंकों तथा अन्य सरकारी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक वर्ष भारत सरकार द्वारा वार्षिक कार्ययोजना भी तैयार की गई है, जिसमें,

- राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले 14 दस्तावेजों को पूर्ण रूप से द्विभाषिक रूप में जारी किया जाता है.
- भौगोलिक स्थिति के अनुसार वर्गीकृत किए गए देश-भर के राज्यों/संघ-राज्यों से हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित) आबंटित लक्ष्य के अनुसार किया जाता है.
- समग्र आंतरिक कामकाज जैसे सभी प्रकार के फॉर्म भरना, हिन्दी टिप्पण लेखन, वाउचर, रजिस्ट्रों में प्रविष्टियां, पासबुक जारी करना, डिमांड ड्राफ्ट बनाना, जमा रसीदें बनाना, बैंक बुक संबंधी पत्र, दैनिक बही, मस्टर, सुरक्षा एवं ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, लिफाफों पर पता लिखना आदि कार्य हिन्दी में भी किए जाते हैं.
- बैंकों की वेबसाइट एवं ग्राहकों को उपलब्ध कराई जाने वाली सभी जानकारी पूर्ण रूप से द्विभाषिक होती है.
- कंप्यूटर पर हिन्दी प्रयोग के लिए केवल यूनिकोड इनकोडिंग का प्रयोग किया जाता है.
- उपयोग में लायी जा रही सभी रबड़ की मुहरों, नामपट्ट, बोर्ड, साइन बोर्ड आदि का अनिवार्यतः द्विभाषिक रूप में प्रयोग किया जाता है.
- समाचार पत्रों/पत्रिकाओं पर कुल व्यय का न्यूनतम 50% व्यय हिन्दी समाचार पत्रों/पत्रिकाओं पर किया जाता है.
- बैंक के अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी संबंधी ज्ञान प्राप्त कराने और उन्हें राजभाषा कार्यान्वयन में सक्षम बनाने हेतु प्रत्येक तिमाही में हिन्दी कार्यशाला के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाता है. साथ ही समस्त प्रशिक्षण सामग्री द्विभाषिक रूप में तैयार की जाती है.

- बैंकों द्वारा प्रत्येक तिमाही में हिन्दी गृहपत्रिका का प्रकाशन किया जाता है.
- बैंकों में शाखा/कार्यालयों द्वारा तिमाही बैठक का आयोजन किया जाता है और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में सहभागिता एवं रिपोर्ट प्रेषण समय से किया जाता है.
- बैंकों द्वारा प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर के आस - पास हिन्दी सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन किया जाता है.
- बैंक के विज्ञापन, प्रचार सामग्री, भेंट वस्तुएं आदि में भी द्विभाषिकता का अनुपालन किया जाता है.
- कर्मिकों का हिन्दी ज्ञान रोस्टर तैयार किया जाता है तथा प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों को व्यक्तिशः आदेश जारी किये जाते हैं.
- शाखाओं/कार्यालयों में हिन्दी पुस्तकालय हेतु मंजूर बजट का उचित उपयोग करते हुए पुस्तकों की खरीद की जाती है एवं अपेक्षानुरूप रखरखाव किया जाता है.

हिन्दी वह भाषा है जो सम्पूर्ण देशवासियों को एक सूत्र में बांधती है. एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम होने के नाते, बैंक में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले कर्मचारी/अधिकारियों के लिए हिन्दी एक संपर्क भाषा का काम करती है. इसके अतिरिक्त बैंक से जुड़ने वाले ग्राहक भी समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों से संबंध रखते हैं. ऐसी स्थिति में हिन्दी इन सभी वर्गों के ग्राहकों के लिए बैंक से संबंध स्थापित करने का सहज माध्यम बनकर सामने आती है. ग्राहकों की समस्याओं और उनकी शिकायतों का निवारण उनसे जुड़ी भाषा के माध्यम से ही संभव है.

प्रतिस्पर्धा के इस दौर में वही बैंक टिक पाएगा जो सर्वोत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करेगा. साथ ही बैंकों के लिए अधिक से अधिक ग्राहक जुटाने एवं अपने व्यवसाय को प्रगतिगामी बनाने हेतु जनसुलभ भाषा का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है. इस लक्ष्य का भार वहन करने की क्षमता राजभाषा हिन्दी को छोड़कर अन्य किसी भाषा में नहीं है.

अतः एक भारतीय नागरिक होने के नाते, हमारा कर्तव्य बनता है कि केवल सरकारी आदेशों, निर्देशों का अनुपालन करने के अतिरिक्त व्यक्तिगत प्रयत्नों और प्रयासों से राजभाषा हिन्दी के उचित कार्यान्वयन को सुनिश्चित करें और उसे राजभाषा के साथ-साथ जन-मन की भाषा बनाने का गौरव प्रदान करें.



देवेंद्र पांडेय
राजभाषा विभाग, कें.का. मुंबई

कर्म ही पूजा है

स्कूल में पढ़ते समय एक सुविचार बार-बार पढ़ने में आता था- कर्म ही पूजा है। लेकिन उस समय इस विचार की गहराई उतनी समझ में नहीं आती थी, जो आज है। जहां कहीं सुविचारों का संकलन देखने को मिलता था, उसमें यह वाक्य अग्रिम पंक्तियों में स्थान पाता था। शायद अब समय के साथ समाज में कुछ परिवर्तन आ गया है और अब यह वाक्य उतना पढ़ने में नहीं आता। हालांकि कुछ समय पहले आई 'ओह माय गॉड' जैसी एक दो फिल्मों ने धार्मिक कर्मकांड को लेकर लोगों की आंखें खोलने की कोशिश की है और 'कर्म ही पूजा है' को रेखांकित करने का सफल प्रयास किया है।

साथियों, सचमुच यह कथन बहुत पुराना है। इसका इतिहास कुछ उतना ही पुराना है, जितनी की हमारी आस्था। भागवत गीता का एक पूरा अध्याय- 'कर्मयोग' इसी कथन की व्याख्या है। हमें यह समझाने का प्रयास भर है कि जीवन में कर्म, हमारा काम ही सर्वोपरि है, कर्म किसी भी पूजा से ऊपर है। भारतीय चिंतन परंपरा का 'कर्मफल सिद्धांत' भी यही कहता है कि आपका भविष्य किसी पूजा-पाठ पर निर्भर नहीं करता, बल्कि सब कुछ सिर्फ हमारे कर्मों पर आधारित है। हम जैसा कर्म करेंगे, हमें वैसा ही फल मिलेगा। हमारा आनेवाला कल, सिर्फ और सिर्फ एक चीज से जुड़ा है और वो है हमारा कर्म, हमारा काम और ऐसा भी नहीं है कि हमारे कर्मों का फल हमें नहीं मिले 'सुखस्य दुखस्य न कोऽपि दाता, परो ददातीति कुबुद्धिरेषा' अर्थात् जीवन में सुख-दुख किसी अन्य के दिए नहीं होते, कोई दूसरा मुझे सुख-दुख देता है, यह मानना व्यर्थ है, क्योंकि समस्त जीवन और सृष्टि स्वकर्म के सूत्र में बंधे हुए हैं। साथ ही यह भी कहा गया है-

वैद्याह वदन्ती कफपित्तमरुद्विकारान ज्योतिर्विदो ग्रहगतिमपरिवर्त्यन्ती।
भूताभिषंग इति भूतविदो वदन्ती प्रारब्धकर्म बलवनमूनयो वदन्ती ॥

अर्थात् पीड़ा होने पर वैद्य कहते हैं, वह कफ, पित्त और वायु का विकार है, ज्योतिषी कहते हैं वह ग्रहों की पीड़ा है, बाबा कहता है, भूत का संचार हुआ है, पर ऋषि मुनि कहते हैं कर्म बलवान है और यह उसी का फल है।

मित्रों, यह जरूरी है कि हम अपने कर्मों की समय-समय पर स्वयं व्याख्या करें। हम यह देखें कि हम किस दिशा में जा रहे हैं? क्या हमारा कर्म इस योग्य है, जिसे हम पूजा कह सकते हैं या हम अपने काम को उसी श्रद्धा से करते हैं, जिस श्रद्धा से पूजा की जाती है। एक निहायत जरूरी चीज यह है कि हम अपने काम को कैसे लेते हैं? हमारे लिए हमारा काम महत्वपूर्ण है या नहीं। कहने का मतलब यह कि हम अपने काम को दुनिया की नजर से देखते हैं या हमारे मन में हमारे द्वारा किए जा रहे काम का कुछ विशेष स्थान भी है। क्या हमारा प्रयास इस दुनिया को कुछ और रोशन करने में सक्षम है। इसमें एक मत यह भी है कि कभी-कभी हम स्वयं अपने काम के महत्व को नहीं जान रहे होते हैं कि हमारा काम इस दुनिया को क्या दे रहा है। हमें अपने आप से यह पूछना चाहिए कि हम अपने काम को गंभीरता से लेते हैं या नहीं? हम जो काम करते हैं, उसमें हमारी आस्था है या नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि हम कामों से भागने लगे हैं और इस अलभ्य जीवन को टाल-मटोल करने में बिता रहे हैं। मेरे एक मित्र, एक नुस्खा आजमाने की सलाह देते हैं- छोटे-मोटे कामों की बजाय अपने मुख्य कर्म के संदर्भ में उस दिन को याद करें, जब हमने वह काम शुरू किया था। नौकरीपेशा लोग यह सोचें कि जब हम उस नौकरी को पाने की तैयारी कर रहे थे और हम यह सोचते थे कि बस किसी भी तरह यह नौकरी मिल जाय, मैं पूरा मन लगा कर काम करूंगा। मैं अपने काम में अपनी पूरी क्षमता और कौशल का उपयोग करूंगा। हमें यह सोचने की जरूरत है कि आज भी हमारे अंदर, वही आस्था जिंदा है या नहीं? कहीं समय बीतने के साथ हमारी आस्था कमजोर तो नहीं हो गई है। एक पुराना शेर है - "कुछ लोग थे, जो वक्त के साँचे में ढल गए। कुछ लोग थे, जो वक्त के साँचे बदल गए।"। आइए हम आत्मावलोकन करें कि कहीं हम समय के साथ, पहले से बने-बनाए साँचों में तो नहीं ढलते जा रहे हैं? या हम उन लोगों में हैं जो नए साँचों को गढ़ेंगे। हमें अपना काम करने में आज वही उत्साह अनुभव होता है या नहीं जो हमें अपने काम के शुरुआती



दिनों में होता था. क्या हम अपने काम को लेकर मन से आज भी उतने ही युवा हैं, जितना हम प्रारंभ में थे.

लेकिन हो सकता है समय-समय पर किया गया हमारा आत्मावलोकन कुछ अलग तस्वीर भी पेश करे. कहते हैं इंसान भावनाओं की मूरत है और हम अपने सेवाकाल के दौरान भिन्न-भिन्न परिस्थितियों एवं परिवेश में रहते हैं. अतः राग-द्वेष का होना भी स्वाभाविक है. कभी-कभी कुछ लोग कहते हैं, मैं ऐसा नहीं था, मुझे व्यवस्था ने ऐसा बना दिया या फिर यहाँ सब लोग ऐसे ही हैं, सब अपने काम से जी चुराते हैं. लेकिन जब कभी हम स्थापित संस्थाओं, व्यवस्थाओं पर उंगली उठाते हैं तो हमें प्रकृति के नियमों को भी याद रखने की जरूरत है. हम ये भूल जाते हैं कि कोई भी व्यवस्था तभी तक चलती है जब उसमें अच्छाई-सच्चाई की मात्रा 50 प्रतिशत से अधिक हो. जैसे ही यह नियम टूटता है, वैसे ही वह व्यवस्था चरमरा जाती है. कोई व्यवस्था चल रही है, उसका मतलब ही यही है कि उसमें अच्छाई की मात्रा, बुराई से ज्यादा है. भले ही कुछ लोग आपको ऐसे मिल जाएँ, जिनमें कर्मठता न हो लेकिन ऐसे लोग सीमित संख्या में होते हैं. हमेशा उस संस्था में तमाम ऐसे लोग रहते हैं- जिनकी मेहनत और लगन पर वह संस्था चल रही होती है और अनगिनत लोगों की आजीविका का साधन बनी रहती है. कभी-कभी व्यक्तिगत राग-विराग भी हमारी कार्यशैली को प्रभावित कर सकता है. ऐसी स्थिति में हमें यह भी याद रखना है कि हमारी प्रतिबद्धता किसी व्यक्ति विशेष से न होकर, संस्था से है और संस्था के साथ अनगिनत लोगों का अस्तित्व जुड़ा होता है. हम हमारी संस्था के एक अभिन्न अंग हैं और संस्था को आगे ले जाने में हमारी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है. दुनिया में ऐसी अनगिनत कहानियाँ हैं, जहाँ एक व्यक्ति की व्यक्तिगत कोशिशों ने पहाड़ों को बौना बनाया हो. गांधी जी के विचार तो हमेशा मार्गदर्शन करते ही हैं 'जो बदलाव आप विश्व में देखना चाहते हो, उसकी शुरुआत स्वयं करो'.

इसके बाद कुछ छोटी-छोटी चीजें भी हैं. जैसे कि क्या हम अपने काम में अपना सौ प्रतिशत देते हैं, अपनी ओर से इस बात का हर संभव प्रयास करते हैं कि जो समय हम अपने कार्यस्थल पर बिताते हैं, उसमें न सिर्फ अपनी सम्पूर्ण क्षमता का उपयोग करें बल्कि अपने प्रयासों से कौशल विकास करते हुए अपनी क्षमताओं का भी विस्तार किया जाए. अकर्मण्यता एक ऐसे रोग की तरह है जो धीरे-धीरे होता है. इसे आध्यात्मिक दृष्टि से ऐसा भी कह सकते हैं कि हम अपने पर ध्यान देने की बजाय दूसरों पर ध्यान देने लगते हैं. जबकि हमारा पूरा ध्यान हमारे अपने कर्मों पर होना चाहिए. हमारे आस-पास के लोग क्या करते हैं, यह महत्वपूर्ण हो सकता है लेकिन उतना नहीं, जितना कि यह महत्वपूर्ण है कि हम क्या कर रहे हैं. दूसरी बात



यह है कि प्रकृति ने एक दिन में हमें 24 घंटे ही दिए हैं. अक्सर यह तय होता है कि हमें प्रत्येक दिन में कितने समय काम करना है. ऐसे में यह जरूरी है कि हमें अपने काम को लेकर, समय का नियोजन करना आता हो. समय के नियोजन में भी पहली और आखरी चीज यही है कि हमें हमारे काम में रुचि हो और हम अपना काम पूरे उत्साह से करें, बाकी सब दिए गए समय में खुद ब खुद हो जाएगा.

अगली महत्वपूर्ण चीज है, हमारे कर्मों में हमारा विश्वास. बचपन से ही एक भद्र सा मुहावरा कानों में पड़ने लगता है- 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता'. ऐसे मुहावरे दोहरानेवाले यह भूल जाते हैं कि इस दुनिया को ऐसे ही न जाने कितने अकेले कहे जाने वाले हाथों ने गढ़ा है. पूरी दुनिया को रोशन करनेवाला सूर्य और चाँद भी अकेला ही है. हमें हमेशा अपने कर्मों में यह विश्वास रखना चाहिए कि हमारे व्यक्तिगत प्रयास बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं. जीवन के इस विज्ञान को भी समझना बेहद जरूरी है कि बूँद-बूँद से ही सागर बनता है. नाटक में हर पात्र की एक अपनी भूमिका होती है, हर किसी का अपना अपना रोल है. जो सबसे आगे खड़े होकर संवाद बोलते हैं उनकी भी, जो पीछे की तरफ मूक बनकर खड़े रहते हैं उनकी भी और जो पर्दे के पीछे खड़े होकर नाटक में अलग अलग चीजें जोड़ते जाते हैं उनकी भी. सबके समग्र प्रयासों से ही नाटक सफल होता है. इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम किस भूमिका में हैं. महत्वपूर्ण यह है कि हम अपनी भूमिका का निर्वाह किस तरह से करते हैं. तो आइये एक बार आत्मावलोकन कर शुरुआत करें, एक ऐसे सफर की जिसका कोई औचित्य हो और हमेशा याद रहे, हमारा दिया हुआ ही लौटकर आएगा और वह भी ब्याज के साथ. महाकवि तुलसीदास जी के शब्दों में- 'कर्म प्रधान विश्व रचि राखा / जो जस करे तो तस फल चाखा'.



मनोज कुमार
कें.का., मुंबई



..... पगला कहीं का

गैरी समुद्र के किनारे खड़ा था और अपने मुंह से कुछ अजीब-अजीब सी आवाजें निकाल रहा था. कभी इधर दौड़ता और कभी उधर. यह उसके लिए तो यह रोज का काम था और जो जानते थे, उन्हें कोई आश्चर्य नहीं होता था. परंतु समुद्र के किनारे घूमने आए कई पर्यटकों को यह बहुत अजीब लगता था कि एक व्यक्ति समुद्र के किनारे यह सब क्या करता रहता है और क्यों ऐसी आवाजें निकालता है.

यह मुझे तब पता चला जब मैं भी एक बार नॉर्वे की राजधानी ओस्लो गया और समुद्र किनारे घूमने गया. तो मुझे भी बहुत आश्चर्य हुआ उसे देख कर. सुबह-सुबह का समय था, मैंने उससे बात करने की सोची परंतु शायद उस समय वो बात करने के मूड में नहीं था. या यूँ कहें कि उसने मेरी बात को अनसुना सा कर दिया था. मैं भी कहां हार मानने वाला था, एक पत्रकार जो था. थोड़ी दूर जाकर बैठ गया और उसकी हरकतों को देखने लगा. करीब आधे घंटे तक यह सब चलता रहा. तभी अचानक समुद्र में हलचल सी हुई और एक विशालकाय व्हेल ने हवा में गोता लगाया और तीखी आवाज में 'ची... ची...' करते हुए तेजी से फिर समुद्र के पानी में खो गई. इस दृश्य को मैंने पहली बार देखा था. बड़ा रोमांचित हो गया और थोड़ा डर सा भी गया था. इतनी पास से एक बड़े व्हेल को देखना आश्चर्य था. तभी मेरा ध्यान उस व्यक्ति की ओर गया. वो एकदम सामान्य था और किनारे से दूर जा रहा था, शायद वापस.

मैं तेजी से दौड़कर उसके पास गया, "ब्रो...प्लीज...वेट...वेट मैं आपसे बात करना चाहता हूँ." उसने मेरी ओर देखा और मुस्कुराया. वो ठहर गया. "अच्छा पूछिए". मैंने उससे पूछा "आपने देखा समुद्र में वो सबसे बड़ी व्हेल को". मेरी सांसें चढ़ी हुई थी. मेरी हालत देख कर वो बोला आप कहां से आये हैं. मैंने बताया कि "मैं मुंबई, भारत से आया हूँ". "अच्छा, घूमने आए हैं मेरे देश में" मैंने हाँ में सिर हिलाया. "भारत से हैं. मेरा भी पसंदीदा देश है वो. आपसे मिल कर अच्छा लगा, पर आपने बताया नहीं कि आप मुझसे क्या पूछना चाहते हैं" मैंने अपनी सांसों को काबू में किया और हिम्मत करके पूछा, "...ब्रो..आप आज समुद्र के किनारे क्या कर रहे थे. बड़ी अजीब-अजीब सी आवाजें भी कर रहे थे". वो मेरी ओर देखकर मुस्कुराया. उसकी आँखों में बड़ा तेज था. "मैं गैरी हूँ. यह मेरा कार्ड है. आप शाम को आ जाना यहीं किनारे पर. पास में ही मेरा घर है, वहीं बैठकर बात करेंगे."

एक अजनबी द्वारा ऐसा आमंत्रण पाकर मुझे आश्चर्य तो हुआ परंतु अपनी जिज्ञासा को शांत करने का कोई ओर साधन नहीं था. "हां जरूर" उससे विदा लेकर मैं चल दिया. आज घूमने से ज्यादा मेरे मन में उस व्यक्ति से मिलने की इच्छा बलवती हो रही थी. लिहाजा मुझे आज घूमने में आनंद नहीं आ रहा था. बस शाम का इंतजार कर रहा था.

आज मुझे पहली बार ऐसा लग रहा था कि शाम कितनी देरी से होती है. मैं उसके घर पहुंच गया. उसका घर एक मध्यम परिवार का घर था. घर पर उसके परिवार के अन्य सदस्य भी थे. मुख्य द्वार पर ही वो व्यक्ति गैरी खड़ा था. शायद मेरा ही इंतजार कर रहा था. एक छोटे से कमरे में हम चले गये और उसने तुरंत कॉफी लाने के लिए एक स्त्री को कहा. शायद वो उसके ही घर की सदस्य थी. उसने अलमारी से एक एलबम निकाली और मेरे हाथ में थमा दी. "ये क्या है?" मैंने पूछा. उसने कहा "देखो और जान जाओगे". मैं एलबम देखने लगा. वो मुझे उसमें दिख रहे लोगों का परिचय कराता गया. एलबम काफी बड़ा था. मेरा मन बिलकुल नहीं लग रहा था, उसे देखने में. परंतु मैं मेहमान के रूप में गया था. इस लिए उसका दिल नहीं तोड़ना चाहता था. शायद एलबम न देखने से उसे गुस्सा भी आ जाए. यही सोचते हुए मैं एलबम के पेज आगे बढ़ाता गया. वो एलबम तो गैरी की पूरी कहानी कह रही थी. बचपन से लेकर शायद आज तक की फोटो होंगी. एक फोटो की ओर इशारा कर बोला "वो देखो मेरी मां, उसकी गोद में मैं हूँ. जानते हो पीछे कौन सा शहर है गुवाहाटी शहर." मेरी मां हिन्दुस्तानी थी. वहीं की थी. "तभी अचानक मैं एक पेज पर रुक गया. वही समुद्र का किनारा, कुछ लोग खड़े हैं और वहां कुछ तो हो रहा था. एलबम का वो पेज काफी पुराना भी था इसलिए शायद फोटो कुछ धुंधली भी हो गई थी. "ये क्या है. यहां क्या हो रहा है?" मैंने गैरी से पूछा. गैरी मुस्कुराया, एलबम को उसने अपनी ओर कर लिया. "ये स्वीटी है. मेरी स्वीटी"

मैंने चौंक कर उससे पूछा "गैरी क्या कहा तुमने?" "हां मित्र, समुद्र के किनारे जो कुछ करते लोग मुझे देखते हैं. पागल समझते हैं. पर मैं जानता हूँ. आज तुमने भी मुझे वही समझा. मैं तुम्हें बताता हूँ."

"आज से करीब 30 बरस पहले की बात है. मैं अपने पिता के साथ इसी समुद्र के किनारे घूमने गया था. वहां सभी घूमने आते थे. तभी किनारे पर मैंने देखा कि काफी भीड़ है. मैंने अपने पिता जी को कहा कि वो मुझे वहां ले चलें. थोड़ा ना-नुकर के बाद मेरी जिद करने पर वो मान गये. हम वहां पहुंचे तो क्या देखते हैं. एक व्हेल किनारे पर पड़ी तड़प रही है. मैंने पिताजी से पूछा कि यह ऐसा क्यों कर रही है. उन्होंने मुझे बताया कि यह व्हेल का बच्चा है. समुद्र की लहरों ने उसे बाहर फेंक दिया है. पानी नहीं मिलने के कारण वो तड़प रही है" मैं उस समय करीब 10-11 वर्ष का था. मुझसे यह सब देखा नहीं जा रहा था. "पापा कुछ करो न उसे बचा लो." पापा भी क्या करते, वो कोई छोटी मछली तो थी नहीं. बड़ी सी और भारी सी थी. भीड़ बढ़ गई थी. मैंने पापा का हाथ छुड़ाया और घर की ओर भागा.

पापा पूछते रहे. थोड़ा मेरे पीछे दौड़े भी. मैंने चिल्ला कर कहा. "अभी आता हूं. घर से बाल्टी लेने जा रहा हूं."

मैं घर से बाल्टी लेकर दौड़ा-दौड़ा वापस आ गया और सीधे समुद्र से पानी भरा, बाल्टी भारी हो गई, उठाई नहीं जा रही थी फिर भी थोड़ा पानी उसमें बचा कर मछली की ओर दौड़ा. पापा भी मेरे पीछे-पीछे दौड़े. मैंने पानी सीधे मछली के मुंह में डाल दिया. फिर भागा समुद्र की ओर. पानी लाया मछली के मुंह में डाल दिया. मैं तो मच्छली को बचाने की कोशिश में था परंतु मेरी हिम्मत को देखकर वहां खड़े लोगों को भी होश आया और वो भी ऐसा करने लगे. देखते-देखते सारा हुजूम यही करने लगा. मैंने मछली को देखा. वो अपना मुंह कभी बंद करती, कभी खोलती. उसकी आंखों को देखकर ऐसा लग रहा था कि वो कह रही हो मुझे बचा लो. मुझे बचा लो. तभी वहां समुद्री रक्षकों की टीम भी आ गया. शायद किसी ने इसकी खबर कर दी थी कि एक व्हेल किनारे पर आ गई है और वह अभी जिंदा है. मेरा काम यथावत जारी था. मैं बिना कुछ सोचे, बिना रुके अपना काम करता रहा. मुझे तो बचपन में मां ने लोरी सुनाई थी कि 'मछली जल की रानी है. जीवन उसका पानी है. बाहर निकालोगे तो मर जाएगी. पानी में डालो तो जी जाएगी'. वही कविता मेरे मन मस्तिष्क में छा गई थी. मैं थक चुका था. अचानक मुझे ऐसा लगा मछली मुझे देख रही है. मुझे दया करने को कह रही है. मैं फिर उठा और फिर से समुद्र से पानी लेकर उसके मुंह में डालने लगा.

इसी बीच समुद्री रक्षक टीम ने सभी को पीछे कर दिया और व्हेल को रस्सियों से बांधने का काम शुरू कर दिया. मैं पानी लेकर पहुंचा. पर मुझे उसके पास जाने नहीं दिया गया. मैं रोने लगा. तभी एक रक्षक मुझे मछली के पास ले गया और कहा जाओ डाल दो पानी. मैं गया और अपनी आखिरी बाल्टी के पानी को मछली के मुंह में डाल दिया. मैंने अपने नन्हे हाथों से उसके चेहरे को भी थोड़ा सहलाया. तभी समुद्री रक्षक ने मुझे वहां से हटा दिया. मैं रोने लगा. देखता भी रहा कि वो लोग क्या कर रहे हैं. काफी मेहनत के बाद उस मछली को हवा में उठा लिया गया और धीरे-धीरे समुद्र की ओर ले जा कर छोड़ दिया गया. थोड़ी देर तक सब जगह शांति छा गई. मछली सीधे समुद्र के अंदर चली गई. एक मायूसी छा गई 'मर गई शायद, मर गई' लोग यह बोलते हुए जाने लगे. मैं उदास हो गया. मेरा मन नहीं मान रहा था. लोग चले गये. मैं रुका रहा. पापा भी. करीब आधे घंटे के बाद अचानक समुद्र में जोरों की आवाज हुई. "ची...ची..." 'अरे, ये क्या वही मछली तेजी से समुद्र में उछल रही थी. मैं उछलने लगा और मेरी आंखों में से आंसू निकल पड़े. मैं तालियां बजाने लगा और समुद्र की ओर भाग गया. पापा की आवाज तो मैंने सुनी नहीं. समुद्र के बहुत अंदर चला गया. बस.. एक बार झू लूं. तभी वो मछली धीरे से आई और मुझे छूते हुए चुपके से समुद्र में दूर चली गई. गहरे समुद्र में. फिर उस दिन वो नहीं आई.

मैं अक्सर यहां आता रहा उससे मिलने, पर वो हर बार तो नहीं मिली. पर कभी कभार किस्मत में मिलना रहता था. इसी उम्मीद में यहां आता हूं. पर अब शायद वो मुझे भूल गई. पर मैं नहीं भूला था. मैंने तो उसका नाम भी स्वीटी रख दिया था. मुझे उससे मिलने का बहुत इंतजार था इसी के कारण मैंने समुद्र में गोताखोरी भी सीखी. तैरना सीखा और समय के साथ ही मुझे समुद्री रक्षक की नौकरी भी मिल गई थी.

'फिर क्या, वो कभी नहीं मिली.' मैंने पूछा, वो थोड़ा खामोश हुआ और मैंने देखा, उसकी आंखों में आंसू थे जिन्हें छुपाते हुए वो बोला. एक

दिन की बात है. हम गहरे समुद्र में गश्त पर थे अचानक एक लहर ने हमारी बोट को पलट दिया. सभी गहरे समुद्र में गोते लगाने लगे. मेरी तो बेल्ट ही बोट में फंस गई थी. मैं बहुत कोशिश करता रहा परंतु उससे स्वयं को छुड़ा नहीं पाया, मेरा बचना मुश्किल था और मैं बेहोश होने लगा था. बोट समुद्र में डूबती रही. मेरे साथी सोच रहे थे कि मैं शायद किनारे पहुंच गया होऊंगा क्योंकि मैं कहीं भी नजर नहीं आ रहा था. नजर आता भी कैसे, मैं तो बोट में ही फंस चुका था, बोट पानी में डूबने लगी थी. मुझे नहीं पता उसके आगे क्या हुआ होगा, मैं बेहोश हो चुका था.

दूर मेरे पिता जी भी परेशान कि सारे प्रहरी तो आ गये किनारे पर परंतु मैं नहीं आया. उनका मन डोलने लगा था. मन में उल्टे सीधे प्रश्न भी उठ रहे थे. तभी उन्हें किसी ने खबर दी कि समुद्र के एक किनारे पर एक आदमी पड़ा है, समुद्री सुरक्षा की वर्दी पहने हुए. वो तुरंत अपने साथियों के साथ वहां पहुंचे. भीड़ लगी हुई थी. मुझे होश आ चुका था पर समझ नहीं पाया कि आखिर यह कैसे हुआ. मैं समुद्र के किनारे पड़ा सांसे ले रहा था. पिताजी आये और मुझे गले से लगाया. पूछने लगे 'यह सब कैसे हुआ? तुम यहां कैसे पहुंच गये. हम तो बस... "और वो रो पड़े".

तभी समुद्र से जोर जोर से 'ची...ची...ची' की आवाज ने सभी को चौंका दिया. 'पापा... ये तो स्वीटी है' मैं चिल्लाया... 'हां बेटा-हां यह तो वही व्हेल है' पापा भी खुशी से भरते हुए बोले. मैं तेजी से उठा और समुद्र की ओर भागा. आज पापा ने मुझे रोकने की जरूरत नहीं समझी, मुझे देखते रहे. मैं समुद्र के बहुत अंदर तक चला गया. समुद्र के इतना अंदर कि मैं स्वीटी को छू सकूं. स्वीटी वहां नहीं थी. मैं इधर-उधर देखता रहा तभी अचानक दूर... स्वीटी 'ची...ची...' करती समुद्र में उछलती दूर निकल गई. जैसे उसने मुझे पहचान लिया हो. मुझे बाय कर रही हो.

पिता जी को वही पुरानी बातें याद आने लगीं. कुछ पुराने लोग भी वहां थे. उन्हें भी उस बच्चे की याद आई. उन्हें पिता जी ने बताया. 'वो कोई और नहीं मेरा ही बच्चा था और वो कोई और नहीं वही व्हेल मछली है, जिसने आज अपना कर्ज चुकाया है, मुझे मेरा बच्चा लौटा कर.'

मैं किनारे पर वापस आ गया था. देखा, पापा की आंखों में आंसू थे. खुशी के, गर्व के. स्वीटी के प्रति आभार के, प्यार के!

मैं सारी एलबम देख चुका था. गैरी भावुक हो चुका था. बोला "मित्र... जानते हो. जिस जगह पर मैं समुद्र के बाहर मिला था. वो जगह कौन सी थी? (मैं गैरी की ओर देखने लगा). यह वही जगह थी जहां स्वीटी तड़प रही थी और मैं उसे जिन्दा रखने की कोशिश कर रहा था." गैरी की आंखें नम थीं. शायद स्वीटी की याद में.

मैं उठा और मैंने गैरी के कंधों को थपथपाया और उसकी ओर प्यार से देखा और मुस्कुराकर उससे बोला. "अरे भई, उसका भी तो परिवार होगा. उसे अब समय नहीं मिलता होगा... तुमसे मिलने का". गैरी मुस्कुराया. मैं बाहर चल दिया. 'पगला कहीं का' मैं भी मुस्कुराते हुए बुदबुदाया. मैंने अपने मन में ही गैरी से वादा किया "गैरी... अब यह सच्चाई दुनिया के सामने होगी, तुम्हें कोई पागल नहीं समझेगा. तुम बहुत दयालु हो. हमें तुम पर गर्व है..."



प्रदीप सिंह
क्षे.म.प्र.का., अहमदाबाद

भारतीय लेखांकन मानक (Ind S) - एक परिचय

1. परिचय - अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग मानक (IFRS) के अनुसार भारत में नये भारतीय लेखांकन मानक को भारतीय चार्टर्ड अकाउंट्स संस्थान (ICAI) ने तैयार किया है. यह वर्ष 2016 से विभिन्न चरणों में लागू हो गया है. इसका उद्देश्य विभिन्न देशों द्वारा अपनाए जा रहे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लेखांकन मानकों के साथ समन्वय स्थापित करना है. इससे विश्व के अन्य देशों के साथ वित्तीय लेन-देन आसान हो जाएगा. भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, अतः भारत सरकार के मिनिस्ट्री ऑफ कॉर्पोरेट अफेयर्स ने भारतीय कंपनियों के वैश्विक व्यापार के हित में लेखांकन मानकों को अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग मानक (IFRS) के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रतिबद्धता जतायी है. ये मानक निम्नांकित चरणों में लागू होने हैं:

1 अप्रैल 2015 से सभी कंपनियों के लिए स्वैच्छिक है.

प्रथम चरण: 1 अप्रैल 2016 से सूचीबद्ध कंपनियां जिनका नेटवर्थ ₹500 करोड़ से अधिक हैं, के लिए अनिवार्य हैं. यह मूल कंपनी, सहायकी, सम्बंधी कम्पनी एवं ज्वाइंट उद्यम के लिए भी लागू हैं.

द्वितीय चरण: 1 अप्रैल 2017 से सभी सूचीबद्ध कंपनियों के लिए अनिवार्य हैं. साथ ही उन कंपनियों पर भी लागू हैं जो सूचीबद्ध नहीं है, पर इनका नेटवर्थ ₹500 करोड़ से 250 करोड़ है.

तृतीय चरण : बैंकों को 1 अप्रैल 2018 से अपना वित्तीय लेखा - जोखा इंडियन अकाउंटिंग स्टैंडर्ड, (इंड ए एस) में देना होगा. इंड ए एस एकल तथा समग्र दोनों तरह के परिणामों के लिए लागू होगा. बैंकों को हिदायत दी गई है कि वे 1 अप्रैल 2018 से पहले के लेखा-जोखा के लिए इस प्रणाली का उपयोग न करें.

2. IFRS के साथ संसृत (converge) का उद्देश्य :

- वैश्विक स्तर पर एक ही तरह का लेखांकन मानक हो, जो वैश्विक परिदृश्य के अनुसार पूर्ण हो.
- इसमें अंतर्राष्ट्रीय पूंजीप्रवाह कंपनियों के लिए सुलभ होगा और मानक कंपनियों को वैश्विक विस्तार करने में आसानी होगी.

➤ इससे विभिन्न प्रकार के लेखांकन मानकों के मध्य की जटिलता को दूर की जा सकेगी, जो नियामकों के लिए भी लाभप्रद हैं.

3. **IFRS के साथ समरूपता :** समरूपता का यहाँ मतलब है कि IFRS को हूबहू नहीं अपना कर राष्ट्रीय लेखांकन मानक के अनुरूप IFRS के सभी आवश्यक तत्वों का भी अनुपालन करना है, IFRS के मानकों के समकक्ष ही संख्या को रखा गया है, अंतर्राष्ट्रीय लेखांकन मानक (IS 1,2,3..) के समतुल्य भारतीय लेखांकन मानक (Ind S 1.2.3) रखा गया है, जबकी IFRS 1,2,3 के समकक्ष Ind S 101,102,103... किया गया है.

अंक की समानता के लिए कुछ IS संख्या के समकक्ष Ind S नहीं है, क्योंकि इनका विवरण Ind S के अलग खंड में किया गया है.

4. **इंड. एस. के सिद्धान्त और नियम :**

यदि इंड ए. एस और विधि सम्मत कोई मतभेद होता है, तो वित्तीय विवरणियां, विधि के अनुपालन के अनुसार बनायी जाएंगी.

वित्तीय स्थिति के प्रस्तुतीकरण की रूपरेखा ही लेखांकन के मानकों की बुनियाद है. रूपरेखा के अनुसार वित्तीय विवरणों का उद्देश्य किसी इकाई की वित्तीय स्थिति, उसके निष्पादन एवं वित्तीय परिवर्तनों के बारे में सूचित करना है. इसका विश्लेषण, व्यापक स्तर पर उपयोगकर्ताओं को आर्थिक निर्णय लेने में तथा इकाई के शेयरधारकों एवं आम जनता को मौजूदा वित्तीय स्थिति की जानकारी देने में उपयोगी होता है.

5. **इंड.एस. के अनुसार वित्तीय विवरणों में निम्नांकित विवरणियां शामिल हैं.**

1. समाप्ति समयावधि पर तुलन पत्र
2. समयावधि का लाभ और हानि विवरण
3. समयावधि के अनुसार इक्विटी में परिवर्तन की विवरणी
4. समयावधि के दौरान नकद प्रवाह
5. टिप्पणी, जिसमें महत्वपूर्ण लेखांकन नीति के साथ व्याख्यात्मक सूचनाएँ सम्मिलित हैं.

6. पूर्व अवधि के वित्तीय सूचनाओं की तुलनात्मक प्रस्तुति
7. यदि किसी मद का पुनर्वर्गीकरण किया है तो उसके कारण और प्रभाव का विवरण

इंड.ए.एस. द्वारा आइ.एफ.आर.एस. को अंगीकृत करते हुए भारतीय लेखांकन पद्धति की मौलिकता को बरकरार रखा गया है.

6. इंड.ए.एस. अपनाना और इसके महत्वपूर्ण तथ्य :

- 6.1. प्रथम बार इंड.ए.एस. में प्रवेश: इंड.एस. 101-प्रथम बार इंड.ए.एस. को अपनाने के लिए कम्पनी को इंड.ए.एस. के नियमों के अनुकूल स्पष्ट एवं पूर्ण वित्तीय सूचना इंड.ए.एस. 34 के अनुसार प्रस्तुत करना है. आंशिक अनुपालन के आधार पर कोई कम्पनी प्रवेश नहीं पा सकती है. इसमें परिस्थिति और विकल्प (subject to and except for) लागू नहीं है.



6.2. इंड.ए.एस. 101 की 4 विशेष आवश्यकताएँ :

1. जिनकी भी मान्यताएँ इंड.ए.एस. में आस्ति और देयताओं के लिए की गयी है, सबका समावेशन.
2. इंड.ए.एस. के तहत अमान्य कोई भी आस्ति और देयता स्वीकार नहीं की जाएगी.
3. पूर्व GP पद्धति के अंतर्गत मान्य आस्ति, देयता और इक्विटी जो इंड.ए.एस. में अलग तरह से परिभाषित है, पुनर्वर्गीकृत कर स्वीकार्य है.
4. सभी मान्य आस्ति, देयता को इंड.ए.एस. के अनुसार ही आकलन कर वित्तीय विवरण तैयार करना

6.3. वर्ष 2017 हेतु इंड.ए.एस. वित्तीय विवरणियाँ :

इंड.ए.एस. 2017 की नीति के अनुसार	1 अप्रैल 2015	31 मार्च 2016	31 मार्च 2017
तुलन पत्र	देना है.	देना है.	देना है.
लाभ या हानि विवरणी	आवश्यक नहीं.	देना है.	देना है.
नकद प्रवाह विवरणी	देना है.	देना है.	देना है.
इक्विटी में परिवर्तन की विवरणी	आवश्यक नहीं.	देना है.	देना है.
नोट एवं तुलनात्मक सूचना	आवश्यक नहीं.	देना है.	देना है.

7. आइ.एफ.आर.एस. के साथ संसृत इंड.ए.एस. की मुख्य विशेषताएँ :

सिद्धांत आधारित मानक:

एकल और समेकित दोनों वित्तीय विवरणों के लिए लागू.

ट्रंजेक्सन में आर्थिक मूल्य पर अधिक बल (Substance over form)

वास्तविक मूल्य दृष्टिकोण पर विश्वसनीयता और मुद्रा का सामयिक महत्व.

प्रासंगिक सूचनाओं और धारणाओं के प्रकटीकरण में पारदर्शिता उच्चतम स्तर के निर्णय और अनुमान की आवश्यकता

- 7.1. आकार से अधिक : विधिक पत्र की अपेक्षा वास्तविकता को वरीयता. यथा कोई आस्ति क्रय हेतु 31 मार्च से पूर्व भुगतान किया गया पर विधिक औपचारिकता बाद में पूरी होनी है, ऐसी स्थिति में भी आर्थिक लेन-देन 31 मार्च के तुलन पत्र में दर्शाना है. दृष्टि बंधक में आस्ति धारक, आस्ति का कानूनी मलिक नहीं होता है पर यदि इसका भुगतान किया गया है, तो यह लेन देन उस वित्तीय वर्ष में दर्शाना होगा.
- 7.2. उचित मूल्य (Fair Value) इंड.ए.एस. 113 : आकलन के दिन आस्ति विक्रय से प्राप्त मूल्य या देयता अंतरण हेतु भुगतान जो व्यवस्थित अंतरण एवं विपणन भागीदारी के मध्य होता है, उचित मूल्य कहलाता है.

विवरण	बाजार -1 (रु में)	बाजार -2 (रु में)
वस्तु का प्राथमिक मूल्य	100	90
परिवहन लागत	(10)	(5)
नेट मूल्य	90	85
लेन-देन व्यय	10	4
शुद्ध प्राप्त रकम	80	81

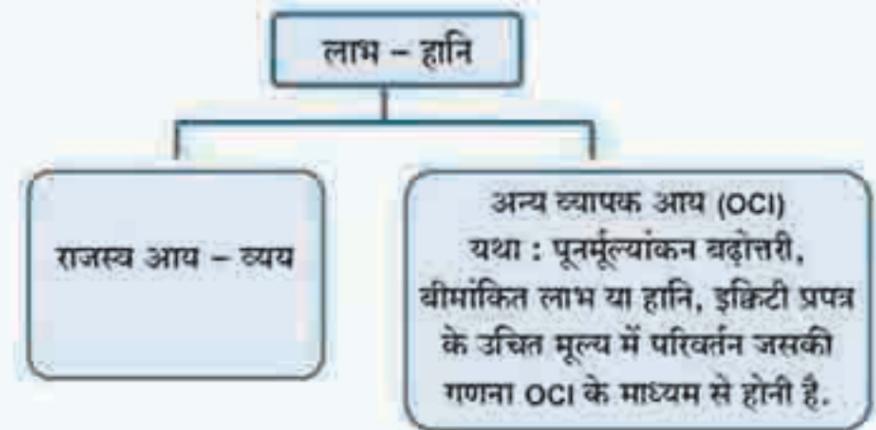
माना कि किसी कम्पनी ने अपने एक नियत वस्तु को दो विभिन्न बाजार 1 और 2 में समान मात्रा में पर विभिन्न कीमतों में बेचा. जो बाजार अधिक शुद्ध रकम देगा, फायदेमंद बाजार होगा अर्थात् बाजार -2 (रु. 81/-) और प्राप्त मूल्य उचित मूल्य कहलाएगा. यहां उचित मूल्य (एफवी) रु. 85/- है.

- 7.3. संपत्ति में निवेश इंड.ए.एस. 40 : इंड ए एस 16, उन संपत्ति, प्लांट और उपकरण के एकाउंटिंग का विवरण है, जिनका उपयोग उत्पादन, आपूर्ति या सेवा कार्य के लिए किया जाता है. संपत्ति में निवेश, एकाउंटिंग उद्देश्य से संपत्ति के किराये या मूल्य सम्बर्धन के आधार पर होता है. यदि संपत्ति का विक्रय होता है तो भी इसकी एकाउंटिंग संपत्ति के उचित मूल्य परिवर्तन से लाभ या हानि के आधार पर होती है.
- 7.4. मूल्यहास में परिवर्तन हेतु उपयोगी जीवन की अवधारणा: इंड.ए.एस. के अनुसार अचल आस्ति के उपयोगी जीवन और शेष अवधि पर प्रभारित मूल्यहास की गणना अलग-अलग दर से होगी.
- 7.5. कर्मचारियों को लाभ : इंड.ए.एस. 19 के अनुसार कर्मचारियों के अल्पावधि और दीर्घावधि लाभ का अलग - अलग लेखांकन करना है. वित्तीय वर्ष के आरम्भ के 12 महीने के अंदर समायोजित होने वाले कर्मचारी के लाभ की वर्तमान वित्तीय वर्ष के व्यय के तहत गणना की जाएगी.
- 7.6. विदेशी विनिमय दर में परिवर्तन का प्रभाव : इंड.ए.एस. 21 के तहत यदि कोई कम्पनी प्रचलित मुद्रा को प्रस्तुत मुद्रा में बदलता है, तो यह लाभ - हानि में शामिल होगा और इंड.ए.एस. 29 के तहत परिवर्तन के तथ्य और कारण को प्रकट करना होगा.

- 7.7. अन्य व्यापक आय अवधारणा (concept of other comprehensive Income-OCI):

आस्ति में बढ़ोत्तरी या देयता में कमी का लेखांकन, लाभ-हानि के माध्यम से ही तुलन-पत्र में होगा अर्थात् यदि किसी आस्ति के पुनर्मूल्यांकन मूल्य में बढ़ोत्तरी होती है, तो यह आय मानी जाएगी और OCI के माध्यम से ही इसकी तुलन-पत्र के पुनर्मूल्यांकन रिजर्व में प्रविष्टि की जाएगी. पहले इस प्रकार की बढ़ोत्तरी सीधे तुलन-पत्र के पुनर्मूल्यांकन रिजर्व में दर्ज होती थी.

इस प्रकार लाभ - हानि का लेखांकन दो भागों में विभक्त होगा.



अन्य व्यापक आय (OCI), लाभ-हानि के इस खंड में आस्ति या देयता के पुनर्मूल्यांकन से उत्पन्न, अप्राप्त लाभ या हानि को लिया जाता है. प्राप्ति के पश्चात कुछ अपवादों के अलावा इन्हें राजस्व लाभ- हानि खंड में रखा जाता है. पुनर्मूल्यांकित आस्ति का विक्रय, इक्विटी प्रपत्र जिनका चयन OCI के माध्यम से उचित मूल्य पर गणना हेतु किया गया है.

इस प्रकार इंड ए एस गुणात्मक और अंतर्राष्ट्रीय लेखांकन की दिशा में एक सार्थक और उपयोगी पहल है. यह वास्तविक लेन-देन की नींव पर आधारित है. इंड ए एस वित्तीय विवरणियों की सामयिक, उचित और विश्वसनीय संरचना है. यह लेखांकन मानक वक्त पर खरा उतरेगी और भारतीय कंपनियों के लिए उपयोगी तथा भरोसेमंद साबित होगा.

आईए, भारतीय लेखांकन मानक (Ind S) के अध्ययन की दिशा में कदम बढ़ाएँ.



दयानन्द चौधरी
क्षे.का., विशाखापट्टनम्

सकारात्मक सोच की शक्ति

जीवन संघर्ष का नाम है. जहां संघर्ष नहीं, वहां जीवन नहीं. हमें हर क्षण अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए और अपने विकास के लिए संघर्ष करना पड़ता है. इसी संघर्ष का नाम है जीवन.

संघर्ष चाहे श्वास के लिए हो या ग्रास के लिए, सफलता के लिए हो या फिर मान प्रतिष्ठा के लिए, धन के लिए हो या फिर ऐश्वर्य के लिए, संघर्ष तो करना ही पड़ता है. बिना संघर्ष और परिश्रम के, कभी किसी को कुछ नहीं मिलता और यदि भाग्यवश कुछ मिल भी जाए तो वह अधिक समय तक टिक नहीं पाता. जीवन में प्रतिकूलताएं तो आती ही रहती हैं. इन्हें स्वीकार करके ही व्यक्ति अपने जीवन को सफल व उन्नत बनाता है.

यह सच है कि जीवन में हर व्यक्ति सफल होना चाहता है, आगे बढ़ना चाहता है, किंतु वह कहां तक कुछ प्राप्त कर पाता है, यह उसके संघर्ष, परिश्रम और प्रयासों पर निर्भर करता है. जीवन में दुःख, समस्याएं, और चुनौतियां तो आती ही रहेंगी, इनसे अब तक कोई नहीं बच पाया है किंतु जीवन में सफल वहीं हुए हैं, जो इनको स्वीकार करके इनका सामना करके और संघर्ष करते हुए इन पर विजय पाने का हौसला रखते हैं.

विपरीत परिस्थितियां हर व्यक्ति की जिंदगी में कभी न कभी आती ही हैं. ऐसे में आत्मविश्वास सूखी रेत की तरह मुट्टियों से फिसलने लगता है. चारों तरफ अंधकार ही अंधकार नजर आता है, साहस घुटने टेकने लगता है. एक पल ऐसा लगता है कि सब कुछ नष्ट हो जाएगा. ऐसी स्थिति में केवल दो ही विकल्प शेष रह जाते हैं - करो या फिर मरो. इसमें जो विपत्तियों से लड़े बगैर हार मान लेता है, उसका मरण तो निश्चित है, लेकिन जो साहस जुटाकर संघर्ष करता है, वही प्रतिकूलताओं पर विजय प्राप्त कर सफलता की इबारत गढ़ता है.

सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति समस्याओं के बारे में नहीं, बल्कि उनके समाधानों की संभावनाओं को विकसित करने में विश्वास रखता है. वह अपनी सफलताओं, क्षमताओं, योग्यताओं और कौशल के बारे में सोचता है, जो उसे संघर्षों को स्वीकारने, सामना करने व समाधान करने के लिए आवश्यक आधार प्रदान करते हैं. सकारात्मक सोच से आत्मविश्वास



बढ़ता है और आत्मविश्वास से कुछ कर गुजरने का साहस पैदा होता है. इसी साहस से उत्पन्न बल से व्यक्ति कठिन से कठिन समस्या को सुलझा लेता है.

अक्सर आपके जीवन में भी उतार-चढ़ाव का दौर चल रहा है, आपको भी अपने अस्तित्व या सफलता के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है, फिर भी घबराईए मत क्योंकि आप सर्वशक्तिमान हो. बस आपको जरूरत है, अपनी सोच को सकारात्मक बनाने की. फिर आपको संघर्षों, मुश्किलों, आपत्तियों में भी अवसर दिखेंगे और आपका जीवन आत्मविश्वास, अवसरों से भरा होगा और आप सफलता के शिखरों को छू कर अपने जीवन की हर मनोकामना पूर्ण कर सकते हैं.

सुनील दत्त
क्षे.का., दिल्ली (द)



समाचार दर्शन

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना में श्री दीपक एन.एस, मुख्य प्रबंधक की अध्यक्षता में दिनांक 14.09.2017 को होशियापुर शाखा में आयोजित 'आपसी संवाद सार्थक दिशा' कार्यक्रम. इस अवसर पर शाखा कर्मचारियों के साथ ग्राहक गण.



दिनांक 06.11.2017 को राजकोट क्षेत्र की कृष्णनगर, भावनगर शाखा में 'आपसी संवाद सार्थक दिशा' कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसमें 7 अधिकारी एवं 4 कर्मचारियों ने सहभागिता दी.

दिनांक 3 नवम्बर 2017 को चन्द्र नगर शाखा में 'राजभाषा सार्थक संवाद' का आयोजन श्री सुरेन्द्र सोनी, मुख्य प्रबंधक क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली (उत्तर) की अध्यक्षता में किया गया. जिसमें 21 मार्च, 1979 को जब चन्द्र नगर शाखा खुली थी उस समय के ग्राहक गण उपस्थित थे. उन्होंने शाखा के ग्राहक सेवा की भूरि-भूरि प्रशंसा की.



दिनांक-30.11.2017 को श्री शैलेशकुमार सिंह, संयुक्त निदेशक (राभा), वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली (उत्तर) का निरीक्षण किया गया. इस अवसर पर श्री शैलेशजी का स्वागत करते हुए श्री अशोक कुमार सिरोही, क्षेत्र प्रमुख, दिल्ली (उत्तर), साथ में हैं, श्री राजेश कुमार, सहायक महाप्रबंधक (राभा), कें. का.



क्षेत्रीय कार्यालय, सम्बलपुर द्वारा 1 से 14 सितंबर के बीच हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया एवं हिन्दी दिवस पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन 17 नवंबर 2017 को किया गया.

दिनांक 21.08.2017 को राजकोट क्षेत्र की मोरवी शाखा में एक दिवसीय राजभाषा डेस्क प्रशिक्षण, हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया.



स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल में शैक्षणिक गतिविधियों के साथ ही प्रशिक्षण सहगामी गतिविधियों के क्रम में दिनांक 27.11.2017, को प्रशिक्षण केन्द्र पर स्वच्छता अभियान का आयोजन किया गया.

दिनांक 21.12.2017 को अंचल स्तरीय गृह पत्रिका 'यूनियन स्वर्ण रेखा' के प्रवेशांक का विमोचन श्री जी. आर. पाडलकर, क्षेत्र महाप्रबंधक, रांची; श्री वीरेंद्र कुमार यादव, हिंदी सलाहकार, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार एवं श्री आर. पी. मिश्रा, उप अंचल प्रमुख, रांची के कर-कमलों से संपन्न हुआ. इस अवसर पर साथ में पत्रिका के संपादक, डॉ. विजय कुमार पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी, क्षे.म.प्र.का. रांची तथा श्री बलवंत कुमार, कार्यकारी निदेशक, वाई. बी. एन. न्यूज, रांची.



स्वतंत्रता का प्रतीक

‘सफेद छड़ी दिवस’

15 अक्टूबर

मेरे एक मित्र अमित ने जब एक राह चलते व्यक्ति से सड़क पार करने हेतु सहायता माँगी तो उस भले राहगीर ने अमित को यह नेक राय दी कि उसे आँखों पर काला चश्मा पहनना चाहिए. तब अमित ने पूछा कि ‘ऐसा क्यों करना चाहिए’ तो वह भला इन्सान तर्क देने लगा कि ‘अमित, दृष्टिबाधा की जानकारी लोगों को तभी हो सकेगी जब उस जैसे लोग आँखों पर काला चश्मा पहनेंगे. इससे आम जन को पहचान करने में आसानी होगी’.

अमित का कहना था कि उसके व उस जैसे अन्य दृष्टिबाधित लोगों के हाथ में सफेद छड़ी होती है जिसकी सहायता से यह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि उक्त व्यक्ति दृष्टिबाधित अथवा आंशिक दृष्टि वाला है फिर काला चश्मा तो कोई भी व्यक्ति पहन सकता है. चाहे वह दृष्टिवान हो या दृष्टिबाधित. सड़क पार करवाने वाला वह पथिक अमित की बातों से सहमत नहीं हुआ और अपनी बात पर अड़ा रहा कि दृष्टिबाधितों को हाथ में छड़ी रखने के साथ ही काला चश्मा आवश्यक रूप से पहनना चाहिए.

छड़ी का उपयोग दृष्टिबाधित व्यक्ति के लिए अपरिहार्य है, यदि वह स्वतंत्र रूप से भ्रमण करना चाहता है. दृष्टिबाधित व्यक्तियों ने कैसे और कब से स्वतंत्र रूप से चलने-फिरने हेतु छड़ियों का उपयोग करना शुरू किया होगा, कह पाना कठिन है. हो सकता है कि जब से मनुष्य दृष्टिबाधित होने लगा होगा तभी से उसकी सीमाओं को लांघने की चाहत भी विकसित हुई हो और उसने छड़ी द्वारा चलना सीख लिया हो. किंतु आज जिस सफेद छड़ी को हम उपयोग में ला रहे हैं इसका स्वरूप बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में निरूपित हुआ. हमारी छड़ी की कहानी बड़ी ही रोचक है.

प्रथम विश्वयुद्ध की विभीषिका ने बड़े पैमाने पर सैनिकों एवं गैर सैनिक नागरिकों को दृष्टिबाधित होने का अभिशाप दिया था. यूरोप व अमेरिका में ऐसे दृष्टिबाधितों के पुनर्वास के प्रयास होने लगे थे, किंतु पहली बार सफेद रंग से अपनी छड़ी को पोत कर अपने स्वतंत्र भ्रमण हेतु उसका उपयोग करने का श्रेय दुर्घटना में दृष्टि खोने वाले यूरोपीय फोटोग्राफर श्री जेम्स बिग्स को जाता है जिन्होंने 1921 में व्यक्तिगत रूप से सफेद छड़ी का उपयोग किया. 1931 में फ्रांस के डिहर्वमोन्ट ने दृष्टिबाधितों हेतु सफेद छड़ी का उपयोग सुनिश्चित करने हेतु समूचे देश में 5,000 छड़ियाँ वितरित कीं. इसी वर्ष बी.बी.सी. ने अपने रेडियो प्रसारण में दृष्टिबाधितों हेतु सफेद छड़ी का उपयोग सुझाया.

संयुक्त राज्य अमेरिका में सन् 1930 में लायन्स क्लब के एक सदस्य ने किसी दृष्टिबाधित पैदल यात्री को काले रंग की छड़ी का उपयोग करते हुए देखा. उस लायन्स क्लब के सदस्य ने पाया कि काले रंग की वह छड़ी बहुत ही कठिनाई से देखी जा सकती थी और मोटर चालकों के लिए दृष्टिबाधित पथिक का ध्यान रख पाना आसान नहीं था. अब लायन्स इंटरनेशनल ने सफेद छड़ियों के प्रयोग के संबंध में प्रचार-प्रसार का जिम्मा लिया और संयुक्त राज्य अमेरिका के कई शहरों में सफेद छड़ी के पक्ष में स्थानीय निकायों में विधेयक पारित किए गए. ब्रिटेन में सफेद छड़ी अभियान का नेतृत्व रोटरी क्लब ने किया.

दूसरे महायुद्ध ने दृष्टिबाधित जनसंख्या में भारी वृद्धि कर दी. अमेरिका के एक पुनर्वास विशेषज्ञ श्री रिचर्ड ई. ह्वर ने वैली फोर्ज हॉस्पिटल में युद्ध प्रभावित सैनिकों को प्रशिक्षित किया एवं सफेद रंग की लंबी छड़ी जो उस समय तक विकसित की गयी सबसे कम बजनवाली छड़ी भी थी, का विकास किया. ह्वर को आधुनिक सफेद छड़ी का जनक भी कहा जाता है.

1944 में उन्होंने स्वयं की आँखों पर पट्टी बाँध कर एक सप्ताह तक प्रयोग करने के पश्चात् सफेद छड़ी का उपयोग कर चलने की तकनीक विकसित की, जिसे उन्हीं के नाम पर हूवर तकनीक कहा जाता है. उनके द्वारा सुझाई गयी विधि को आज हर पुनर्वसन सलाहकार अपने प्रशिक्षणार्थियों को सिखाता है.

साठ के दशक में अमेरिका के कई राज्यों में सफेद छड़ी के संबंध में कानून बनाए गये. तब राष्ट्रीय विधेयक की माँग की जाने लगी, जिसे छः अक्टूबर 1964 को अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सत्र में पारित कर दिया गया. विधेयक एच.आर. 753 को तत्कालीन राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉन्सन ने अपनी मंजूरी देते हुए 15 अक्टूबर को प्रत्येक वर्ष सफेद छड़ी सुरक्षा दिवस मनाने की घोषणा की. श्री जॉन्सन ने कहा था, 'सफेद छड़ी दृष्टिबाधितों के स्वतंत्रतापूर्वक आने व जाने का प्रतीक चिह्न है.'

इंग्लैंड में 7 से 10 वर्ष की आयु प्राप्त करने पर दृष्टिबाधित एवं आंशिक दृष्टिवान बच्चों को छड़ी का उपयोग सिखाया जाता है जबकि अमेरिका में बच्चे के चलना-फिरना शुरू करने पर चलिषणुता का प्रशिक्षण दिया जाता है. इंग्लैंड में किसी व्यक्ति द्वारा केवल सफेद छड़ी के उपयोग का मतलब है कि उपयोगकर्ता दृष्टिबाधित अथवा आंशिक दृष्टि वाला है जब कि सफेद छड़ी पर दो लाल रंग के धागे लगे होने का अर्थ है कि उपयोगकर्ता बधिरांध है. अमेरिका में कई स्थानों पर केवल दृष्टिबाधित ही सफेद छड़ी लेकर जा सकते हैं, कोई अन्य व्यक्ति यदि छड़ी रखता है तो यह अपराध की श्रेणी में माना जाता है. छड़ियाँ भी कई प्रकार की होती हैं. मसलन, सार्वजनिक भवनों में चलने के लिए बड़ी छड़ियों का उपयोग किया जाता है. बाहर चलने के लिए उपयोगकर्ता के सीने तक की ऊँचाई वाली छड़ी अच्छी मानी जाती है.

हमारे देश में भी 15 अक्टूबर का दिन 'सफेद छड़ी सुरक्षा दिवस' के रूप में मनाया जाता है. इस दिवस पर दृष्टिबाधा से जुड़े हुए संगठन जागरूकता कार्यक्रम चलाते हैं. दृष्टिबाधित जन को छड़ियों का वितरण किया जाता है तथा इस विषय पर बहुत से अभियान शुरू किये जाते हैं. हमारे देश में आई.आई.टी. दिल्ली एवं एक स्वयंसेवी संगठन सक्षम ने स्मार्टकेन नामक सफेद छड़ी का संशोधित रूप तैयार किया है. उपयोगकर्ता को साधारण छड़ी के माध्यम से उसके सिर के समानांतर आने वाली बाधाओं, जैसे वृक्ष की टहनियाँ, बाहर निकले हुए खिड़की, दरवाजे, ट्रकों में लदा हुआ सामान जो कि बाहर निकल रहा होता है आदि, किंतु अवरक्त विकिरण के माध्यम से रास्ते की बाधाओं का पता लगाने वाली स्मार्टकेन, दृष्टिबाधित व्यक्ति को न केवल उसके सामने की बाधाओं की जानकारी प्रदान करती है, बल्कि भौतिक छड़ी की सीमाओं को दूर करते हुए ऊपरी बाधाओं की जानकारी भी प्रदान करती है.

इस सारी कहानी को कहने के पीछे मेरा उद्देश्य हमारे साथियों से इतना निवेदन भर करना है कि यदि उन्हें कोई छड़ी का उपयोगकर्ता दिखाई पड़े तो वे उसके विषय में जागरूक

रहें. सफेद छड़ी दृष्टिबाधित जन के स्वतंत्र रूप से भ्रमण करने के अधिकार का प्रतीक चिह्न मात्र है. फिर भी यह ध्यान रखना चाहिए कि सफेद छड़ी कुछ हद तक दृष्टिबाधा जन्य सीमाओं को कम अवश्य करती है, किंतु यह दृष्टि के अभाव को प्रतिस्थापित नहीं करती है. इसलिए भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर जहाँ साधारण व्यक्ति का आवागमन कठिन होता है अथवा ट्रैफिक वाली सड़क पर जहाँ किसी दृष्टिहीन व्यक्ति को सड़क पार करने की आवश्यकता हो, उसे सही मार्ग दर्शाकर/सड़क पार करवाकर उसका साथ दीजिए. इसके साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिन स्थानों पर दृष्टिबाधित प्रतिदिन आते-जाते रहते हैं उन स्थानों पर उन्हें सहायता की आवश्यकता नहीं होती है. अतः यदि ऐसे स्थान पर आप नए हैं तो उनसे पूछकर ही सहायता प्रदान करें.

छड़ी दृष्टिबाधित जन की स्वतंत्रता का प्रतीक है. इसे अपने समाज में स्थान दिलवाने एवं विशेष रूप से हमारे अपने दृष्टिबाधित कार्मिकों के मध्य इसका बेहतर उपयोग करने की प्रेरणा देने की आवश्यकता है. छड़ी की प्रशंसा में कही गयी सदियों पुरानी किंतु आज भी प्रासंगिक यह पंक्तियाँ मुझे याद आ रही हैं-

लाठी में गुण बहुत हैं,
सदा राखिये संग,
गहरे नदी-नारे जहाँ,
तहाँ बचावत अंग.
तहाँ बचावत अंग झपट कुत्ता के मारे,
दुश्मन दावागीर होय तिहूँ को झारे.
कह गिरधर कविराय, सुनो हे दूर के बाठी,
सब हथियारन डार, हाथ में लीजै लाठी.



अर्पित जैन
एसटीसी, भोपाल



भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 08.12.2017 को विशाखापट्टणम में आयोजित राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह (दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र) के अवसर पर वर्ष 2016-17 के दौरान उत्कृष्ट निष्पादन हेतु यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, नोडल क्षे. का., एर्णाकुलम को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री किरन रिजिजू, श्री प्रभास कुमार झा, सचिव (राजभाषा विभाग), एवं अन्य गणमान्यजन की गरिमामयी उपस्थिति में श्री किरन रिजिजू के कर-कमलों से यह पुरस्कार श्री पी एस राजन, क्षेत्र प्रमुख, एर्णाकुलम ने ग्रहण किया.



दिनांक 30.10.2017 को नोडल क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम को बैंक नराकास, एर्णाकुलम द्वारा शील्ड 2016-17 के अंतर्गत उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया. मुख्य अतिथि, डॉ सुष्मिता भट्टाचार्य के कर कमलों से पुरस्कार प्राप्त करते हुए, श्री पी एस राजन, क्षेत्र प्रमुख, नोडल क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम एवं राजभाषा अधिकारी, श्री जॉन अब्राहम.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोल्हापुर द्वारा हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, कोल्हापुर को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. नराकास कोल्हापुर के अध्यक्ष से पुरस्कार ग्रहण करते उप क्षेत्र प्रमुख श्री रघुनाथ रेड्डी एवं राजभाषा अधिकारी, श्री राधा रमन शर्मा.



नराकास, चेन्नै द्वारा नोडल क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. इस अवसर पर पुरस्कार प्रदान करते हुए, श्री किशोर खरात, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी इंडियन बैंक, डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, कोच्चि क्षेत्र एवं श्री शेषाद्री टी.एस., महाप्रबंधक, रिजर्व बैंक और पुरस्कार प्राप्त करते हुए अंचल प्रमुख, चेन्नै, श्री एस के महापात्र, क्षेत्रीय प्रमुख, चन्नै, श्री सुधाकर राव व राजभाषा अधिकारी श्री सावन सौरभ.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रीवा के मूल्यांकन समिति के अध्यक्ष कर्नल वी. रवीन्द्र कुमार एवं रीवा आयकर अधिकारी से वर्ष 2016-17 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा शील्ड, प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख रीवा, श्री आर. एल. मीना एवं राजभाषा प्रभारी, श्री अखिलेश कुमार सिंह



प्रेरणा स्रोत



दिल्ली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली (द) को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया. इस अवसर पर पुरस्कार प्रदान करते हुए श्री शैलेश कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक, वित्तीय सेवाएँ विभाग, श्री संदीप आर्य, निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग एवं पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री सी.बी. झा, क्षेत्र प्रमुख, दिल्ली (द) और राजभाषा अधिकारी, श्री सुनील दत्त.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, वाराणसी द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. पुरस्कार प्रदान करते हुए उपनिदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, श्री अजय मलिक; नराकास अध्यक्ष, श्री प्रदीप कुमार काला एवं पुरस्कार प्राप्त करते हुए राजभाषा प्रभारी, श्री विक्रान्त कुमार एवं श्री राजेश कुमार.



बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, कोयंबटूर को चतुर्थ पुरस्कार प्राप्त हुआ. इस अवसर पर पुरस्कार प्रदान करते हुए बैंक नराकास के अध्यक्ष, श्री जी गणेशन एवं पुरस्कार प्राप्त करते हुए, श्री सी. वी. एन भास्कर राव, क्षेत्र प्रमुख, कोयंबटूर एवं श्री रोहित साव, राजभाषा प्रभारी.



दिनांक 24-11-2017 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय, मद्रुरै को चतुर्थ पुरस्कार प्रदान किया गया. इस अवसर पर पुरस्कार प्रदान करते हुए, श्रीमती सुस्मिता भट्टाचार्य, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग साथ में नराकास अध्यक्ष, मद्रुरै एवं पुरस्कार ग्रहण करते हुए, श्री श्रीनिवास वंगला, क्षेत्र प्रमुख मद्रुरै एवं श्री सुभाष चन्द्र, राजभाषा प्रभारी.



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिलीगुड़ी द्वारा हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी को सक्रिय सहभागिता हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया. इस अवसर पर पुरस्कार प्रदान करते हुए, नराकास अध्यक्ष, श्री सतीश राव, उप महाप्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया एवं पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्रीमती राजश्री बगलरी, क्षेत्र प्रमुख, सिलीगुड़ी.





सामान्यतया सर्दियों में खायी जानेवाली 'मूंगफली' को सस्ता बादाम कहा जाता है क्योंकि इसमें लगभग वो सारे तत्व पाए जाते हैं जो बादाम में होते हैं, लेकिन बेहद सस्ती कीमत पर हमारे देश में मूंगफली हर तरह के खाने में इस्तेमाल की जाती है, चाहे वह मीठे पकवान हों या नमकीन.

मूंगफली में पाये जानेवाले विभिन्न पोषक तत्व इसे स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक लाभकारी बनाते हैं. इसमें विटामिन, मिनरल्स, न्यूट्रिएंट्स और एंटीऑक्सीडेंट्स भी होते हैं, जिससे आप हमेशा एक एनर्जी महसूस करते हैं. इसमें विटामिन 'बी' कॉम्प्लेक्स, नियासिन, रिबोफ्लेविन, थायमिन, विटामिन बी-6, बी-9 और पेंटोथेनिक एसिड पाए जाते हैं, जो इसकी पौष्टिकता में इजाफा करते हैं.

- मूंगफली शरीर पर 'स्मार्टली' काम करती है. मतलब यह शरीर से बुरे कोलेस्ट्रॉल को कम करती है, वहीं अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाती भी है. इसमें मौजूद 'अलेइक' एसिड से दिल संबंधी बीमारियों में राहत मिलती है.
- मूंगफली में भारी मात्रा में पाए जानेवाले कॉमेरिक एसिड तथा पॉली-फेनोलिक एंटी ऑक्सीडेंट्स में पेट के कैंसर, ब्रैस्ट कैंसर और फंगल इन्फेक्शन होने की सम्भावनाओं को कम करने की क्षमता होती है.
- मूंगफली, प्रोटीन का एक बहुत अच्छा स्रोत है. इसमें मौजूद अमीनो एसिड्स शारीरिक विकास के लिए बहुत अच्छे होने से बच्चों के लिए यह बहुत लाभकारी है.
- मूंगफली में काफी मात्रा में मौजूद 'एंटी ऑक्सीडेंट्स', उबालने पर और ज्यादा सक्रिय हो जाते हैं, जिससे शरीर में भीतरी साफ सफाई सुचारु और नियमित रूप से होती रहती है.
- मूंगफली में होने वाले मैग्नीशियम से कैल्शियम, फेल्स और कार्बोहाइड्रेट्स शरीर में घुल जाते हैं और रक्त में शुगर का स्तर नियंत्रण में रहता है.
- मूंगफली द्वारा जीर्ण/स्थायी त्वचा रोग जैसे एक्जिमा, सोराइसिस का इलाज संभव है. इसमें पाए जानेवाले फेटी एसिड्स से सूजन और त्वचा का लालिमा भी कम हो जाता है. साथ ही, इसके विटामिन ई, जिंक और मैग्नीशियम त्वचा को ताजगी और चमक देने के साथ-साथ बैक्टीरिया से त्वचा को बचाते हैं. इसमें होने वाला प्रोटीन शरीर में नयी

कोशिकाओं का निर्माण करता है. यह त्वचा में नमी बनाए रखती है. बढ़ती उम्र के लक्षणों जैसे चारिक रेखाएं और झुर्रियों को बनने से रोकते हैं. इससे त्वचा, बाल, शरीर के अंदरूनी अंगों और बाकी सभी हिस्सों को लाभ पहुंचाने वाले गुण भरपूर मात्रा में होते हैं. इसके सेवन से हड्डियां मजबूत बनती हैं.

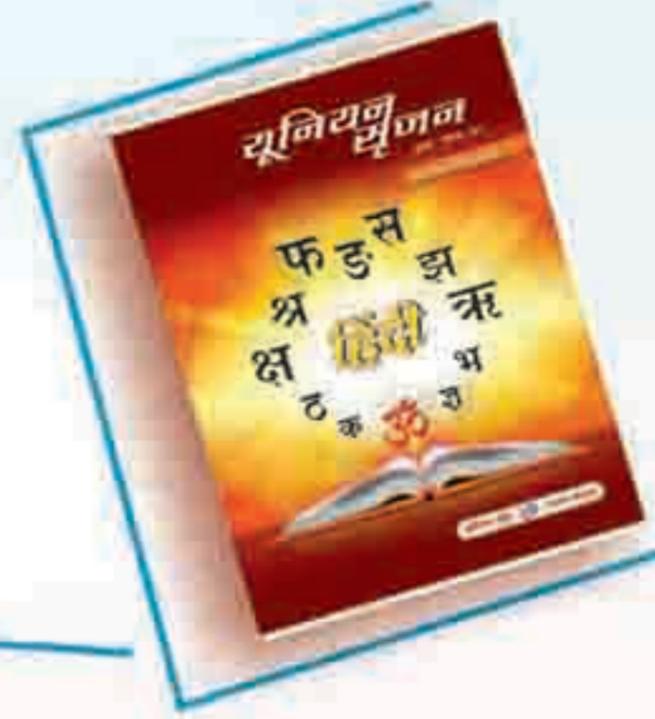
- मूंगफली में मौजूद तत्व पेट से जुड़ी कई समस्याओं में राहत देने का काम करते हैं. इसके नियमित सेवन से कब्ज की समस्या दूर हो जाती है. ये पाचन क्रिया को भी बेहतर रखने में मददगार है.
- मूंगफली के नियमित सेवन से खून की कमी नहीं होने पाती है.
- मूंगफली में पाए जाने वाला एक तत्व नियासिन मल्टिप्लिक में रक्त का प्रवाह बढ़ाता है, जिससे अल्जाइमर रोग से बचाव होता है.
- मूंगफली खाने से डायबिटीज होने की आशंका घटती है. इसमें पाए जाने वाला मैंगनीज नामक तत्व ब्लड शुगर नियंत्रित करता है, शरीर में कैल्शियम के अवशोषण में मदद करता है और मेटाबोलिज्म तेज करता है.
- गॉल ब्लैडर में स्टोन से बचना चाहते हैं तो मूंगफली खाएं. मूंगफली या पी नट बटर खाने से गॉल ब्लैडर स्टोन बनने की सम्भावना 25 % घटती है.
- डिप्रेशन से बचाव और उपचार में मूंगफली का सेवन अच्छा होता है. मूंगफली का 'ट्रिपटोफान' (अमिनोएसिड) मूड सुधारने वाले हार्मोन 'सेरोटोनिन' का स्राव बढ़ाता है, जिससे मन शांत होता है.
- मूंगफली में पाए जाने वाला विटामिन बी-3 दिमाग प्रक्रिया तेज करता है, याददाश्त अच्छी करता है. इसके साथ ही, इसमें पाए जानेवाला रेस्वेराट्रॉल नामक फ्लेवोनोइड तत्व दिमाग में रक्त प्रवाह 30% बढ़ा देता है, जिससे दिमाग स्वस्थ रहता है और सक्रिय होता है.
- मूंगफली में फाइबर की भरपूर मात्रा होती है. यह एनर्जी का अच्छा स्रोत भी है. अतः इसे खाने पर जल्दी भूख नहीं लगती. इसीलिए वेट मैनेजमेंट के लिए मूंगफली सेवन करना चाहिये.
- यह बढ़ती उम्र में ऑस्टियोपोरोसिस होने की सम्भावना को कम करता है.

लेकिन सावधान! थाइरोइड रोगियों को मूंगफली सेवन नहीं करना चाहिए. चूंकि मूंगफली एक हाई कैलोरी युक्त बीज है, इसके अधिक सेवन से मोटापा भी बढ़ सकता है, अतः संतुलित मात्रा में ही इसे खाना चाहिए.



सुप्रिया नाडकर्णी
यूनियन धारा, कें.का., मुंबई

आपकी बज़र में...



'यूनियन सृजन' अंक: अप्रैल-जून, 2017 मुझे पढ़ने को मिला. सुश्री श्वेता सिंह का साहित्यिक आलेख 'यशपाल', डॉ. विजय कुमार पांडे का आलेख 'छंद के स्तम्भ: अज्ञेय एवं उनके काव्य' तथा सुश्री शिल्पिका त्रिवेदी का बैंकिंग संबंधी आलेख 'बैंकिंग का अभिन्न पहलू: ग्राहक सेवा' अत्यंत ज्ञानप्रद है. पत्रिका में प्रकाशित समस्त कविताओं के रचनाकारों ने सशक्त रचनात्मक कौशल का परिचय दिया है. प्रत्येक रचनाकार ने अपनी कविता में शब्द और अर्थ की अभिव्यक्ति के स्तर पर सुंदर समन्वय स्थापित किया है. गौरव तिवारी की कविता 'कुछ लिखूँ' विशेष रूप से समीक्षा योग्य है. आशा है कि 'यूनियन सृजन' के अगले अंक में उनसे इसी प्रकार की एक और कविता पढ़ने को मिलेगी. पत्रिका प्रकाशन में सम्पादन समिति का परिश्रम स्पष्ट रूप से झलक रहा है. पत्रिका में विषय चयन, सामग्री संयोजन तथा संपादकीय प्रस्तुति किसी भी पत्रिका के सम्पादन के लिए अनुकरणीय है.

शुभकामनाओं के साथ,
सादर

डॉ. राजनारायन अवस्थी
एलेक्ट्रॉनिक कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

श्री संपादक जी, यूनियन सृजन, मुंबई
महोदया,

नमस्ते! 'यूनियन सृजन' का राजभाषा विशेषांक प्राप्त हुआ, एतदर्थ आभार स्वीकार करें. अंक पढ़ा, सामग्री देखकर अभिभूत हूँ. साहित्यकार मंजुल भगत पर इतनी अच्छी, ठोस सामग्री पहली बार पढ़ी... लेखिका तूलिका बिस्वास निश्चित रूप से बधाई की पात्र हैं. 'पाणिनी का पन्ना' जिसके अंतर्गत 'शब्दशक्ति' स्तम्भ तो लाजवाब है. पिछले अंक मिले नहीं तो उस सामग्री से वंचित हूँ, कृपया ये सामग्री मुझे मेल कर सकें तो आभारी रहूंगा. राजभाषा हिंदी को लेकर जो सामग्री प्रकाशित की है वह सतही नहीं, गंभीर किस्म की है. व्यंग्य 'बारहवें तथा तेरहवें रसों की संकल्पना' बहुत अच्छा है, राधा मिश्रजी तक बधाई पहुंचायें. कुल मिलाकर इतने सुरुचिपूर्ण, अच्छे से अंक के लिए बधाई स्वीकारें. 'यूनियन सृजन' की प्रतीक्षा रहेगी.

- डॉ. अनंत श्रीमाली
सहायक निदेशक, गृह मंत्रालय,
राजभाषा विभाग, मुंबई

स्थान : बड़ा इमामवाडा, लखनऊ

फोटो : शिवांजन चौधरी

रिसाली शाखा, भिलाई, छत्तीसगढ़

